।। ओ३म ।।

प्रकाश की ओर

ईश्वर की सृष्टि के अद्भुत व्याख्याता पूज्यपाद गुरूदेव श्रृंगी मुनि कृष्णदत जी महाराज द्वारा विशेष योग समाधि मे,देवयान की आत्माओ को सम्बोधित प्रवचनो का संकलन
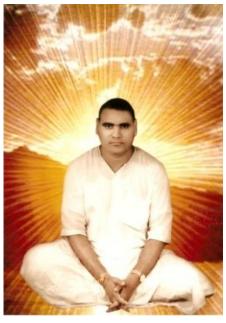
प्रकाशक :

वैदिक अनुसन्धान समिति (रजि.)

अन्तरजाल सम्पादक : श्री सुकेश त्यागी – अवैतनिक

अन्तरजाल विशेष सहयोग : डा०सतीश शर्मा (अमेरिका) – अवैतनिक

अन्तरजाल पुस्तक संस्करण : प्रथम प्रेषण

सृष्टि सम्वत् : १,९६,०८,५३,१११

विक्रम सम्वत् : अश्विन शुक्ल चर्तुथी,२०६७

गुरुदेव का जीवन

१४ सितम्बर १९४२,उतर प्रदेश के गाजियाबाद जिले के ,ग्राम खुर्रमपुर सलेमाबाद मे एक बालक का जन्म हुआ ।

बालक जन्म से ही एक विलक्षण से युक्त था और विलक्षणता यह कि जब भी वह बालक सीधा, शवासन की मुद्रा मे, कुछ अन्तराल लेटजाता या लिटा दिया जाता तो उसकी गर्दन दायें बायें हिलने लगती , कुछ मन्त्रोच्चारण और उसके बाद पुरातन संस्कृति पर आधारित ४५ मिनट के लगभग एक दिव्य प्रवचन होता । बाल्यावस्था होने के कारण, प्रारम्भ मे आवाज अस्पष्ट होती और जैसे आयु बढने लगी वेसे ही आवाज और विषय दानो स्पष्ट होने लगे । पर एक अपठित बालक के मुख से ऐसे दिव्य प्रवचन सुनकर जनमानस आश्चर्य करने लगा , इस बालक की ऐसी दिव्य अवस्था और प्रवचनो की गूढता के विषय मे कोई भी कुछ कहने की स्थिति मे नही था । प्रवचन सुनकर जनमानस आश्चर्य करने लगा , इस बालक की एंसी दिव्य अवस्था और प्रवचनो की गूढता के विषय मे कोई भी कुछ कहने की स्थिति मे नही था ।

इस स्थिति का स्पष्टीकरण भी दिव्यात्मा के प्रवचनो से ही हुआ । कि यह सृष्टि के आदिकाल से ही विभिन्न कालो मे श्रृंगी ऋषि की उपाधि से विभूषित और सतयुग के काल मे आदि ब्रह्म के शाप के कारण इस युग मे जन्म का कारण बनी । गुरुदेव इस जन्म मे भले ही अपठित रहे,लेकिन शवासन की मुद्रा मे आते ही इनका पूर्वजन्मित ज्ञान,उदबुद्ध हो जाता और अन्तरिक्ष–स्थ आत्माओ का दिव्य उद्बोधन ,प्रवचन करते और शरीर की स्थिति यहाँ होने के कारण हम सबको भी इनकी दिव्य वाणी सुनाई देती । इन पंवचनो मे ईश्वरीय की सृष्टि का अद्भुत रहस्य समाया हुआ है , ब्रह्माण्ड की विशालता , सृष्टि का उद्देश्य,विभिन्न कालो का आंखो देखा वर्णन भगवान राम और भगवान कृष्ण के जीवन की दिव्यता का दर्शन क्या कुछ दिव्य न हीं है इन प्रवचनो मे ये किसी भी मनुष्य का,समाज का और राष्ट्र का मार्ग दर्शन करने का सामर्थ्य रखते है ।

२० वर्ष की अवस्था तक ये प्रवचन ऐसे ही जनमानस को आश्चर्य और मार्गदर्शन करते रहे ।

दिल्ली के कुछ प्रबुद्ध महानुभवो ने प्रवचनो की इस निधि को शब्द ध्वनि लेखन उपकरण के द्वारा संग्रहित करके ,पुस्तक रूप मे प्रकाशित करने का निश्चय किया, जिसके लिए वैदिक अनुसन्धान समिति नामक संस्था का गठन किया । जिसके अर्न्तगत सन् १९६२ से प्रवचनो को संग्रहति और प्रकाशन प्रारम्भ हुआ । इस दिव्यात्मा ने पूर्व निर्धारित ५० वर्ष के जीवन को भोगकर सन् १९९२ मे महाप्रयाण किया ।

इस अन्तराल इनके १५०० प्रवचन, शब्द ध्वनि लेखित यन्त्र के द्वारा ग्रहण किये गये । जिनको धीरे–धीरे प्रकाशित किया जा रहा है।वैदिक जीवन और वैदिक संस्कृति का जो स्वरूप इनमे समाया हुआ है । उसके सम्वर्धन , संरक्षण और प्रसारण के लिए हर वैदिक धर्मी के सहयोग की अपेक्षा है । जिससे वसुधैव कुटुम्बकम की संस्कृति से निहित यह महान ज्ञान जनमानस मे प्रसारित हो सके।

वैदिक अनुसन्धान समिति (रजि.)

विषय सूची पृष्ठ संख्या

विषय सूची पृष्ठ संख्या

विषय सूची पृष्ठ संखया

विषय सूची पृष्ठ संखया

प्रकाश की ओर

परमात्मा का औषध प्रसाद

11.6.1982
जोर बाग, नई दिल्ली

जीते रहो,

देखो, मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भाँति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन–पाठन किया। हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है। जिस पवित्र वेद वाणी में, उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की प्रतिभा का वर्णन किया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा वरणीय माने गए हैं। मानो जो मानव उसको अपने में वरण कर लेता है तो वह प्रायः उसी को प्राप्त हो जाता है क्योंकि उसको अपना वरूण बना लेना चाहिए। वह महान और पवित्र है और उसकी पवित्रता में इस सर्वत्र ब्रह्माण्ड की आभा बनी हुई है और उस ब्रह्म की आभा में ही यह सर्वत्र ब्रह्माण्ड आभाहित हो रहा है और गति कर रहा है और गतिशील होने वाला यह ब्रह्म चक्र कहलाता है इसे ब्रह्म चक्र इसलिए कहते है क्योंकि जो भी वस्तु हमें दृष्टिपात आ रही है चाहे वे वनस्पतियों के स्वरूप में हो, चाहे वह मानो जितने भी प्राणवर्धक है, प्राणधारी है। वे सर्वत्र मानो एक ब्रह्मचक्र की कृतिभा बनी हुई है और वह कृतिभा बन करके मानव को एक महानता की आभा से प्रकट करा रही है।

यागेष्टि

परन्तु आज का हमारा वेद मन्त्र हमें इस मार्ग के लिए प्रेरित कर रहा है इससे पूर्व काल में, हम मानो कुछ यागों का वर्णन कर रहे थे और उसमें विशेषकर वाजपेयी याग का वर्णन आ रहा था। परन्तु द्वितीय रूपों में, हमारा जो याग का प्रकरण है वह अमावेष्टि और कुम्भेष्टि कहलाता है। प्रत्येक गृह, स्थलियों में ये दो याग हमारे यहाँ विशेष कर माने गए हैं। एक अमावेष्टि और एक कुम्भेष्टि है। वेष्टि कहते हैं जो मानव अपने में कुछ स्था, अपनी पूर्ति के लिए याग कर रहा है। मानो देखो, याग उसको कहते हैं जो उसके अनुकूल अपने जीवन में मन, कर्म वचन को लगाकर रखता है, उसी में तन्मय रहता है, तो वह यागेष्टि कहलाता है।

एक मानव याग के द्वारा अपने जीवन का शोधन करना चाहता है। वो नाना साकल्यों को एकत्रित करता है और साकल्यों को एकत्रित करता हुआ उसमें मानो देखो, समिधा भी उसी प्रकार की लाता है। परन्तु वो याग करता है तो उसके जीवन का शोधन हो जाता है।

काके ऋषि के शिष्य

हमारे यहाँ पूर्व काल में नाना ऋषि हुए है जो याग करते थे, परन्तु वो यागों के द्वारा अपने मानव जीवन का शोधन करते थे। एक समय सोमकेतु ऋषि महाराज, काके ऋषि के द्वार पर पहुँचे। तो काके ऋषि के यहाँ मानो उनके एक शिष्य थे, तुरूण। तो तुरूण का सोमकेतु से ईर्ष्यामयी जीवन बन गया। और बना कैसे? एक मजिष्ठकेत नाम के ऋषि हुए। तो मृचीषि नाम के ऋषि के द्वारा दोनों अध्ययन करते थे। जब वे अध्ययन करते थे, तो गान गाने में वे दोनो अमावेष्टि याग करते थे। परन्तु याग करते हुए, उनके हृदय में एक ईर्ष्या की अग्नि जागरूक हो गई। क्योंकि सोमकेतु उस याग के द्वारा लोकों की उड़ान उड़ते थे और ब्रह्मचारी तुरूण वह लोकों की उड़ान न उड़ करके, वे लोक की उडान उडते थे। परन्तु इन्हीं विचारों में, दोनो में संघर्ष हो गया। परन्तु सोमकेतु तो उदार थे। वे लोकों की उड़ान उड़ते रहते थे। परन्तु तुरूण ब्रह्मचारी को एक ईर्ष्या उत्पन्न हो गई। ईर्ष्या के उत्पन्न होने से, मानो जब वे काके ऋषि के द्वार पर पहुँचे। क्योंकि वह जो तुरूण थे, वह काके मुनि महाराज के पुत्र थे। वे काके के द्वार आ पहुँचे। तो वे काके के द्वारा क्यों पहुंचे? क्योंकि ये राम, रावण के काल का वर्णन है। तो उस समय जो सूर्य उदय होता था वह लालिमा को विशेष लेकर के होता था और जब वह अस्त होता तो वह भी लालिमा को लेकर के अस्त होता था। परन्तु वो लालिमा एक प्रचण्ड अग्नि थी। तो काके ऋषि महाराज उस विद्या को जानते थे। परन्तु सोमकेतु उनके द्वार पर पहुँचे और सोमकेतु ने काके से ये कहा कि महाराज! ये जो लालिमा हो रही है, जो अंतरिक्ष में ओत–प्रोत होने वाली लालिमा है। सूर्योदय के साथ है, और सूर्यास्त होने के साथ है। यह क्यों है?

पृथ्वी पर लालिमा

तो उस समय काके ऋषि ने सोमकेतु से कहा था कि यह जो लालिमा आ रही है यहाँ कोई संग्राम होने वाला है। विज्ञान की कुछ तरंगें समाप्त होने वाली है। एक वाक् ओर यदि यह नहीं होगा तो कुछ नक्षत्रों की धाराएँ एक सूत्र में आ जाती है। जैसे मानो देखो, पृथ्वी के अन्तर्गत एक सूर्य की आभा में, क्योंकि पृथ्वियाँ गति करती रहती हैं। कुछ मानो देखो, यह शनि मण्डल भी और सूर्य और बृहस्पति एक धारा में जब आ जाते हैं तो मानो देखो, यह जो अंतरिक्ष है जहाँ से सूर्य तपती लता है, उस द्यौ मण्डल में परमाणुओं का संघर्ष हो जाता है और उसमें अग्नि प्रचण्ड हो जाती है। उस अग्नि का परिणाम यह होता है कि मानो या तो राष्ट्रीय संग्राम होते हैं और या अकाल की प्रवृतियाँ बन जाती है। कुछ पृथ्वियाँ इस प्रकार की होती है जिसमें वायु अपने वेग में, अग्नि के परमाणु लेकर के गति करती है और मानो देखो, अनावृष्टि होकर के खाद्य पदार्थो को विनाशता के मार्ग पर ले जाती है।

तो यह काके ऋषि ने सोमकेतु को वर्णन किया। परन्तु जब उन्होंने तुरूण से कहा हे बालक ! हे ब्रह्मचारी! देखो, सोमकेतु आएँ हैं इनको कुछ पान कराओ मानो देखो, तुरूण ब्रह्मचारी के हृदय में अग्नि प्रदीप्त हो रही थी। सोमकेतु विवेकी थे उन्हें कोई स्मरण नहीं रहा। परन्तु उन्होंने जल और तुष्टाम् में मानो देखो, उन्हें एक विषधर का पान कराया। उन्हें जब विष का पान करा दिया तो वहाँ से सोमकेतु ने जैसे ही गमन किया तो वह अपने आश्रम में पहुँचे, परन्तु आश्रम में जाते ही, उनकी त्वचा विकृत हो गई। मानो अस्थियों में विकृत्तियाँ आ गई, प्राण–सखा मानो देखो, जाने के लिए तत्पर हो गया। सोमकेतु उस समय मानो देखो, आयुर्वेद का, आयु का अध्ययन करने लगे। जहाँ वे लोकों का अध्ययन करते थे वहाँ वे आयुर्वधक याग का अध्ययन करने लगे।

अमावेष्टि याग

जब उन्होंने इस प्रकार का अध्ययन किया तो अध्ययन में आया कि एक ब्रह्माणि, सोमकृतिभा और त्रेणकेतु इन तीन औषध का उन्होंने पिपाद बनाया और अग्नि में उसको तपाने के पश्चात उसको खरल किया, स्वाति नक्षत्र में। तो स्वाति–नक्षत्र में जब उसको खरल करने लगे तो उसका पान किया गया तो मानो शरीर में, अस्थियों में, त्वचा में जो भी विषधर मानो देखो, विष उसमें जाग गया था तो उन औषधियों ने, विष को अपने में धारण कर लिया और सोमकेतु का जीवन, इन्हीं औषधयों के द्वारा वे याग करने लगे। परन्तु देखो, औषधियों के द्वारा जब याग करने लगे तो उनके गृह के परमाणु जैसे ही शुद्ध

हुए, ऐसे श्वास के द्वारा आन्तरिक जो हृदय था वह भी शोधन होने लगा। परन्तु जब वह शोधन होने लगा तो उस याग को हमारे यहाँ देखो, अमावेष्टि याग उच्चारण करने लगे उसे अमावेष्टि याग कहा जाता है। वह पूर्णेष्टि यागां ब्रह्मे सुताः परन्तु देखो, ये याग होने लगे।

तो परिणाम क्या मुनिवरो! देखो, उन्होंने नाना प्रकार की और ओषधियों को एकत्रित किया और उनके द्वारा जैसे मजरीठ होता है, यह एक औषध का नाम है। मजीष्ट, एक औषधि का नाम है सुंजिना तृतीय औषध का नाम है सेस्कृतिका मानो चौथी औषध का नाम है ध्रुवकेतु पंचमी, औषध का नाम है मानो देखो, इन औषधियों के द्वारा सोमकेतु नित्य प्रति याग करते थे। उन यागों का परिणाम ये हुआ कि उनके मस्तिष्क की ग्रन्थियों में स्पष्टीकरण आया और वह लोकों की वार्ता जानने लगे।

वह शुद्ध होकर के, पवित्र होकर के पुनः काके ऋषि के द्वार पर पहुँचे काके ऋषि के द्वार जब पहुँचे तो काके ने कहा—आओ, ब्रह्मचारी! तुम विराजमान हो। मानो उन्होंने पुत्र तुरुण को कहा हे तुरुण! मुझे यह प्रतीत नही था कि तुम इतनी अग्नि में मानो द्वेष की अग्नि में परिणत हो गए हो। तब उन्होंने आश्चर्य चकित होकर कहा—कि क्या तुम सोम हो? उन्होंने कहा मैं सोम हूँ। मानो तेरे विष से मेरी मृत्यु, मेरा प्राणान्त नहीं हो सकता क्योंकि मैं तेरे गुणों को जानता हूँ। तेरे गुणों की आभा को मैं जान गया हूँ। क्योंकि तुम लोकाचार को, विषधरों को अपने में लाना चाहते हो। परन्तु देखो, यह वाक् तुम्हारा कोई प्रियतम नहीं रहा।

परन्तु जब तुरुण ने यह सुना तो मानो वह नत—मस्तिष्क हो गया और सोम से कहा—हे सोम! तुम सोम हो और वह गिच की भांति मानो जैसे अग्नि में जल मानो देखो, भस्म हो जाता है ऐसे ही मेरा जीवन भस्म होने जा रहा है। मेरी यह मृत्यु हो गई है।

द्वेष युक्त कार्यों से हानि

तो मुनिवरो विचार विनिमय क्या? इन वाक्यों का, कि मानव को द्वेष—युक्त कोई कार्य नहीं करना चाहिए। क्योंकि द्वेष युक्त होने से, मानव के शरीर में मानो भयंकर अग्नि ओत—प्रोत हो जाती है। उस अग्नि में गिच की भांति वह मानो नष्ट हो जाता है।

तो इसी प्रकार आज का हमारा यह वाक् क्या कह रहा है। तो उस समय सोम ने कहा—आओ, तुरुण ब्रह्मचारी हम देखो, इन वाक्यों पर विचार करें। तुम अपने को इतना आभा में न ले जाओ मानो तुम गिच की भाँति न बनो। आओ, आज हम तुम्हे देखो, सोम के, आयुर्वेद में ले जाना चाहते है। मानो देखो, काके ऋषि ने कहा—कि जाओ, ब्रह्मचारी! तुम सोम के द्वार जाओ। परन्तु उन्होंने कहा पितर! मैं क्या करूँ? मेरा अन्तर्हृदय, मेरे हृदय में जो पाप कर्म आ गए हैं वे पापकर्म मुझे उनके आश्रम तक नहीं जाने देते। परन्तु देखो, काके ने कहा—कि तुम अध्ययन करो।

तो मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने सोमभू और त्रिणि दोनों औषध को लेकर के त्रिकात को मानो तीनों औषधियों को मिलाकर के, ब्रह्मचारी को मानो पिता थे, उन्होंने पान कराया और पान कराने से मानो देखो, उनका हृदय स्वच्छ बन गया। मानो घृणा से, पापों की आभा से वे रहित होने लगे। उन्होंने कहा तुम एक वर्ष तक गायत्री की गोद में चले जाओ। वे औषधियों का पान करते हुए देखो, जो त्रिस्पत अन्न होता है उसे समाप्त करके, औषधियों का पान कराकर के एक वर्ष तक गायत्री का जाप, गायत्री का मन्थन किया और गायत्री का अध्ययन करने से उसी के द्वारा औषधियों का याग करते थे। परिणाम यह हुआ कि वे सोमकेतु के द्वार पर पहुँचे।

सोमकेतु के द्वार पर जब पहुँचे तो सोमकेतु के चरणों का स्पर्श किया। सोमकेतु ने कहा—हे ब्रह्मचारी! हे तुरुण! तुम मानो देखो, इतने आभामय नम्रतामय कैसे बने? उन्होंने कहा प्रभु इस प्रकार का मैं अमावेष्टि याग कर रहा हूँ और वो जो याग मैं कर रहा हूँ जैसे मानो देखो, पूर्णिमा के दिवस मैंने याग को प्रारम्भ किया। इसी प्रकार देखो, मैं याग करता रहा जैसे चन्द्रमा की कलाएँ सूक्ष्म होती गई, ऐसे मैं याग करता रहा। अमावस्या के दिवस मैंने द्वितीय औषधियों का याग प्रारम्भ किया जैसे चन्द्रमा उदय होता रहा उसी प्रकार मानो देखो, मेरे पापों की आभाएँ समाप्त होने लगी। मानो मेरे जो हृदय में रूग्ण था। विष की धाराओं का जन्म हो गया था। द्वेष—अग्नि के द्वारा वे सर्वत्र मानो अमावस्या और पूर्णिमा मानो देखो, इसी प्रकार वे समाप्त हो गए।

चन्द्रमा की कला पर अनुसंधान

मेरे पुत्रो! मुझे स्मरण है जब इस प्रकार के याग हमारे यहाँ सोमकेतु मुनि ने किए। तो तुरुण और सोमकेतु दोनो याग करते हुए मानो देखो, चन्द्रमा की कला के ऊपर अनुसंधान करने लगे। चन्द्रमा की कला सोम देती रहती है और वह सोम आता है वनस्पतियों में वह रसों को प्रदान करते रहते है। उसको हमारे यहाँ सोम कहा जाता है। मानो देखो ओर भी औषधियों को लेकर के हम सूर्य की सम्पन्न कलाओं के ऊपर,अनुसन्धान करने लगे। अनुसंधान करते हुए, सूर्य के अंतर्गत मानो जो एक रेखा में आने वाले मण्डल हैं जैसे देखो, ये लगभग पाँच वर्षों के पश्चात् मण्डल एक धारा में आते है एक सूत्र में आते है। देखो, समाज की इससे जन समूह में नाना प्रकार की हानियाँ भी हो सकती है। परन्तु देखो, इससे जनकृतिका भी हो सकती है। परन्तु देखो, इसमें कई प्रकार के काल बना करते है।

दोनों ब्रह्मचारी उस लालीमा के ऊपर चिंतन करने लगे। लालिमा में यह आता है जैसे किसी—किसी काल में सूर्य में भी इसी प्रकार की अग्नि प्रचण्ड हो जाती है। सूर्यमण्डल में भी, शनिमण्डल में भी जब प्रकोप आते है तो अग्नि प्रदीप्त हो जाती है। परन्तु किसी—किसी काल में देखो, इस महा मण्डलेस्ता में मानो जिसे हम विद्युत कहते है। जिसे हम द्यौ कहते हैं जहाँ से सूर्य प्रकाश लेकर के प्रकाशित हो रहा है। चन्द्रमा सोम लेकर के सोमेश्वर कहलाता है। परन्तु देखो, जैसे शनि त्राण को लेकर के त्रिंगित कहलाता है। परन्तु वह कहाँ से द्यौ मण्डल से लेता है। द्यौ से लेता है। तो द्यौ में भी किसी—किसी काल में अग्नि प्रचण्ड हो जाती है। अग्नि प्रदीप्त हो जाती है। उस अग्नि का परिणाम यह होता है कि नाना पृथ्वियों पर कुछ मण्डलों पर, मानो उसका भयंकर स्वरूप बना करता है।

पूज्यपाद गुरुदेव व पूज्य महानन्द जी के प्रश्नोत्तर

(पूज्य महानन्द जी) ये तो मैं जानता रहता हूँ, आप से, बहुत पुरातन काल में नम्रता से निवेदन भी किया था कि जिन औषधियों का जिन यागों का आप वर्णन करते हैं उस वर्णित रूप में, आपकी जो औषध है आधुनिक विद्वानों के समीप उसकी कोई जानकारी नहीं है।

(पूज्यपाद गुरुदेव) तो पुत्र! हम क्या कर सकते हैं। जिन औषधियों की आधुनिक विद्वानों के समीप कोई जानकारी नहीं है तो पुत्र! हम क्या कर सकते हैं?

(पूज्य महानन्द जी) क्या भगवन्! इनका रूप ऐसा नहीं बन सकता जैसा आधुनिक नामोकरण में हो।

(पूज्यपाद गुरुदेव) बेटा! ये तो भाषाओं का और विवाद का अन्तर बना रहता है। औषधियां एक ही स्वरूप में रहती है। परन्तु जैसे इनके रूप में, औषध को आदर से हम उसको बहुत महत्व देकर के उसमें कुछ शब्दों की प्रतिभा लगा देते है। जैसे पीपल का वृक्ष है तो उस वृक्ष को हमारे यहाँ सोमऋद्धि कहते हैं। उसे हमारे यहाँ सोमऋद्वि क्यों कहते हैं? क्योंकि ये वृक्ष सोमकेतु, सोम कहलाता है। तो सोमऋद्धि ऐसे शब्द कहते हैं। जैसे वट वृक्ष है जैसा तुमने किसी काल में वर्णन कराया था। जैसे वट वृक्ष है। वट वृक्ष को हमारे यहाँ कृधिका भी कहते हैं और पुष्टिवर्धक है। पुष्टि कांगिनी कहते है। परन्तु देखो, यह हमारे आलस जी सूचक कहलाती है। और श्वांगकेतु नामक एक औषध होती हैं उसे श्वांग कहते और सुंजनी भी कहते हैं। और यह प्रतीत

नही कि आधुनिक काल में किस नाम से उच्चारण करते है। ये तुमने मुझे दो शब्दों की, दो वृक्षों की आभा बहुत पुरातन काल में वर्णित की थी। परन्तु ऋद्धिका हमें यह प्रतीत नही है कौन–सा वृक्ष है। आधुनिक काल में क्या कहते है इसको यह तो प्रतीत है, क्या, हम उस वृक्ष को तो जानते हैं। रहा यह कि जैसे शैलखण्डा एक औषध है तो शैल खंडा को भी जानते हैं। परन्तु शैलागिनी शैलखण्डा श्रीधांगणि यह एक मानो एक ही सूत्र की औषध कहलाते है।

सूत्र उसे कहते है कि जिन औषधियों में मानो देखो, एक ही धारा के गुण कहलाते है। मानो किसी में उष्मता है, किसी में शीतलता है तो किसी में मानो गुरुता है और गुरुता होने से जब तीनों एक ही सूत्र में इसलिए क्योंकि वह एक दूसरे का मिलान होकर के, उनका एक ही गुण बन जाता है। एक गुण बनकर के उसी में मानो देखो, रूग्ण की औषध बन जाती है। इसी प्रकार हम इसको आधुनिक जगत की औषधियों का नामोकरण स्मरण नही तो तुम्हारे स्मरण हो तो उच्चारण करो। हमारे आधुनिक नाम भी इसी प्रकार का बनता है।

परन्तु है वे उन औषधियों को उतने रूप से नही जानता जैसे कृति अंजनम् जो विद्वानजन जो शब्द बना है वो मानो देखो, उसमें उष्मता कहलाती है और आधुनिक काल में क्या कहते हैं इसका कोई प्रतीत नहीं है।

(पूज्य महानन्द जी) क्या, आधुनिक काल में भगवन्! उसको कुलंजनी कहते है।

आधुनिक जगत में तो उसको कुलंजनी कहते है। जो पानेसुन्दरी होता है। जो यागों में कार्य आता है।

मानो देखो, उस पाने के जो, जिसमें पानो की भिज रहती है जिसे हम जटिका कहते हैं। मानो देखो, उसका नाम कुलंजनी, वृन्जनी कहलाता है। चलो, यह आपके स्मरण हो गया।

(पूज्यपाद गुरुदेव) परन्तु सुधानु किसे कहते हैं? सुधानु तांचनी है, तान्चनी और सुधानु दोनों है वो एक ही सूत्र की दोनो औषध कहलाती है।

(पूज्य महानन्द जी) तो भगवन! वो सुधानु को तो हमारे यहाँ सहदेवी जटामासी दोनो एक ही सूत्र में आती है और दोनो मस्तिष्क के लिए बहुत ही ऊँचा कार्य करती है।

चलो ये भी तुम्हें स्मरण हुआ, परन्तु देखो, जनकेतकेतु है ये ऋति और कंचकेतु है तो ऋति, कंचकेतु का तुम क्या नाम उच्चारण करोगे?

(पूज्य महानन्द जी) क्या भगवन! इनको तो हम कंचेतकेतु कहते हैं

और आधुनिक काल में भी कचेतकेतु कहेंगे। परन्तु वह औषध मानो देखो, विज्ञानों के समीप सूक्ष्म, इसी प्रकार जैसे अश्विनी कुमारों ने इन मोतियों के ऊपर बहुत अनुसंधान किया। अश्विनी कुमारों ने राजा राम के यहाँ जब वो मानव के हृदय और शरीर दोनों को देखो, उन औषधियों में स्थिर करते थे। जैसे स्वाति है, जनकेतु है, समिधानकेतु है, चाटन कंचनी है और कंचनी और काष्टात्याची मानो ये छः औषध कहलाती हैं। इन औषधियों का, इनके वृक्षों की छाल, मानो इनका पांचांग छयो औषधियों का पांचांग लिया जाता है। पांचांग को लेकर के उससे शरीर मानो देखो ज्यों का त्यों बना रहता, अग्नि में तपाने से और इसी प्रकार जैसे स्वाति है, कद्धान है, कन्धारता त्रि–जनकेतु ये तीनों औषधियों इस प्रकार की हैं। जिनके पांचांग को लेकर के और इनका पिपाद बना करके इसमें मानव के हृदय को स्थिर किया जाता है तो वो छः छः माह तक मानो देखो, हृदय ज्यों का त्यों बना रहता और ज्यों का त्यों बना रहने से जैसे मंजीठ, तासकेतु, चंकिका, हूनुतकेतु ये चार औषध होती है जिनको मानो देखो, हम पिपाद बनाकर के हृदय को और शरीर दोनों का समन्वय करके हम श्वंजनी के द्वारा मानो देखो, इन औषधियों का लेपन करते है। लेपन के पश्चात वो पुनः गतिवान बनकर के मानो संसार में विचरण करने लगता है।

तो ये सब औषधियाँ मानो देखो, तुम्हें कही प्राप्त हो जाये। पुत्र! मानो देखो, सुधन्वा नामक जो वैधराज थे राजा रावण के यहाँ, उस सुधन्वा के द्वारा ऐसा मानो देखो, उन्होंने एक वैध राजन मेककेतु एक पोथी का निर्माण किया था। वो पोथी तुम्हें कहीं प्राप्त हो जाये तो प्रायः उसमें इस प्रकार की औषधियाँ प्राप्त होती है।

(पूज्य महानन्द जी) तो क्या भगवन् वो औषधियाँ की पोथी कहाँ प्राप्त हो सकती है?

(पूज्य गुरुदेव) पुत्र! यह हम नहीं जानते कि वह पोथी कहाँ हैं। मानो इस पोथी का, तुम आधुनिक काल की चर्चा करते रहते हो। वह आधुनिक काल की चर्चाओं का उच्चारण करोगे तो मानो कही तुम्हें इसका आस्वान प्राप्त हो जायेगा या नहीं होगा, इसको मैं नहीं जानता।

(पूज्य महानन्द जी) तो क्या भगवन् इसका सूक्ष्म वर्णन कर सकता हूँ।

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव और ऋषिवर! बहुत पुरातन काल हुआ, महाभारत के काल में महाराजा धन्वेतकेतु एक वैधराज हुए। परन्तु धन्वेतकेतु नाम के जो वैधराज थे वे विराटी कहलाते थे। उन्होंने कुछ औषधियों को जाना। परन्तु वह एक समय व्यास जी के द्वार पर पहुँचे। तो महाराज व्यास जी के जो पिता थे, धुनकेतु, तो धुनकेतु के यहाँ पहुँचे और धुनकेतु महाराज इस वैध की प्रतिक्रिया को जानते थे। परन्तु महाभारत का जो काल हुआ, तो महाभारत के काल में सर्वत्र एक राज्य में महाभारत के संग्राम में मानो देखो, उनकी सेवा करने के लिए गए। राष्ट्रीय आभा से और पाला मुनि भी इस विद्या को जानते थे। परन्तु देखो, वह सुधन्वा, नाना पोथी उनके समीप रहती थी। तो उसमें पुनः पुनः जीवन देने की शक्ति थी। परन्तु महाभारत काल के पश्चात् उन पोथियों का विद्विता न रहने के कारण, वह पोथी ज्यों की त्यों इस भूमि के, विश्वविद्यालयों में कहीं, कहीं पनपती रही। परन्तु जहाँ हमारी इस राष्ट्र में यह आकाशवाणी जा रही है कुछ काल के पश्चात् महाभारत के काल के पश्चात जनमेजय का राज हुआ, जनमेजय के पुत्र का नाम जनेतकेतु था। तो जनेतकेतु राजा के राष्ट्र, राष्ट्रीयता होने के पश्चात मानो देखो, उसके पश्चात मरेच नामक राजा था उसका राज्य हुआ, और वह राज्य यहाँ आकर के, यह महाभारत प्रणाली, पाण्डु प्रणाली का अन्त हो गया।

उसके पश्चात यहाँ एक श्वेनकेतु नामक बुद्धिमान ब्राह्मण थे। क्योंकि जातीयता की आभा परिणत हो गई थी। महाभारत के पश्चात् ही जातीयता आ गई थी। तो वे ब्राह्मण थे तो यहाँ ब्रह्मणवत् व्रत का राज्य हुआ। तो राज्य क्योंकि जो बुद्धिमान आत्मवेत्ता जिसे बनना था वे राष्ट्रीय आभा में परिणत हो गए। उन्होंने क्षत्रियों के कुछ वंशजों को समाप्त किया। परन्तु वह राज ब्राह्मण करते रहे। वो राज तिलक 100 वर्षो तक, चला। परन्तु राष्ट्र चलता रहा, उसके पश्चात ब्राह्मण राष्ट्र समाप्त हो गया। जब घृणा आ गई, तो घृणा आ जाने से देखो, क्षत्रीय विद्रेककेतु नाम के राजा हुए। विद्रेककेतु नाम के राजा ने राज किया। उनके वंशजो की लगभग बीस प्रणालियों ने राज्य किया।

बीस प्रणालियों के राज्य करने के पश्चात यहाँ मानो देखो, एक इष्टी के रूप में, उस काल में एक सूक्ष्म सा राज्य था जो उस राष्ट्र में निर्णय था। एक ही राष्ट्र था। परन्तु देखो, उस आभा में, उसी राष्ट्र के एक आंगन में भावो अपलेनकेतु नाम के एक आचार्य हुए, अपलेनकेतु आचार्य ने एक सम्प्रदा का निर्माण किया। जिस सम्प्रदा को अग्नि होमकेतु कहते थे। उस सम्प्रदा का नाम अग्नि होमकेतु था। परन्तु जिसे आधुनिक काल में बासकीय के नाम से वर्णन करते है।

परन्तु उसके पश्चात यहाँ शुनेचन्दनम् मानो देखो, महात्मा बुद्ध आए। और बुद्ध के अनुयायियों ने मानो देखो, अहिंसा, परमोधर्मः वेद की पोथी को नहीं लिया। उन्होंने याग जैसे कर्मों को मिथ्या उच्चारण करना प्रारम्भ कर दिया। प्रारम्भ करने के पश्चात जैन काल आया। उसके पश्चात जैन काल का राज्य हुआ। राज्य होने से उन्होंने देखो, विश्वविद्यालयों में जितनी पोथियाँ थी उनको अग्नि के मुख में परिणत कर दिया और वैद्यराज सुधन्वा की वैद्य की पोथियों वो अग्नि के मुख में परिणत कर दिया। अग्नि के मुख में चली गई। मुख में चली जाने से वह औषधियों और मानो देखो, वह चिकित्सा अब हमें कहीं प्राप्त नही होती। अब हम उसे नहीं जानते हैं। आप जैसे मेरे पूज्यपाद गुरुओं के मुखारविन्दु से उन औषधियों का वर्णन होता रहता है।

परन्तु देखो, आधुनिक जगत में भी इस प्रकार की औषधियाँ है। परन्तु वह औषधियाँ जो सुधन्वा नामक वैधराज के यहाँ थी जिनसे मस्तिष्क की ग्रंथियों का स्पष्टीकरण होते रहते है। परन्तु आधुनिक काल के वैधराज, जो औषधियां हमें जंगलो में प्राप्त होती है उन्हें लाते हैं परन्तु देखो, सुधन्वा और सम्भूति वह नहीं रही, परन्तु देखो, कण्टक और बागानकेतु नाम के आचार्य हुए। उन्होंने आयुर्वेद को लिया। आयुर्वेद से उन्होंने औषधियों को एकत्रित किया उन औषधियों को निधण्टकेतु ने उन्होंने देखो, उसमें उसको स्थित कर दिया।

स्थित करने के पश्चात् उन्होंने अपनी—अपनी पोथियों में निर्माण किया। कुछ औषधियों का उसमें गुणावादन प्राप्त होता रहता है। कुछ के मानो सुधन्वा नामक, जितनी वे जानते थे उनके रूपरेखा में परिर्वतन आ गया। परन्तु देखो, उनके नामो में भी परिर्वतन आया। अब उन नामों के हम उच्चारण करते रहते है तो उससे हमें कहीं—कहीं कुछ प्राप्त हो जाता है।

तो इस प्रकार आधुनिक काल का जो वैधराज है। उस वैधराज ने राष्ट्रीयकरण मानो उन औषधियों का नहीं किया गया। आधुनिक काल में जिन औषधियों का राष्ट्रीयकरण होना चाहिए था। जैसे नाना प्रकार की भस्मिका है मानो जैसे स्वर्ण पीताम् भस्मिका है जैसे पारंगगति भस्मिका जैसे आन्नकेतु भस्मिका है। जैसे सारंग कृतिभा भस्मिका है परन्तु जैसे चन्द्रकेतु भस्मिका है आन्नकेतु और देखो, चन्द्रसंधि की इन नाना प्रकार की धातुओं की मानो देखो, भस्मिका का निर्माण प्रायः होता रहता है। परन्तु उसका राष्ट्रीयकरण होना चाहिए, जो नहीं हो पाया। क्योंकि यह औषधियाँ मानव के सर्वांग रोगों में देखो, कार्य करती रहती है और लाभ को प्राप्त होती रहती है।

परन्तु देखो, जहाँ तक मैं यह उच्चारण कर सकता हूँ मेरे पूज्यपाद तो सतोयुग की वार्ता प्रकट करते है। सतोयुग के काल में, त्रेता के काल में, मध्यकाल में प्रायः ऐसा रहा है कि उस काल में मानो देखो, औषधियों का जन्म कुछ यागों के द्वारा, परमाणुवाद के द्वारा कुछ मानो पान करने के द्वारा मानो ये चिकित्सा देखो, मुख्यतः रही है। आधुनिक काल में यह मानो देखो, अग्नि की तरंगों में औषधियाँ नही दी जाती। यह आधुनिक जगत में कुछ औषधियों का जिनका राष्ट्रीयकरण होना चाहिए था। परन्तु वह न होने से केवल पान—पान रह गया है। अग्नि में, याग के द्वारा, मन्त्रों के द्वारा नही रहा। परन्तु यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि हम मन्त्रो के द्वारा, याग में याग की चिकित्सा को कैसे स्वीकार करते हैं? यह कैसे है?

मन्त्र चिकित्सा

परन्तु देखो, प्रश्न के उत्तर में यह हमें प्राप्त होता है कि वेद मन्त्र का जब हम विशुद्ध रूप से, गान रूप में जब हम परिणत करते है तो बहुत सी ग्रन्थियां ऐसी है जो उस मन्त्र के चिन्तन करने से, मन्त्र को स्वरों से उच्चारण करने से मानव के मस्तिष्क की ग्रन्थियों में स्पष्टीकरण आ जाता है और वो जो मनुष्य के मस्तिष्क की ग्रन्थियाँ जहाँ—जहाँ स्पष्टीकरण होती है जहाँ—जहाँ धारा जाती है वहाँ रूग्ण का विनाश होता रहता है। बहुत से रूग्ण इस प्रकार के हैं जो आधुनिक काल की औषधियों से मानो देखो, उससे परी बन जाते हैं।

रूग्ण की उत्पत्ति

तो वहाँ आचार्य यह कहते हैं, कि प्रभु का चिन्तन करने से यह औषध मानो देखो, प्राण शक्ति प्राप्त होती है क्योंकि मन की विकृतता, विशेष होने से मन को देखो, विशेष भौतिकवाद से लगाने से भी हमारे द्वारा बहुत से रूग्ण उत्पन्न होते है। बहुत से रूग्ण ऐसे हैं जो वासना के द्वारा मानो उत्पन्न होते है। बहुत से रूग्ण इस प्रकार के हैं जो मानो हमारे में एक दूसरे से ईर्ष्यावत् उत्पन्न होते हैं। कुछ ऐसे रूग्ण होते हैं जो हमारे आहार रूपी प्रवृत्तियों से उत्पन्न हो जाते हैं।

मानो देखो, जिस समय हम वेद का उच्चारण करते हैं उसकी टिप्पणियों में जाते हैं तो वेद के मन्त्रो से हमें आयुर्वेद की ग्रन्थियों की आभाएँ उसमें प्राप्त होती रहती है। क्योंकि ज्ञान के मार्ग में जब स्वाध्याय शील प्राणी बनता है तो वह यह कहता है कि यह संसार तो कुछ नहीं है यहाँ मान भी और अपमान भी दोनो ही हानिप्रद है। ये दोनों ही नाश के, विनाश के सूत्र में बन्धे हुए है।

परन्तु देखो, यह इसे हमें अपने से दूरी कर देना चाहिए। यह दूरी कैसे होगा? स्वाध्याय से, चिन्तन और मनन करने से, याग कर्म करने से। उस समय हमारे हृदयों की ग्रन्थियाँ उन्हें स्पष्ट प्राप्त हो जाती है। मानो देखो, मुझे स्मरण है एक समय एक रूग्ण मेरे पूज्यपाद गुरुओं के द्वार पर आया। परन्तु उसको कामादि ग्रन्थियों में मानो देखो, एक विष उत्पन्न हुआ। कामों की ग्रन्थियों में जब विष उत्पन्न हो जाता है तो सोम रस का, एक सोम नाम की औषध होती है जो आज भी मानो देखो, ग्रन्थियों में, पोथियों में प्राप्त हो जाती है। अहा, वह सोम कैसे बनता है? सोम बनता है मानो जैसे पूज्यपाद गुरुदेव ने अभी—अभी वर्णन किया देखो, जैसे मंजीठ होता है और देखो, लाजवन्ती होती है श्वंजनाकेतु होता है। आधुनिक काल में उसको सुपामकेतु कहते है। उनको पान के रस में मानो देखो, छत्तीस दिवस तक उनको खरल किया जाता है और उसमें काकूरी, आन्वेषणी और केशणीकेतु इन तीनो का मिश्रण करते हुए इसमें मानो देखो जायफलिका, घृत बनता रहता है उसको पान करने से और यागकर्म करते हुए मन्त्रों का उच्चारण करने से मानो वो काम की ग्रन्थियों में जो निष्क्रियत आ गई थी वो मानो भस्म हो जाती है और मानव स्वस्थ बन जाता है।

तो इस प्रकार के मैंने कुछ अंक उच्चारण किए है। परन्तु मैं इस संम्बन्ध में कोई विशेषता देने नहीं आया हूँ। क्योंकि पूज्यपाद ने मुझे आज्ञा दी है मैंने कुछ सूक्ष्म—सा वर्णन किया है। मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से प्रश्न करता रहता हूँ और क्योंकि मैं परम्परागतों से इनसे जो भी वस्तु प्राप्त होती है वो केवल प्रश्नों से प्राप्त हुई है। बिना प्रश्नों के ये मानो अपने मुखारबिन्दु से किसी वाक् का स्पष्टीकरण नहीं कर पाते। यह इनकी बड़ी मानो देखो, मैं इस सम्बन्ध में कोई वाक उच्चारण नहीं कर पाता। मानो देखो, मैं प्रश्न करता रहता हूँ और ये उत्तर देते रहते हैं। इनकी उत्तरावली एक मानो विशेष और बड़ी विचित्र मानी गई हैं। मैं बहुत परम्परा से इनकी आभा में अपृत करता रहता हूँ। तो अब मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कुछ वर्णन किया है।

(पूज्यपाद गुरुदेव) तो क्या पुत्र! यहाँ महाभारत के काल में कुछ ब्राह्मणों का राज रहा है।

(पूज्य महानन्द जी) हाँ भगवन्! ऐसा ही दृष्टिपात किया गया।

(पूज्यपाद गुरुदेव) तो सम्प्रदाओं का प्रादुर्भाव महाभारत के काल में हुआ। परन्तु ये जो सुधन्वा नामक वैद्यराज की औषधियां हैं तुमने बेटा! यह श्रवण किया होगा कि जिस समय रामायण काल में युद्ध हो रहा था, संग्राम हो रहा था और लक्ष्मण मूर्छित हो गया था। मेघनाथ के अस्त्र से और अस्त्र शस्त्र का जो प्रभाव था वो शक्तिपात था।

रुद्रयाग की प्रतिभा

परन्तु शक्तिपात कैसे होता है? एक यंत्र बनाया जाता है और वो यंत्र रूद्रयाग से बनता है हमारे यहाँ एक याग होता है रूद्रयाग, तो रूद्रयाग से उसे बनाया जाता है। तो महाराजा रावण के पुत्र ने जब इन्द्र को विजय किया था, इन्द्रपुरी प्राप्त हो गई। तो इन्द्रपुरी में वो रहते थे, तो वहाँ वो रूद्र याग करते थे और रूद्र याग में कुछ वनस्पतियों को एकत्रित करके, और उससे जो रूद्र याग किया उन्होंने तो उसमें जो तरंगे उत्पन्न होती थी उसको बहुत अनुसंधान करने के पश्चात् वे तरंगे उन्होंने किसी यंत्र में एकत्रित की और यंत्र को मानो उसको कुछ सोगांग यंत्र में लगाया। और वह ऐसा परमाणु था जिसके प्रहार

करने से मूर्छित हो जाता था और मूर्छित यदि वो सूर्योदय, जैसे हमने मध्यदिवस उसका प्रहार किया और वह मूर्छित हो गया, रात्रि आ गई है। रात्रि के आ जाने से और जहाँ सूर्य को वो प्रातशमणी किरण शरीर से स्पर्श हुई तो उससे उसका प्राणान्त हो जाता था।

तो ये उस रूद्र याग से जो यंत्र बनता था उसमें यह विशेषता थी। परन्तु सुधन्वा वैधराज इस औषध को जानते थे। तो वह गिरी कानन्दनकेतु जो पर्वत था वे औषधियाँ वहाँ प्राप्त होती थी। तो उन औषधियों में, चन्द्रमा की कांति में, जब चन्द्रमा उदय रहता था, चन्द्रमा जब तक उदय रहता था उन औषधियों पर चन्द्रमा जैसी छटा दृष्टिपात् होती थी। परन्तु उन औषधियों को लाया गया, उस औषधि का नाम है चन्द्रीकान्त और द्वितीय नाम है उसका सोमकृतिभा तो दोनो औषधियों को वो खरल बना करके और लक्ष्मण को जब दी गई तो लक्ष्मण मानो विशुद्ध हो गए। तो शक्ति का प्रभाव समाप्त हो गया। वो रूद्र याग की प्रतिभा समाप्त हो गई।

तो ऐसे, ऐसे याग हमारे यहाँ प्रायः औषधियों के द्वारा प्राप्त होते रहे हैं। मैं पुत्र! इस आयुर्वेद के वन में बढ़ना नहीं चाहता हूँ। मैं किसी काल में आयुर्वेद में पहुँचूँगा तो तुम्हे कुछ गुणों का वर्णन कराऊँगा। आज का समय तो इतना ही है अब समय समाप्त होने वाला है।

परन्तु आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय कि हम देखो, अमावेष्टि और पूर्णेष्टि याग करते रहें। जैसे–जैसे चन्द्रमा उदय होता है मानो उसको अमावेष्टि कहते है। जैसे–जैसे चन्द्रमा का समय समाप्त, अस्ताचल को जाता है त्यों–त्यों उसमें यागों की, उसी प्रकार देखो, औषधियों के द्वारा जो याग करते हैं वो अमावेष्टि वृष्टियाग कहलाता है। देखो, हमारे यहाँ मेरी पुत्रियाँ जिनके गर्भस्थल में आत्मा का जैसे प्रवेश हुआ, उस काल में अमावेष्टि देखो, नौ माह तक इन यागों को करना वह माताएँ करती थी। आधुनिक काल का तो पुत्र मुझे प्रतीत नहीं, परन्तु वर्तमान काल में देखो, अतीत के काल में सदैव मेरी माताएँ पवित्र क्योंकि इन माताओं से हमने जन्म लिया वह माताएँ प्रायः ऐसा करती रही।

मुझे स्मरण आता रहता है एक समय मेरे पिता से यह प्रश्न किया गया देखो, जनेतकेतु ने एक समय पिता से यह प्रश्न किया। हे ऋषिवर! यह ब्रह्मचारी इतना मौन और गम्भीर क्यों रहता है। इसके मूल में क्या है इसे ब्रह्मज्ञान, संसार की आभा का ज्ञान है, इसका क्या कारण है? तो उस समय पिता ने कहा कि हम दोनों याग करते रहें हैं। मेरी देवी सदैव याग करती रही है। सोमलताओं के द्वारा और देखा, नाना प्रकार की औषधियों के द्वारा पान करती रही। उन औषधियों का पान करना उन्हीं के द्वारा याग करना, तो बाह्यजगत, आन्तरिक जगत दोनों के शोधन में परिणत हो जाते है। विचारों में मौन रहना, ज्ञान में सदैव दृष्टि रखना तो ये माताओं के जीवन की आभाएँ हमें प्राप्त होती है।

तो जब माताओं का जीवन इस प्रकार का रहा है। अशुद्ध आहार करना उनके लिए मानो एक विष के तुल्य रहता है आधुनिक काल में यह स्वीकार करते रहते है जैसा पुत्र तुमने मुझे वर्णन कराया था एक समय में, कि वो कहते हैं कि धासम् पान करना हमसे नहीं आता। परन्तु में यह कहा करता हूँ कि इनको घास नहीं कहते, इनको औषध कहते हैं। औषधियों का पान करना यह मानव के लिए बहुत प्रियतम है। क्योंकि यह सर्वत्र औषधि है, इनके उपयोग में, इनकी महानता इनके रसों से हमें प्राप्त होती है। परन्तु रहा ये कि हम दूसरों के रक्तों को जैसा तुमने मुझे वर्णन कराया। दूसरे के रक्तों का पान करना उनमें भी मानो देखो, वही अंजाम विचरता रहता है। परन्तु उनके इस दाह में, कि जब वह उस रक्त की आभा में संगति होती है परन्तु ज्यों का त्यों तो जितनी हमारे शरीर में ग्रन्थियाँ हैं वो ग्रन्थियाँ उस रूप में उसको नहीं पचापाती जिस रूप में औषधियों के रसों को पचा करके ओज, तेज और बुद्धि की उसमें उत्पत्ति होती है। अहिंसा परमो धर्म की तरंगे उत्पन्न होती है।

जीवन का उद्देश्य

परन्तु ये परमात्मा का दिया हुआ सर्वत्र एक औषध प्रसाद है। इस प्रसाद को पान करता हुआ मानव अपने को सौभाग्यशाली जब स्वीकार करता है तभी उस मानव की बुद्धि में नाना अंकुरों का जन्म होता है उन अंकुरों से एक आभा उत्पन्न होती है। गृहस्थाश्रम में पति, पत्नी का केवल संतानो तक देखो, उद्देश्य रहता है। उसके पश्चात् वह संसार के क्षेत्र में दोनों समिश्रण होकर के ऊँचे–ऊँचे कार्य यागों के द्वारा, कर्मठ होकर के और देखो, वह अपनी विद्या का प्रसार करने वाले बने। परन्तु यही जीवन का उद्देश्य होता है।

परिणाम क्या, मुझे इन वाक्यों के उच्चारण करने में कोई विशेषता, मैं तुम्हें पुत्र! उच्चारण करने नहीं आया हूँ। विचार यह कि मेरी माताएँ, सदैव अमावेष्टि और पूर्णेष्टि दोनो यागों में, क्योंकि मानव का जीवन ऐसे ही पनपता रहता है। ऐसे विचारो में तप्त ध्वनि आती रहती है। मानो देखो, जैसे पूर्णिमा का उदय होना देखो, पूर्णिमा के दिवस, चन्द्रमा की कला समय–समय अमावस्या के आँगन में पहुँचना और अमावस्या के पश्चात चन्द्रमा की कला का मानो देखो, पूर्णिमा के आँगन में सम्पूर्णता को प्राप्त होना ऐसे ही माताएँ प्रार्थना करती रहती है। हे माँ कस्सुतं देवाः अद्रेनस्तां चन्द्रो केतो प्रहाः यज्ञिनी यज्ञतां दिव्यस्।

भवति अच्युतां प्रवाह अग्रहेण असुतां यज्ञानां यज्ञतां दिव्यं
भवति अस्सुतां केतु हिरण्यं रथां केतु ब्रह्माः

इन मानो देखो, मन्त्रों के शब्दों का उच्चारण करती हुई मानो प्रार्थना करती है कि हमारा जो पुत्र है वो चन्द्रमा के तुल्य, सोम को पान करने वाला हो। जैसे समुद्रों से सोम का पान किया जाता है। ऐसे विद्यारूपी जो सोम है इसे पान करने वाला यह प्रायः माताओं का कर्तव्य रहा है।

मेरी माता ने सदैव यह प्रार्थना की तो पिता ने जब यह वाक निर्णय कराया तो ऋषि शांत हो गए और ऋषि ने नतमस्तिष्क किया। तो मानो देखो, इस प्रकार कि विद्याएँ परम्परागतों से ही हमारे यहाँ आती रही हैं। आज का यह वाक् समाप्त अब वेदों का पठन–पाठन। विशेष चर्चा हमें प्रकट करनी नहीं, यह तो विचारों का वन है, मैं देता रहूँगा, तुम श्रवण करते रहोगे। समय समाप्त होता चला जायेगा। परन्तु देखो, वार्ता समाप्त नहीं होती, समय प्रायः चला जाता है। अब वेदों का पठन–पाठन।

ओ३म् गतं प्रथाः वाचन्नमं प्राचीः गतं मनो आभ्यां रूद्राः
ओ३म् शन्नौत्रेताः आभ्यां मनुः वाचा रथं गायन्त्वा
ओ३म् ब्रह्मणश्पति वनु गाता वसु मां हृदाःवन धतः गतोः मान हृदय
ओ३म् यं सर्वां रूद्रं वाचा रथं गताः वाचो रथं गताः।

निर्मोही कुटुम्ब

25.8.1986

जीते रहो! **खुर्रमपुर, गाजियाबाद**

देखो, मुनिवरो आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भाँति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रो का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन–पाठन किया। हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेद–वाणी का प्रसारण होता रहता है। जिस पवित्र वेद–वाणी में उस महामना मेरे देव की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर के, वर्तमान के काल तक नाना विज्ञानवेत्ता हुए है। परन्तु कोई विज्ञानवेत्ता अब तक ऐसा नहीं हुआ जो उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को सीमाबद्ध कर सके। वे सीमा से रहित है। वे परमपिता परमात्मा सीमा में आने वाले नहीं है। इसीलिए हमारे यहाँ सृष्टि के प्रारम्भ से वर्तमान के काल तक कोई विज्ञानवेत्ता ऐसा नहीं हुआ। मानो वह परमपिता परमात्मा सर्वत्र है और उस परमपिता परमात्मा की महती मानो इस संसार की प्रतिभा में निहित रहती है।

आनन्दमयी विषय

आओ मेरे प्यारे! आज का हमारा वेद मन्त्र क्या कह रहा है। मानो जहाँ नाना प्रकार की विवेचनाएं, नाना प्रकार की आख्यायिकाएँ आती रहती है वहाँ हमारा वेद मन्त्र, उस परमपिता परमात्मा के गुणों का वर्णन करता रहता है। हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में उस परमपिता परमात्मा के नाना स्वरूप माने गए है और नाना स्वरूपों से उसका वर्णन किया गया है। परन्तु जब हम अन्तिम छोर पर मानो उसकी कृतिका के ऊपर विचार विनिमय प्रारम्भ करते हैं तो बेटा! वहाँ वाणी अपने में मौन हो जाती है। वहाँ वाणी का अपना कोई अस्तित्व नहीं रहता। क्योंकि वह आनन्दमयी मानो श्रोत्रोमयी और आनन्दमयी एक विषय कहलाता है जहाँ मानव की वाणी भी मौन हो जाती है।

तो मेरे प्यारे! आज मैं मौन होने के लिए तो नहीं, विचार दे रहा हूँ केवल विचारों का तारतम्य यह है कि आज हम बेटा! कुछ सूक्ष्म विचार विनिमय करें। क्योंकि प्रत्येक मानव परम्परागतों से ही, ये विचार विनिमय कर रहा है कि मैं मृत्युंजयी बनना चाहता हूँ। प्रत्येक मेरी माता के हृदय में, यह आशंका लगी रहती है कि मेरा पुत्र, मेरे से विच्छेद न हो। परन्तु प्रत्येक मेरी प्यारी, देवत्व को प्राप्त होने वाली देवी यह चाहती है कि मेरा पति मेरे से विच्छेद न हो। परन्तु प्रत्येक मेरी प्यारी माता की आकांक्षा लगी हुई है। प्रत्येक मानव के हृदय में भी यही विचार बारम्बार आते रहते है। कि मुझे मृत्युंजयी बनना है। नाना प्रकार के अनुष्ठानों में लगा हुआ। नाना प्रकार के क्रियाकलापों में लगा हुआ, मानव यही चाहता है कि मेरी मृत्यु नही आनी चाहिए।

मृत्यु से उपरामता

आचार्य के समीप जाता है। आचार्य के चरणों में विद्यमान होकर के नाना प्रकार का वो अध्ययन करता है, नाना प्रकार के आध्यात्मिक विज्ञान और भौतिक विज्ञान मे वो नाना प्रकार की उड़ानें उड़ने लगता है। परन्तु उसके गर्भ में केवल एक ही मन्तव्य रहता है कि मेरी मृत्यु नही आनी चाहिए। इस मृत्यु के सम्बन्ध में नाना ऋषिवर अपने में मानो विचार विनिमय करते रहे है, और नाना प्रकार के विचारवेताओं ने ये कहा है कि मैं मृत्युंजयी बनना चाहता हूँ। नाना प्रकार के पदार्थो को पान कर रहा है। नाना प्रकार के पदार्थो में किसी में मधुर रहे, किसी में कटू है मानो षड रसों का पान कर रहा है। पान करता हुआ यह चाहता है कि मेरा जो शारीरिक जीवन है वो इतना बलिष्ठ बन जाये, मैं मानो इतना ऊर्ध्वा में चला जाऊँ, कि मेरी मृत्यु नहीं आनी चाहिए। एक मानव का जो अपना दृष्टिकोण है अथवा अंतिम जो छोर है वह यही कहता है कि मैं मृत्यु से पर हो जाऊँ।

मेरे प्यारे! आओं, आज हम मृत्यु के सम्बन्ध में कुछ विचार विनिमय, देना चाहते है। प्रत्येक मानव, अपने में मानो जब मैं मृत्यु के सम्बन्ध में विचार विनिमय करता रहता हूँ तो बेटा! मुझे स्मरण आता रहता है मुझे वो सतोयुग का काल स्मरण आता है। मानो जहाँ बेटा! निर्मोही की चर्चा आती है। हमारे यहाँ निर्मोही नामक सतोयुग में एक राजा हुए हैं परन्तु वो कैसे निर्मोही थे। क्योंकि उनके राष्ट्र में मोह नही था।

निर्मोही राजकुमार

मेरे प्यारे! देखो, एक समय मुझे ऐसा स्मरण है कि महर्षि पनपेतु मुनि महाराज अपने आसन पर विराजमान थे। महर्षि पनपेतु मुनि महाराज मृत्यु को विजय किये हुए, विज्ञानवेत्ता थे। मानो वह अपनी अमरावती पुरी को जानने वाले थे। तो मेरे प्यारे! वो शान्तमुद्रा में, गायत्री छंदो में ओत–प्रोत हो रहे थे। वेदों का उद्गीत गाते हुए अपने में मौन रहते थे। एक समय बेटा! देखो, अपनी शान्तमुद्रा में विद्यमान कहीं से भ्रमण करते हुए एक राजकुमार उनके आश्रम में आ गया। राजकुमार के आते ही ऋषि ने कहा आइये, भगवन्! विराजिए, वे विराजमान हो गए। तो ऋषि ने उनका परिचय प्राप्त किया और उन्होंने कहा–हे राजकुमार! तुम्हारा परिचय क्या है?

तो मेरे प्यारे! उन्होंने कहा–प्रभु! मुझे तो निर्मोही कहते हैं। उन्होंने कहा निर्मोही तो वह होता है जिसको किसी से मोह न हो। मानो जो इस संसार से उदासीन रहता है, वह निर्मोही कहलाता है। आप अपने को निर्मोही कैसे उच्चारण कर रहे हो? उन्होंने कहा–प्रभु! मेरा नाम तो निर्मोही है। तो मुनिवरो! उन्होंने कहा–तो तुम्हारे पिता का नामोकरण क्या है? उन्होंने कहा–मेरे पिता का नाम भी निर्मोही हैं। अरे, तुम कैसे राजा के पुत्र हो, राजा का नाम भी, पितर भी निर्मोही है तुम भी निर्मोही हो। मेरे विचार में यह नही आ रहा है। परन्तु तुम्हारा नगर, राष्ट्र क्या है? उन्होंने कहा–मेरे राष्ट्र का नाम भी निर्मोही है। अब ऋषि को बड़ा आश्चर्य हुआ कि यह राजकुमार तो बड़ा विचित्र है। मानो नगरी का नाम भी निर्मोही और तुम्हारी माता ब्रह्मे, माता का नामकरण? तो वो भी निर्मोही है।

तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने कहा–हे राजकुमार! निर्मोही तो मानो उसे कहते हैं जिसको किसी से मोह नहीं हो अथवा कर्तव्य का पालन करने वाला हो। परन्तु मोह न हो, उसे निर्मोही कहते है। उन्होंने कहा–प्रभु! आप मानो परीक्षा लीजिए

तो मेरे प्यारे! देखो, राजा के उस राजकुमार के वाक्यों को पान करके महर्षि पनपेतु मुनि महाराज ने अपने आसन को त्याग दिया और अपने आसन को त्याग करके बेटा! भ्रमण करते हुए वे मानो देखो, अयोध्या पुरी में आए। हमारे यहाँ भगवान् मनु ने उस राष्ट्र का निर्माण किया था तो सबसे प्रथम अयोध्या का निर्माण किया था। बेटा! भगवान् मनु के काल में, भगवान् मनु ने जब अष्ट चक्रा नौ द्वारा वाली अयोध्यापुरी का निमार्ण किया था तो मुनिवरो! समुद्र कुछ ही दूरी पर था। मानो समुद्र निकटतम कहलाता था।

तो मेरे प्यारे! देखो, उस अयोध्या में वास करने वाला मनुवंश मानो देखो, अपनी परम्पराओं का पालन कर रहा था। जो वेद का वाक् राष्ट्र के लिए, उद्घोष कर रहा था उसी राष्ट्र का वो पालन कर रहे थे। तो मेरे प्यारे! देखो, वह राजं ब्रह्माः जब ऋषि ने वहाँ से भ्रमण किया तो बेटा! वे अयोध्या में पहुँचे। राजा ने दृष्टिपात किया कि आज तो ऋषि का आगमन हो रहा है तो मेरे प्यारे! देखो, राजा ने अपने आसन को त्याग दिया। राजा ने कहा–आइये, भगवन! विराजिए। ऋषि विराजमान हो गए और विद्यमान होकर के ऋषि ने कहा–सम्भव ब्रह्मे राजा ने कहा–कहो, भगवन्! तुम्हारा आगमन कैसे हुआ है? उन्होंने कहा–प्रभु! मैं इसलिए आया हूँ कि तुम्हारा जो राजकुमार है, निर्मोही नाम का उन्होंने कहा–भगवन्! कह देते है। है तो नहीं, परन्तु उच्चारण कर देते है। उन्होंने कहा–मेरे आश्रम में वो विद्यमान है। दण्डक वनों में, आप उसके शव को लाकर के, उसके शव को मानो व्याघ ने उसके मानो दो भाग कर दिए है। वो मानो सिंह तो चला गया। अब उसका शव रह गया, आप उसको यहाँ अग्नि में, उसका दाह कर दीजिए।

आभा में गति

मेरे प्यारे! राजा ने जब इन वाक्यों को पान किया तो राजा ने कहा भगवन्! आप मेरे अतिथि हैं क्योंकि जो बिना समय कोई बुद्धिमान किसी गृह में, आश्रम में आता है, राजा के यहाँ आता है तो अतिथि कहलाता है। आप भगवन्! अतिथि है। मेरे यहाँ कुछ जल पान कीजिए, मैं जलपान कराने के लिए मानो आप का स्वागत कर रहा हूँ। ऋषि ने कहा–कि मेरे वाक् का यह उत्तर नहीं है। जो मैंने प्रश्न किया है। राजा ने कहा–प्रभु! मैं इसका उत्तर यह देने जा रहा हूँ मानो वो जो व्याघ ने मानो शरीर के दो भाग कर दिए हैं वह शरीर तो मानो अब व्याघ का भोजन है, वह सिंह का भोजन है। सिंह का भोजन होने से मानो देखो, उसका आहार बन गया है। वह उसके उदर की क्षुदा को शान्त कर सकेगा, प्रभु! आप किस चिंता में मानो चिंतित हो रहे हैं। यह जो प्रभु का राष्ट्र है, यहां संसार में प्रत्येक जो प्राणी है, वह मानो अपनी–अपनी आभा में गति कर रहा है। अपनी–अपनी प्रतिभा में वे प्रतिभाषित हो रहा है। तो प्रभु! आइए, आप मानो कुछ जल पान कीजिए

मेरे प्यारे! राजा का वही विषय रह गया कि आप कुछ अन्न इत्यादि पान करें, जलपान करो प्रातःराश करो

ऐसा मानो जब राजा ने उदगीत गाया तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने वहां से गमन किया। राजा बोले प्रभु! मेरा कर्तव्यवाद रह गया है। भगवन्! आप जल तो पान कीजिए। मेरे प्यारे! उन्होंने कुछ जल को पान किया और उन्होंने वहाँ से गमन किया। भ्रमण करते हुए उन्होंने विचारा कि पिता को तो पुत्र से मोह मानो विशेष नहीं होता है, चलो, अब मैं माता के द्वार पर जाता हूँ। जब माता के द्वार पर पहुँचे तो माता ने मानो आसन दिया और उन्होंने कहा–आइए भगवन्! ऋषिवर विराजिए। उन्होंने चरणों को स्पर्श किया और चरणों को स्पर्श करके बोली–कहिए, भगवन! आप का कैसे आगमन हो रहा है? उन्होंने कहा–हे देवी! हे पुत्री! मानो तुम्हारे अमृतं ब्रह्माः लोकां हिरण्यं रथं देवात्वां ब्रह्माः उन्होंने कहा कि मेरे आश्रम में तुम्हारा एक राजकुमार विद्यमान है उसके मानो देखो, सिंह ने उसके शरीर के दो भाग कर दिए हैं और मैं उसी कल्पना में कल्पित हो रहा हूँ कि तुम राजकुमार को लाकर के उसका दाह कर दो। उन्होंने कहा–प्रभु! आप आइऐ, कुछ जलपान कीजिए, कुछ चयन कीजिए और भगवन्! यह भी क्रियाकलाप सब होता रहेगा। मेरे प्यारे! माता ने जब यह कहा–तो ऋषि ने कहा हे देवी! तुम्हारे गर्भस्थल में एक शिशु मानो किसी काल में पनपा है। देवताओं ने उसकी रक्षा की है और मानो तुम उस समय उसे वसुन्धरा के रूप में मानो अपने में वसा रही थी। क्या तुम उससे इतना स्नेह नहीं कर रही हो कि उसके शरीर को व्याघ ने दो भाग कर दिए हैं उसका मानो दाह संस्कार करो।

उन्होंने कहा–प्रभु! आप को यह प्रतीत है कि हमारे यहाँ दर्शन क्या कहता है? एक वेद का मन्त्र ये कहता है आत्मं ब्रह्माः आत्म लोकां ब्रह्मे पंच क्रियाणं बृहि वृतां देवाः बेटा! वेद के ऋषि ने कहा वेदां ब्रह्मे जब ऐसा वेद के ऋषि ने पूर्व कहा–तो देवी ने नोदा में से मन्त्रों का उच्चारण किया और उन्होंने कहा–हे भगवन्! आपको यह प्रतीत है कि जब व्याघ ने उसके दो भाग कर दिए और आत्मा अपने चित्त के मण्डल को लेकर के मानो वायु मण्डलों में प्रवेश कर गया है या अपने चित्त के मण्डल में चला गया है अब भगवन्! वो पंच महाभौतिक जो पिण्ड रह गया है जो मानो पिण्ड आत्मा से कटिबद्ध हो रहा था जो मानो पंचमहाभूत जिसमें अपने क्रियाकलापों में परिणत हो रहे थे। वह मानो पंचमहाभूतों को प्राप्त हो गया है और आत्मा मानो चित्त के मण्डल में से, अपने संस्कारों को लेकर चला गया है। तो हे प्रभु! मैं किस शरीर का दाह कर सकती हूँ? मुझे कौन–सा अधिकार रह गया है भगवन! कि मानो मेरा तो कोई अधिकार ही नही है। वो मानो सिंह का भोजन हो गया है। आत्मा अपने कर्म बन्धन से, अपने संस्कारों को लेकर के अन्तरिक्ष में, चित्त मण्डल में प्रवेश कर गई है। तो भगवन! मेरा कौन सा अधिकार है।

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि मौन हो गया। ऋषि से कोई उत्तर नहीं बन पाया। उन्होंने कहा–देवी! मैं तो यही कहता था कि तुम्हारा इकलौता पुत्र है। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने विचारा कि ये मम ब्रह्माः लोकां हिरण्यं मानो देखो, माता को भी मोह नहीं रहा।

चलो, अब पत्नी के द्वार पर चलते हैं। मेरे प्यारे! वे पत्नी के द्वार पर पहुँचे पत्नी ने भी ऋषि का उसी प्रकार मानो स्वागत किया और कहा–आइए, भगवन्! ऋषिराज विराजिए, वे ऋषिवर विराजमान हो गया मानो वो गौ–रस लेकर के ऋषि के समीप आई, उन्होंने कहा–हे देवी! पुत्री मैं गौ–रस को पान नहीं करना चाहता हूँ जब तक मेरे प्रश्नों का उत्तर नहीं बन पाएगा। उन्होंने कहा–भगवन्! आप प्रश्न कीजिए। मानो जो आप कहेंगे मैं उद्गीत गाऊँगी। उन्होंने कहा–तो देवी! तुम्हारा पति मानो मेरे आश्रम के निकट उसके दो भाग व्याघ ने कर दिए हैं वह आत्मा से सुन्न हो गया है। तो हे पुत्री! मेरी इच्छा यह है कि उसका अपने यहाँ उसका दाह संस्कार किया जाये।

प्रभु की देन

मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा–भगवन्! आप किस चिंतन में लग गए हैं। आज आप किस ममता में आ गए है। हे प्रभु! देखो, वो मेरा पति था मानो पति तो सबका एकेश्वर वो चैतन्य देव माना गया है। मानो इस शरीर को जो प्राण देता है और प्राण के भी मानो देखो, दस भाग बनाकर के इस शरीर रूपी पिण्ड को स्थिर कर रहा है। हे भगवन्! जो प्राण है, वही अपान है जो अपान है वही उदान है, और जो उदान है वही समान है और जो समान है वही मानो देखो, वह व्यान कहलाता है। हे प्रभु! वही नाद है, वही देवदत्त है ये जो मानो दसों प्राणों की जो प्रवाह से गति हो रही है प्रभु! ये तो प्रभु की देन है। ऋषिवर! मानो देखो, पाँच ज्ञानेद्रियाँ हैं जिसमें ब्रह्माण्ड समाहित हो जाता है। मानो प्रत्येक इन्द्रियों में ब्रह्माण्ड की कृतिका मुझे दृष्टिपात आती है भगवन! तो हे मेरे प्रभु! मानो देखो, वह जो ब्रह्मे ब्रह्मा वो जो मानो देखो, जिसे मेरा पति कहते हो, मैं तो अपने प्रभु के आँगन में जाने के लिए तत्पर हो रही हूँ जहां मन और बुद्धि चित्त, अहंकार ये मानो चित्त की दशा कहलाते हैं। मन की ये पोथी कहलाती है। हे भगवन! देखो, इसी में यह शरीर निहित रहता है। आत्मा चित्त के मण्डलों को लेकर के चला गया है। हे प्रभु! आत्मा अखण्ड है, आत्मा निर्व्यय, आत्मा महान और पवित्रतम है। मानो देखो, यह आत्मा, कहलाती है। तो प्रभु मैं जानना चाहती हूँ मैं किसका दाह करूँ? मैं किस शरीर को लेकर के, वो शरीर तो क्योंकि सिंह में भी पंचमहाभूत है वो शरीर भी पंचमहाभूतों से गुथा हुआ है। वो उसका भोज्य बन गया है।

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि निरूत्तर हो गया। ऋषि ने कहा–अरे, मैं कैसे विचित्र मानो देखो, इस कुटुम्ब में आ गया हूँ। ये कैसा विचित्र है जो ब्रह्म की वार्ता ही मुझे उच्चारण कर रहा है। मेरे प्यारे! देखो, अब ऋषि ने विचारा अरे, राजा, उसकी पत्नी के द्वार से मंगलं ब्रहे मानो देखो, वे भगिनी के द्वार पर पहुँचे। भगिनी ने भी उसी प्रकार उनको आसन दिया और कहा–कहिए भगवन्! आपका आगमन कैसे हुआ? उन्होंने कहा–हे पुत्री! तुम्हारा एक विधाता है निर्मोही नामक, मानो वो मेरे आश्रम के निकट व्याघ ने उसके दो भाग कर दिए। मैं इसलिए आया हूँ कि उसका मानो दाह संस्कार किया जाये। अग्नि में प्रवाह कर दिया जाये।

मेरे प्यारे! उन्होंने कहा प्रभु! आप क्यों चिंतित हो रहे हैं? वह तो भगवन! शरीर का भोज्य है। शरीर को प्राप्त हो गया है। आत्मा संस्कारों को लेकर के चित्त के मण्डल में चला गया है। तो हे प्रभु! मानो रहा ये कि मैं उस शरीर को, अग्नि में दहा कर दूँ तो हे प्रभु! वह तो भोज्य बन गया है। मानो देखो, निर्व्यय आत्मा अपने में मानो चेतना से, ज्ञान से युक्त रहती है और प्रभु के आँगन के लिए वो सदैव मानो देखो, पिपासी बनी रहती है। तो आज मानो देखो, मैं दाह किसका करूँ?

मेरे प्यारे! देखो, भगिनी ने भी यही उत्तर दिया। अब ऋषि अपने में मानो मौन हो गए, विचारने लगे कि अब मैं क्या करूँ। विचारते हुए उन्होंने मेरे प्यारे! देखो, राष्ट्र के वरिष्ठ पुरुषों की एक सभा हुई और राष्ट्र के मानो प्रतिष्ठित महानुभाव उस सभा में आए और सभा में मुनिवरो! देखो, ऋषि का आसन

ऊर्ध्वा में बन गया। प्रजाओं ने कहा–कहो भगवन्, हे ऋषिवर! आप हमें क्या आज्ञा देना चाहते है? उसी आज्ञा का पालन करेंगे। उन्होंने कहा–हे प्रजाओं! मानो देखो, तुम्हारे राजा का एक राजकुमार निर्मोही नाम का है, मेरे आश्रम में व्याघ ने उसके दो भाग कर दिए है। मेरी इच्छा यह है कि तुम उसको लाकर के उसका दाह कर दो। ये तुम्हारा कर्तव्य है क्योंकि राष्ट्र तुम्हारे लिए महान है। राजा तुम्हारे लिए महान और प्रजा तुम उसके लिए महान हो। इसलिए तुम उसका इतना क्रियाकलाप करो।

मेरे प्यारे! प्रजाओं ने कहा–धन्य है, प्रभु! मानो आप ब्रह्मवेत्ता हैं, आपकी आज्ञा हमें शिरोधार्य है हम उसे स्वीकार करते हैं। परन्तु हम ये जानना चाहते हैं कि भगवन्! सिंहराज का भोजन क्या बनेगा? जब मानो उसे हम दाह करेंगे तो सिंहराज का भोजन क्या होगा? क्योंकि वह चेतना, वो राजा का पुत्र तो उस प्रकार हमारे समीप नहीं रहेगा क्योंकि वह पुत्र तो आत्मा, क्योंकि उसको हम जानते नहीं, न राजा जानता है। वह आत्मा तो चित्त के मण्डल में, संस्कारो के साथ में इन्द्र नाम की वायु में प्रवेश हो गई है मानो देखो, वृत्तिका नाम की वायु में वो गमन कर गई है और वह चित्त के मण्डल में चित्रित हो गई है।

तो हे! प्रभु! वह सिंहराज का भोजन रह गया है। हे प्रभु! हम जानना चाहते है कि ऐसा हमसे क्यों कराते हो, उसके मूल में, हम जाना चाहते है।

मेरे प्यारे! ऋषि ने कहा कि तुम्हारा ये कर्तव्य नही बनता है? उन्होंने कहा–हमारा कर्तव्य तो मानो तब तक है जब तक मानो उसकी संरक्षणता में हम रहते है। जब आत्मा चित्त के मण्डल में चला गया। उस चित्त के मण्डल को हम नही जानते है। हमारे पूर्वज कहते है कि मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार मानो ये चतुष अन्तःकरण कहलाता है और वही मानो देखो, चित्त का अन्तरिक्ष में मण्डल बन जाता है। आन्तरिक और बाह्‌य मानो देखो, दोनों का अपने में जब समन्वय किया जाता है तो मेरे पुत्रो! एक महानता की ज्योति अपने में ज्योतिवान् होने लगती है।

तो हे ऋषिवर! आपने तो बहुत अध्ययन किया है। बहुत अनुष्ठान किया है जब मानो देखो, प्राण के रूप में हम प्राण को दृष्टिपात करते है तो मानो देखो, मन को जब प्राण में सम्मलित कर देते है। प्राण में उसका समावेश कर देते हैं तो प्रभु! ये जो दृष्टिपात आने वाला जगत है ये मानो शून्यता को प्राप्त हो जाता है वह शून्य बन जाता है। जब ये शून्य बन गया तो प्रभु! आप मुझे उत्तर दीजिए कि वह जो शून्य बिन्दु है आज हम देखो, उसके समीप कैसे जायें और उस शून्य बिन्दु का हम करेंगे क्या?

भिन्न–भिन्न आभा में शरीर

तो मेरे प्यारे! देखो, यह तो संसार का व्यापार है। संसार की प्रतिभा कहलाती है। भिन्न–भिन्न प्रकार की आभा में यह शरीर अपने में देखो, कटिबद्ध होता रहता है। परन्तु अन्तिम चरण सीमा यह है कि यह अपने–अपने स्वरूप में प्रवेश कर जाता है। अग्नि, अग्नि में प्रवेश कर गया। जल, जल में चला गया, वायु, वायु में चला गया और अन्तरिक्ष, अन्तरिक्ष में और मानो पृथ्वी, पृथ्वी में प्रवेश हो जाती है। तो हे प्रभु! अब जो इसको सुगठित करने वाली चेतना है अथवा आत्मा है वो मेरे प्रभु! मानो देखो, चित्त के मण्डल में अपने कर्म बन्धन के साथ में रमण कर गया है। तो हे प्रभु! मैं जानना चाहता हूँ भगवन्! कि हम किसका दाह करें? अग्नि में किसका प्रवेश करें? वो सिंह का भोजन है। सिंह का भोजन रहने दीजिए, और आप भी प्रभु के अनुष्ठान में संलग्न हो जाइए।

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि आश्चर्य में हो गए और ऋषि ने बेटा! वहां से गमन किया। प्रजा के वाक्यों को पान करते हुए और भ्रमण करते हुए महर्षि पनपेतु मुनि महाराज बेटा! देखो, अपने आश्रम में आ गए और वह जो राजकुमार विद्यमान था उन्होंने कहा–कहो, भगवन! आप मेरी नगरी का भ्रमण कर आए हैं मेरे जो पितर हैं उनके आत्मीय दर्शनामृतो का पान कराते हुए मैं बड़ा आश्चर्य में हूँ और में अपने में अहो भाग्य स्वीकार करता हूँ कि एक ऋषि का आगमन, मेरे पिता को दर्शन दिये, माता को दर्शन दिये, मानो पत्नी और सर्वत्र कुटुम्ब को परिचय दिया। हे भगवन! मेरा अन्तर्रात्मा तो बड़ा प्रसन्न है। हे भगवन! आपने क्या पाया? उन्होंने कहा–हे राजकुमार! तुम भी निर्मोही, तुम्हारे पिता निर्मोही, माता निर्मोही, पत्नी निर्मोही, सर्वत्र मानो राष्ट्र का राष्ट्र निर्मोही।

माता का कर्तव्य

तो मेरे प्यारे! देखो, निर्मोही का अभिप्राय हम अपने कर्तव्यवाद का पालन करे। उससे मोह नहीं करें। जैसे मेरी प्यारी माता के गर्भ से मानो पुत्र का जन्म होता है और पुत्र का जैसे जन्म हुआ माता अपने कर्तव्य का पालन कर रही है। लोरियों का पान करा रही है और उसे शिक्षा दे रही है, हे बालक! तुझे ब्रह्मवेत्ता बनना है। हे बालक! तुझे संसार में मोह नहीं करना है। हे बालक! तुझे मेरे गर्भाशय को ऊँचा बनाना है। जब माता इस प्रकार का उपदेश अमृतमयी देती रहती है। माता मल्दालसा की भाँति तो बेटा! वे बालक ब्रह्मवेता बन जाते है, वे ब्रह्म में निष्ठित हो जाते है। वे ब्रह्म की आभा में रत हो जाते हैं। मेरे प्यारे! देखो, वो माता अपने कर्तव्य का पालन कर रही है।

मेरे प्यारे! देखो! शिशु माता के गर्भस्थल में विद्यमान है, विद्यमान होते ही माता जब यह चिन्तन करती है कि मेरे गर्भ में शिशु आ गया है, शिशु की कौन रक्षा करता है? मेरे प्यारे! देखो, उसे अमृत चाहिए, उससे प्रकाश भी चाहिए, उसे प्रकाश भी चाहिए मानो देखो उसे अमृतमयी प्रकाशमयी ऊष्णता भी चाहिए। मेरे प्यारे! उसे मानो गुरुत्व भी चाहिए। ये कहाँ से प्राप्त होगा? मेरे प्यारे! देखो, जब माता यह चिन्तन करने लगती है, तो गम्भीर मुद्रा में परिणत हो जाती है। माता अरून्धती की भाँति बेटा! विचारने लगती है अरे, अमृत का स्रोत तो मानो ये चन्द्रमा है जो अमृत दे रहा है और प्रकाश का जो स्रोत है वो मानो देखो, सूर्य दे रहा है। अग्नि ऊष्ण बना रही है। मेरे प्यारे! देखो, पृथ्वी गुरुत्व दे रही है और जल आपोमयी ज्योति प्रदान कर रहा है वायु, प्राण दे रहा है। अन्तरिक्ष, अवकाश दे रहा है अरे, कैसा विचित्र है मेरे प्रभु का विज्ञान।

मेरे प्यारे! भोली माता नहीं जानती कि शिशु गर्भस्थल में है, कौन अमृत दे रहा है और तारामण्डलों की बेटा! एक माला बनी हुई है। जिस माला को वो अपने में धारण कर रहा है जिस माला को मुनिवरो! देखो, माला एक बनाकर के और वह पुत्र अपने में मानो शिशु अपने को अहोभाग्य स्वीकार कर रहा है। माता अपने में कृतज्ञ बन जाती है। अरे, मैं किसके लिए ममता करूँ। अरे, यह तो देवता इसके अंग संग विद्यमान है। देवता ही गर्भस्थल में निर्माण कर रहे थे। वही अमृत का स्रोत है परन्तु देखो, निर्माणवेत्ता निर्माण कर रहा था। माता जब चिन्तन करती है कि बालक का जब निर्माण हुआ तो मानो देखो, लघुमस्तिष्क का निर्माण हुआ। लघु मस्तिष्क में एक ओर लघु मस्तिष्क है एक हृदयावृत्त मस्तिष्क है एक मानो रेणवृत्तिका मस्तिष्क है नाना मस्तिष्कों की वृत्तियाँ बन गई। मेरे प्यारे! देखो, बुद्धि हृदय में रहती है। कहीं मस्तिष्क में मानी है परन्तु देखो, ये भी बुद्धि, मेघा, ऋतम्बरा, प्रज्ञावी बन करके रहती है। हे माता! तू नहीं जानती इस विज्ञान को।

हृदय के दो प्रकार

मेरे प्यारे! देखो, हृदय भी दो प्रकार के माने गए है। एक नाभि केन्द्र के ऊर्ध्व भाग में है और एक मस्तिष्क में विद्यमान रहता है। मेरे प्यारे! जब निर्माण किया गया तो बेटा! नस नाड़ियों के क्षेत्र में जब माता प्रवेश करती है विज्ञान के वांगमय में, आयुर्वेद की दृष्टि से तो बेटा! देखो, (72,7210202) बहत्तर करोड़ बहत्तर लाख दस हजार दो सौ दो नाड़ियों का मानो यह समूह दृष्टिपात आने लगता है। मेरे पुत्रो! माता नहीं जानती कौन निर्माण कर रहा है,

कौन विश्वकर्मा है, जो निर्माण कर रहा है। मेरे पुत्रो! देखो, माता के गर्भ में निर्माण हो रहा। हे माता! तू जब कर्तव्य का पालन करती है तो वे प्रभु की प्रतिभा है। वह तो प्रभु की कृतिका है, माता तू किससे मोह कर रही है। वह कर्तव्य का जब पालन करती है तो कहती कि पालना करना मेरा कर्तव्य है, मुझे परमात्मा ने, विष्णु का स्वरूप दिया है। मुझे मानो पालना का अधिकार दिया है। मेरे प्यारे! मुझे मृत्यु का अधिकार नहीं दिया है। क्या, प्रभु की विचित्रता है बेटा! माता पालना कर सकती है परन्तु देखो, उसको मृत्यु नहीं दे सकती। मेरे प्यारे! क्योंकि पालना उसका कर्तव्य है मृत्यु अनाधिकार चेष्टा है।

पाप का मूल

मेरे पुत्रो! देखो, अनाधिकार चेष्टा के लिए वही पाप का मूल कहा है। दर्शनकारों ने उसी को बेटा! पाप का मूल कहा है। पाप के मूल में न जाइए कर्तव्यवाद के मूल में चले जाइए। मेरे प्यारे! देखो, इस आभा को लेकर के विचित्रवाद को लेकर के वेद का ऋषि अपने में बेटा! बड़ी ऊँची उड़ाने उड़ रहा है। उड़ाने उड़ता हुआ अपने में महानता का दर्शन करा रहा है। मेरे प्यारे! देखो, एक मानव याज्ञिक बना हुआ है, सुगन्धि दे रहा है, पवित्रता दे रहा है। परन्तु अपवित्रता को वो अपने से दुरिता कर रहा है।

आओ मेरे प्यारे! आज का यह विचार क्या कह रहा है कि हम परमपिता परमात्मा की महती को विचारते रहे। परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान के अनुपम क्षेत्र में जाते हुए, मेरे पुत्रो! देखो, हम अपने में निर्मोही बनें, कर्तव्य का पालन करें और मुनिवरो! देखो, ज्ञान और विवेक के साथ में अपने जीवन को व्यतीत करें। अपने कर्तव्यवाद में जो मानव रत रहता है। बेटा! वही मानो महान बनता है वो जिज्ञासु बनता है कर्तव्यवादी बनकर के इस संसार को और आत्मा को अपने को ऊँचा बनाता है।

पार होने का आधार

तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि और राजकुमार दोनो का संवाद; अब ऋषि ने कहा–धन्य है राजन्! मेरे प्यारे! राजकुमार ने वहाँ से प्रस्थान किया। तो मेरे प्यारे! विचार क्या है, विचार यह दे रहा था हे माता! तू ममत्व को धारण करने वाली है परन्तु देखो, तेरा पुत्र तो मृत्यु से पार होना चाहता है। मानव! तू पार होना चाहता है तो कर्तव्यवादी बनो और मोह, ममता में विशेषता में परिणत न रहकर के अन्धकार में न जाओ। प्रकाश में चले जाओ। प्रकाश में जीवन है और अन्धकार में मेरे प्यारे! मृत्यु मानी गई है। इसीलिए प्रकाश को अपनाने का प्रयास करना चाहिए। प्रकाश क्या है? जो अपना अन्तरात्मा स्वीकार करता है। जो अन्तरात्मा मानो देखो, महानता का दर्शन कराता है। मेरे प्यारे! देखो, वह अद्रोत, हे माता! न तो तू आत्मा को जानती है यदि आत्मा को तू अपना पुत्र कहती है तो आत्मा को तू जानती नही है परन्तु यदि इस शव को, इस मानव के शरीर को तू पुत्र कह रही है तो वह ज्यों का त्यों निहित रहता है। परन्तु यह चेतना से रहित है।

तो मेरे प्यारे! आज का हमारा यह विचार क्या कह रहा है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए मेरे प्यारे! देखो, ऋषि अब्रहा। हमारे यहाँ वेद का पठन–पाठन, तो कहीं शिव की याचना कर रहा था। मानो कही बेटा! .....आज मैं अपने विचारों को एक मानो देखो, राष्ट्रीयता में ले गया मानो मनुवंश में ले गया हूँ। आज का विचार बेटा! अब ये समाप्त होने जा रहा है कल मुझे समय मिलेगा तो मैं तुम्हे शेष चर्चाएं कल प्रकट करूँगा आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन–पाठन

ओ३म् ब्रह्म गा याः आभ्यां देवं गताः मां ऋषि वरूणः आ पा रथं महं आपः
ओ३म् यौ सर्वाः

पारम्परिक याग चिन्तन

26.8.1986
खुर्रमपुर गाजियाबाद

जीते रहो!

देखो, मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रो का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हे प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन–पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेद–वाणी का प्रसारण होता रहता है। जिस पवित्र वेद–वाणी में, उस मेरे देव, परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा महिमावादी है और जितना भी ये जड़ जगत् अथवा चैतन्य जगत् हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वो मेरा देव दृष्टिपात आ रहा है क्योंकि जितना भी ये ब्रह्माण्ड प्रायः हमें दृष्टिपात है। मानो ये उस परमपिता परमात्मा की कृति कहलाती है अथवा उसका ये तेजोमयी जगत् हमें दृष्टिपात आ रहा है।

तेजोमयी प्रभु

जिस तेजोमयी प्रभु की याचना हमारे यहाँ परम्परागतों से ही ऋषिमुनि प्रायः अपने में अनुभव करते रहे है और विचार विनिमय करते रहे है, कि वे परमपिता परमात्मा अनुपम अथवा अनूठे है जिस अनूठे ब्रह्माण्ड मानो जिसकी रचना की और उस रचना काल में मानो देखो, वे प्रविष्ठ हो रहा है, उसी में वह ओत–प्रोत हो रहा है। कैसी महानता उस मेरे प्यारे प्रभु की है कि रचा रहा है, निर्माण कर रहा है परन्तु उसी में वो निहित रहता है अथवा उसी में विद्यमान रहता है।

याग की महानता

तो हम उस परमपिता परमात्मा की महिमा अथवा उसके गुणों का गुणवादन करते चले जायें। क्योंकि प्रत्येक मानव परम्परागतों से ही ऊँची–ऊँची उड़ाने उड़ता रहता है। आज के हमारे याग के सम्बन्ध में भिन्न–भिन्न प्रकार की प्रेरणाएँ मुझे प्राप्त हो रही है और याग के सम्बन्ध में नाना प्रकार की आभाएँ हमारे समीप आती रहती है। मैंने कई कालों में याग के सम्बन्ध में अश्वमेघ याग के सम्बन्ध में, अजामेघ याग के सम्बन्ध में और वाजपेयी और अग्निष्टोम यागों के संबन्ध में प्रायः भिन्न–भिन्न प्रकार की चर्चाएं की हैं और ये विचारने के लिए कि यागों में कितनी महानता और विचित्रता मानी गयी है। क्योंकि प्रत्येक मानव याग के सम्बन्ध में, परम्परागतों से बेटा ऊँची–ऊँची उड़ाने उड़ता रहा है।

मुझे वो काल स्मरण आता रहता है जब बेटा! महर्षि भारद्वाज मुनि के आश्रम में नाना प्रकार के यागों का चलन अथवा उसके क्रियाकलाप, उसकी प्रतिभा मानो देखो, उसमें अभ्योदय होती रही है।

महानता की ज्योति

तो आओ, मेरे प्यारे! आज का हमारा वेद मन्त्र मानो देखो, विचित्रता की वेदी के लिए प्रायः हमें बेटा! अपने में निहित हो जाना है। नाना प्रकार के यागों के संबन्ध में भिन्न–भिन्न प्रकार की चर्चाएं है और नाना प्रकार का काल्पनिक जगत् ये हमारे समीप आता रहता है। जिसके ऊपर मानव कल्पना करता रहता है और ये जो कल्पनाएँ हैं जैसे अजामेघ याग, अश्वमेघ याग और अग्निष्टोम याग वाजपेयी याग, और देवी याग, ब्रह्म याग का भी प्रायः वर्णन होता रहा है। परन्तु मुझे प्रेरणा प्राप्त होती रहती है। याग का अभिप्राय ये है कि अपने को समर्पित करना है। मानो देखो, अपने को अपने में ही दृष्टिपात करना है जिससे याग हमारे समीप एक महानता की ज्योति बन जाये।

मेरे प्यारे! देखो, हमारे यहाँ नाना प्रकार के यागों का चयन करने वाले, ऋषि मुनियों ने अपनी आभा में मानो निहितता को दृष्टिपात किया है। तो मेरे प्यारे! देखो, आज मैं परम्परागतों की भाँति मानो ऊर्ध्वा में गति करने वाले ऋषि–मुनियों के बेटा! देखो चित्रों की आभा प्रायः हमारे समीप आती रहती है। मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन कराया हमारे यहाँ यागों का चलन मानो देखो, प्रत्येक गृह में, प्रत्येक बालिका के हृदय में और प्रत्येक ब्रह्मचारियों के हृदय में बेटा! यह अग्नि सदैव प्रदीप्त रही है। जिस अग्नि के लिए बालक नचिकेता ने भी अपने आचार्य से यही प्रश्न किया था। मेरे प्यारे! माता मल्दालसा भी यही प्रश्न करती रहती थी और वह प्रभु का गुणगान गाती हुई और मुनिवरों! देखो, गर्भस्थल में जो उज्जवल आत्मा उससे वार्ता प्राय वो प्रकट करती रहती थी और अपने उद्घोष करके अपने में मानो उस ब्रह्म रूपी माला को अपने में धारण करके एक महानता का दिव्य दर्शन उसके समीप आता रहा है।

तो मेरे प्यारे! आज मैं इस संदर्भ में कोई विवेचना देने नही आया हूँ विचार–विनिमय में क्या, आज बेटा! मैंने यह वाक् कई काल में प्रकट भी किया है आज भी मुझे स्मरण आ रहा है। मेरे प्यारे! देखो, महर्षि वैशम्पायन ऋषि महाराज नाना प्रकार के यागों में लगे रहते थे। वे वृष्टि याग में मानो विशेषज्ञ माने जाते थे। महाराजा अश्वपति के यहाँ मानो याग का चलन और वृष्टियाग प्रायः होते रहते थे।

वृष्टि याग

मेरे प्यारे! देखो, वृष्टियाग का अभिप्राय यह है कि याग से मेघों की उत्पत्ति होकर के वृष्टि हो जाये। बेटा! उसी प्रकार का साकल्य उसी प्रकार का संकल्प, उसी प्रकार की धाराएं, मानव के हृदय में रहनी चाहिए। जिससे बेटा! देखो, उसको हम उपरामता की दृष्टि से दृष्टिपात कर सके।

तो मेरे प्यारे! मैं विचार विनिमय यह दे रहा हूँ मुनिवरो! देखो, महर्षि वैशम्पायन एक समय बेटा! महाराज अश्वपति के यहां याग में से पधारे। जब याग में से आये तो बेटा! देखो, वह मध्यम ब्रह्माः सांयकाल का समय था। बेटा! नोदा में से मन्त्रों का अध्ययन करने के पश्चात् वे मुनिवरो! देखो, अपने में चिंतन करने लगे और उसी चिंतन में वे निन्द्रा में तल्लीन हो गए। जब निद्रा की गोद में हो गए, तो मुनिवरो! देखो, मध्यरात्रि में जब निद्रा से जागरूक हुए तो वे वही मन्त्र पुनः से स्मरण आ गए और स्मरण आते ही वे चिंतन करने लगे। वेद मन्त्र कहता है चित्रं भवितां देवाः द्यौ लोकाः यज्ञं भविते ब्रह्माः वेद के आचार्य ने अपने में नोदा से मन्त्रों का अध्ययन करते हुए उन्होंने ये विचारा कि वेद मन्त्र यह कहता है कि यज्ञमान का रथ बनकर के द्यौ लोक को जाता है। वो द्यौ–लोक वाला रथ कैसा है? मैं उस रथ को दृष्टिपात करना चाहता हूँ।

द्यौ–लोक कला रथ

मेरे प्यारे! देखो, रथ के ऊपर विचार विनिमय करने लगे। ऋषि को विचार करते हुए बहुत मानो समय हो गया। रात्रि व्यतीत हो गई, निन्द्रा से जागरूक, क्या मानो देखो, सूर्योदय हो गया। सूर्य के उदय होने पर मेरे प्यारे! देखो, वो चिन्तन में लगे रहे। निकटतम ही महर्षि विभाण्डक मुनि का आश्रम था। विभाण्डक मुनि महाराज उनके समीप आए विभाण्डक मुनि ने कहा–कहो भगवन! आप कैसे शांत मुद्रा में है। आप कैसे आसन को नहीं त्याग रहे है? उन्होंने कहा–ऋषिवर! मैं इसके ऊपर चिन्तन कर रहा हूँ कि मानो वेद का मन्त्र कहता है कि यजमान ऋत्विजों मानो देखो, वो यागां ब्रहे वह द्यौलोक में उनके चित्र प्रविष्ट हो जाते है। तो मैं उन चित्रों को दृष्टिपात करना चाहता हूँ।

मेरे प्यारे! इसी चिंतन में महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज भी विद्यमान हो गए। मानो कुछ समय देखो, अग्रतम कुछ ऋषि मुनियों का एक समाज भ्रमण करते हुए मेरे प्यारे! देखो, जिसमें महर्षि प्रवाहण महर्षि शिलक, महर्षि दालभ्य महर्षि रेणकेतु, महर्षि श्वेताश्वेतर, महर्षि सोमभानु मेरे प्यारे! देखो, श्वेतकेतु, इत्यादि ऋषि मुनियों का एक समाज जिसमें बेटा! ब्रह्मचारी सुकेता, ब्रह्मचारी कवन्धी, ब्रह्मचारी रोहिणीकेतु, ब्रह्मचारी यज्ञदत्त, ब्रह्मचारी अर्धभाग, महर्षि अश्वर मुनि महाराज बेटा! देखो नाना ऋषि–मुनियों का एक समाज भ्रमण करते हुए महर्षि वैशम्पायन मुनि के आश्रम में विराजमान हो गए। उन्होंने कहा–कहो ऋषिवर! तुम्हारा क्या विचार चल रहा है? उन्होंने कहा प्रभु! हमारा यह विचार चल रहा है कि हम ब्रह्मे यागां बृहि वेद का ऋषि कहता है कि यजमान का रथ बनकर के द्यौ–लोक में जाता है तो प्रभु हमारी इच्छा है कि हम उस द्यौ–लोक वाले रथ को दृष्टिपात करना चाहते है। मैं मानो रथ का, रथी बनना चाहता हूँ।

अयोध्या में याग

मेरे प्यारे! देखो, विचार विनिमय होता रहा। दर्शनों से, वेद मन्त्रों से वो घटित हो रहा है। वेद मन्त्र उसको घटित कर रहा है। परन्तु देखो, वेदां ब्रह्मवाचो अव्रहा वाचन्नमं व्रहे कृतं लोकाः मेरे प्यारे! देखो, इसी चिन्तन में, इसी विचार में जब ये गतियाँ उनके हृदयों में प्रविष्ट होने लगी तो मुनिवरो! महर्षि विभाण्डक मुनि ने एक वाक् कहा कि प्रभु! मेरे विचार में तो यह आता है कि निकटतम आसन मानो देखो, अयोध्या में प्रवेश करते हैं और अयोध्या में भगवान् राम से एक याग का आयोजन कराएंगे और जब मानो इसका निर्णय हो सकेगा।

मेरे प्यारे! देखो, यह विचार उनके हृदय में समाहित हो गया। मुनिवरो! सांयकाल का समय हो गया। सब ऋषि मुनियों का एक समाज बेटा! वहां से गमन करता है, भ्रमण करते हुए मुनिवरो! देखो, रात्रि में महर्षि श्वेतावाचुके मुनि महाराज के आश्रम में विराजमान हुए वाचुके मुनि महाराजा ने उनका स्वागत किया। अन्न इत्यादियों से मानो देखो, कन्दमूलों से उनका अतिथि किया और प्रातः कालीन मानो वहाँ से उन्होंने गमन किया और भ्रमण करते हुए बेटा! देखो, अयोध्या में प्रवेश हो गए। मानो देखो, भगवान् राम के यहाँ प्रातःकालीन याग होता और याग के पश्चात् मानो राम की उपदेश मंजरी प्रारम्भ होती रहती थी।

भगवान् राम की उपदेश मंजरी

तो मेरे प्यारे! देखो, जब वे पहुंचे तो राम की उपदेश मंजरी प्रारम्भ हो रही थी। और उन ऋषि–मुनियों के जो आसन थे वे यज्ञशाला में भिन्न–भिन्न रूपों में विद्यमान थे। कुछ ब्रह्मचारियों के, कुछ ब्रह्मवेत्ताओं के, कुछ ब्रह्मनिष्ठों के मानो वे अपने–अपने आसनों पर विद्यमान हो गए। मेरे प्यारे! भगवान् राम का ये उपदेश चल रहा था। याग के पश्चात् कि हे राज, राष्ट्रवेताओं! मानो देखो, वेद का मन्त्र और याग यह कहता है कि राजा के गृह में याग होना चाहिए और वह याग तीन रूपों में होना चाहिए। मानो देखो, ऋण से अवऋण होने के लिए याग जैसा संसार में कोई दूसरा क्रियाकलाप नहीं माना गया है। भगवान् राम की उपदेश मंजरी प्रारम्भ हो रही थी–कि हे राष्ट्रवेताओं, हे राष्ट्र के कर्मवेत्ताओं! तुम्हें देखो, इस अपने अयोध्या राष्ट्र को ऊँचा बनाना है। बहुत

समय हुआ है जब मानो अयोध्या में विकृत्तियाँ आयी थी। महाराजा सगर से लेकर के ये कुरीतियाँ आनी प्रारम्भ हुई। मानो देखो, अपने मान, अपमान के लिए मानव ने मानव के प्राणों को हताहत किया है।

मानो देखो, मेरे हृदय में यह आशंका है कि हमारा अयोध्या मानो स्वर्ग और महान बने क्योंकि महाराज असमंजस के यहाँ भी मानो देखो, महर्षि कपिल मुनि के यहाँ भी नाना प्रकार की मानो विकृतियों का अभ्योदय हुआ। परन्तु देखो, इसी प्रकार, महाराजा भगीरथ क्या, और भी नाना राजा हुए हैं परन्तु हमारे महापिता दिलीप से लेकर के दिलीप के यहाँ गऊ इत्यादियों का पालन हुआ मानो वे धेनु और नन्दिनी के लिए अपने जीवन में मानो एक सार्थकता को लाने का प्रयास किया।

नाचिकेत अग्नि

इसके पश्चात अब हमारा जो वंशलज ये प्रारम्भ हो रहा है, इस वंशलज में मानो याग होने चाहिए। क्योंकि याग हमारे यहाँ परम्परागतों से माना गया है। महाराजा दिलीप क्या, मेरे महापिता रघु ने मानो देखो, सर्वत्र यागों के लिए द्रव्य का हूत कर दिया था और महाराजा वरतेन्तु को भी मानो देखो, इन्होंने सर्वत्र कुबेर से लेकर और देखो, द्रव्य उन्होंने प्रदान किया। आज हमारे यहाँ वही प्रतीति होनी चाहिए। प्रत्येक गृह में याग होना चाहिए, देव पूजा होनी चाहिए, प्रत्येक गृह में वेद–ध्वनि गाने वाली मेरी पुत्रियाँ होनी चाहिए, मेरे पुत्र होने चाहिए। मानो देखो, माताएं अपने में उद्गीत गाने वाली बनें। मानो देखो, ब्रह्मचर्य आश्रम में याग का मानो गाहर्पथ्य नाम की अग्नि, जो विद्या का अध्ययन कराती है जो मानो गाहर्पथ्य नाम की अग्नि जो मानव को याग में प्रेरित करती है। याग में प्रेरणा का एक स्रोत बना हुआ है। हम उस याग को जैसा वो अग्नि मानो देखो, नाचिकेतु नाम की अग्नि कहलाती। जिसके ऊपर हमें अध्ययन करना है और राष्ट्र में उसका चलन होना चाहिए। प्रत्येक राजा के राष्ट्र में, विद्यालयों में मानो देखो, याग का चलन, सुगन्धि होनी चाहिए। कहीं विचारों की सुगन्धि, कहीं साकल्य की सुगन्धि मानो प्रत्येक गृह में होनी चाहिए।

सुगन्धि में समाज

राम ने अपने कर्मवेताओं से कहा–हे राष्ट्रीय कर्मवेत्ताओं! तुम्हारे राष्ट्र में प्रत्येक गृह में मेरी पुत्रियाँ याग करने वाली हों। पुत्र यागी होने चाहिए। जिससे गृह, गृह में से सुगन्धि का प्रादुर्भाव हो जाये और सुगन्धि उत्पन्न होकर के मानो ये समाज सुगन्धि में परिवर्तित हो जाये।

तो मेरे प्यारे! देखो, राम का यह उपदेश चल रहा था, यह उपदेश मंजरियाँ प्रारम्भ हो रही थी और वे उद्गीत गा रहे थे, यह घोषणा की जाये। तो मेरे प्यारे! वो काल जब मुझे स्मरण आने लगता है तो मैं गर्व से यह कहा करता हूँ कि प्रत्येक गृह में देवपूजा मानो राम ने अपने राष्ट्र में स्थापित की, जिससे मानव ऋणों से अवऋण हो जाये और चरित्र की प्रतिभा में मानो चित्रण करता चला जाये। तो मेरे प्यारे! मुझे कुछ ऐसा स्मरण है, ऐसा मुझे भास हो रहा है वर्तमान के काल में कि राम ने यह घोषणा कराई कि याग होने चाहिए।

मेरे प्यारे! देखो, वह उपदेश मंजरी, राम की जैसे समाप्त हुई मुनिवरो! देखो, उन्होंने दृष्टिपात किया कि आज तो महापुरूषों के दर्शन हो रहें हैं। मेरे प्यारे! राम अपने याग में से उठे उपदेश मंजरी समाप्त करके, मुनिवरो! देखो, वह ऋषि–मुनियो के समीप पहुँचे और वैशम्पायन मुनि महाराज के चरणों की वन्दना करके–बोले–कि हे प्रभु! आप मुझे सूचना दे देते, मैं अपने वाहन में, इस अयोध्या में तुम्हारा आगमन होता। ये मेरा बड़ा सौभाग्य होता। परन्तु देखो, वैशम्पायन इत्यादि ऋषि–मुनियों ने एक कण्ठ से कहा–कि प्रभु! कोई वाक् नहीं मानो, हमें तो इस प्रकार आना था, विचार–विनिमय करना था।

प्रत्येक शब्द याग

उन्होंने कहा–तो प्रभु! मेरे लिए कोई आज्ञा दीजिए। तो राम से ऋषि–मुनियों ने कहा–राम! तुम्हारे यहाँ एक याग होना चाहिए। हम इस प्रकार याग के लिए आए हैं कि वेदों में यागों का बड़ा वर्णन है। यागां ब्रह्मे, मानव का एक–एक शब्द याग है। मेरे प्यारे! देखो, याग की प्रतिभा के लिए हम आए हैं।

मुनिवरो! देखो! राम ने यह स्वीकार कर लिया। स्वीकार करने के पश्चात् मेरे पुत्रो! मुझे कुछ ऐसा स्मरण है भगवान् राम ने शिल्पकारों को आज्ञा दी कि तुम यज्ञशाला का निर्माण करो। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि मुनियों को उनके कक्षों में विद्यमान कराया। अपने, अपने कक्ष में वो विद्यमान हो गए। जब अपने–अपने कक्ष में विद्यमान हो गए, तो मेरे प्यारे! देखो, यागां ब्रह्मलोकाम्। याग की रचना हो गई। साकल्य एकत्रित हो गया, मानो देखो, सब सामग्री, अवृतां मुनिवरो! देखो, वह याग के लिए सब तत्पर हो गए।

मेरे प्यारे! राम ने ऋषि–मुनियों से प्रार्थना की कि आओ, भगवन्! याग को दृष्टिपात, याग को प्रारम्भ करो। तो मेरे प्यारे! देखो, यज्ञशाला में विद्यमान हो गए। ब्रह्मवेत्ताओ का आसन मानो भिन्न है ब्रह्मवर्चोसि, ब्रह्मचरिष्यामि का आसन भिन्न है। ऋषि मुनि बेटा! महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज याग के पुरोहित बने। तो बेटा! देखो याग प्रारम्भ हो गया। जब याग का प्रारम्भ हुआ बेटा! देखो, राम ने जैसे याग का प्रारम्भ किया बेटा! देखो, अग्निहोत्र जब होने लगा तो मुनिवरो! दोनो, उसमें वही वेद का मन्त्र पुनः राम के भी स्मरण आया। वेद मन्त्र कह रहा था चित्रं रथं ब्रह्माः दिवं लोकां ब्रह्मये व्रतां देवाः वस्वश्चं ब्रह्माः मेरे प्यारे! देखो, वेद मन्त्र में उदघोष हुआ कि यजमान का चित्र बनकर के द्यौलोक को जाता है और यज्ञशाला का रथ होकर के, और यजमान का चित्र विराजमान होकर के वो द्यौ–लोक को जाता है।

मेरे प्यारे! देखो, जब यह वाक् वेद मन्त्र का स्मरण आया कि यजमान का रथ कैसे द्यौलोक में जाता है? तो मेरे प्यारे! ऋषि मुनि अपने में घटित कराने लगे। परन्तु राम ने यह घोषणा की, कि मैं प्रत्यक्ष दृष्टिपात करना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! देखो, दर्शनों से घटित हो रहा है। दर्शन घटित करा रहा है परन्तु देखो, राम स्वीकार नहीं कर रहा है।

यज्ञ में महर्षि भारद्वाज का आगमन

मेरे प्यारे! देखो, इतने में महर्षि भारद्वाज, ब्रह्मचारिणी शबरी, ब्रह्मचारी रोहिणीकेतु और व्रतकेतु मेरे प्यारे! देखो महर्षि पनपेतु इत्यादि मुनि बेटा! देखो, अपने वाहन में विद्यमान होकर के राम के यज्ञ में सम्मलित हुए। मेरे प्यारे! याग शांत है। भारद्वाज मुनि बोले–कि हे राम! तुम्हारा याग शांत क्यों हो रहा है? उन्होंने कहा–प्रभु! मेरा याग इसलिए शांत है कि वेद मन्त्र क्या कह रहा है। वेद मन्त्र कहता है कि यजमान का रथ बनकर के द्यौलोक को जाता है। मैं उस मानो देखो, रथ में विद्यमान होना चाहता हूँ। दृष्टिपात करना चाहता हूँ।

मेरे प्यारे! देखो, यह वाक् जब उन्होंने कहा तो वस्वस्तं ब्रह्मा मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने कहा–हे राम! तुम याग का प्रारम्भ करो या तुम ब्रह्मवेताओं का अपमान कर रहे हो। राम ने कहा–नहीं, भगवन्! मैं अपमान नही कर सकता। क्योंकि अपमान की मेरे में सत्ता नही है। मैं तो क्षुद्र हूँ प्रभु! मैं मानो देखो, ब्रह्मवेत्ताओं का अपमान कैसे कर सकता हूँ। क्योंकि जो वेद के मर्म को जानने वाले हैं मैं उनका अपमान नहीं कर सकता। मैं तो एक निर्णय चाहता हूँ अपने में मैं जिज्ञासु बना हुआ है।

राम ने यह वाक् उच्चारण किए तो भारद्वाज मुनि ने ब्रह्मचारिणी शबरी को और ब्रह्मचारी रोहिणी केतु दोनो को मेरे प्यारे! कहा—यंत्रों को लाया जाये। तो मेरे पुत्रो! भारद्वाज मुनि ने वाहन के द्वारा नाना प्रकार की चित्रावलियों को स्थित कराया और ये कहा कि हे राम! अब तुम अग्निहोत्र प्रारम्भ करो। मानो देखो, अग्न्याधान करो अब मैं तुम्हारे देखो, प्रश्नों का उत्तर देने के लिए तत्पर हो गया हूँ।

मेरे प्यारे! देखो, राम ने याग प्रारम्भ किया। वैशम्पायन मुनि महाराज उस याग के ब्रह्मात्व को प्राप्त हुए और भी कोई उद्गाता बना, कोई अध्वर्यु और वशिष्ठ मुनि महाराज बेटा! पुरोहित के रूप में विद्यमान हो गई। मेरे पुत्रो! देखो, वो याग मुझे स्मरण आता रहता है। पुत्रो! जब वो याग प्रारम्भ होने लगा तो मुनिवरो! देखो, भारद्वाज मुनि ने नाना प्रकार के यंत्रो को स्थिर कर दिया। और मुनिवरो! जैसे यजमान स्वाहा उच्चारण करते हैं उस स्वाहा के साथ में मानो देखो, उनके चित्र बेटा! यंत्रों में दृष्टिपात आने लगे। उन्होंने कहा—राम! यह दृष्टिपात करो देखो, नाना चित्रावलियों में तुम्हारे चित्र दृष्टिपात आ रहे हैं और तुम्हारा देखो, यजमान का रथ बन करके यज्ञशाला का रथ बनकर के अग्नि की धाराओं पर विद्यमान होकर के यह द्यौलोक को जा रहा है।

स्वाहा के साथ चित्र दर्शन

मेरे प्यारे! देखो, यंत्रो में ऋषि ने दृष्टिपात कराया तो राम बड़े प्रसन्न हुए। राम ने कहा धन्य है प्रभु! भारद्वाज मुनि महाराज ने कहा—तुम याग करते रहो। चित्रों का दर्शन करते रहो। मेरे प्यारे! स्वाहा के साथ में चित्र गतियाँ कर रहें हैं। मानो एक—एक शब्द में, मानव का चित्र विद्यमान रहता है और वो द्यौलोक में प्रवेश कर जाते हैं। विज्ञानवेत्ता अपने में, विज्ञान की उड़ाने उड़ता रहता है।

मेरे प्यारे! मुझे स्मरण है मानो जब याग प्रारम्भ हो रहा था, सम्भूति ब्रह्मं लोकां वाचन्नमं ब्रहे मेरे प्यारे! देखो, वह याग लगभग देखो, छः माह तक प्रारम्भ रहा और छः माह के पश्चात् उस याग का समापन हुआ, पूर्णता को प्राप्त हुआ। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि मुनि अपने में बड़े प्रसन्न है और वैशम्पायन ऋषि महाराज वेद के वाक् को मानो संबोधित करते हुए कहते हैं कि हे परमात्मन्! तेरा जो वेदोमयी ज्ञान है तेरा जो वेदोमयी प्रकाश है मानो वह अनुपम है। हे प्रभु! एक—एक वेद का शब्द ज्ञान और विज्ञान से गुथा हुआ है। ज्ञान और विज्ञान की प्रतिभा से प्रतिभाषित हो रहा है। मेरे प्यारे! यह प्रार्थना की और याग का समापन हो गया। याग में मुनिवरो! देखो, दक्षिणा अर्पित करने के पश्चात् ब्रह्मवत् ब्रह्मवेत्ता अपने—अपने आसन को उन्होंने गमन किया।

प्रत्येक गृह में याग

तो मेरे प्यारे! विचार विनिमय क्या, भगवान् राम ने यह कहा है कि यदि हम अपने राष्ट्र को, अपनी मानवीयता को ऊँचा बनाना चाहते हैं। मानव दर्शन को महान बनाना चाहते है। तो मानो देखो, यहाँ वेद का प्रकाश, यागों का चलन, प्रत्येक गृह में होना चाहिए। यह प्रत्येक पुत्री के हृदय में, प्रत्येक ब्रह्मचारी के हृदय में, विद्यालयों में रहना चाहिए। आचार्य जन उससे अपने जीवन को गठित करने वाले हो। राष्ट्रवेत्ता भी याग से प्रारम्भ करें अपने क्रियाकलापों को।

तो मेरे प्यारे! देखो, यह राम ने अपने राष्ट्र में घोषणा की। तो मुनिवरो! देखो, वह यागां भविते मानो देखो, चित्रावलियों में बेटा! चित्र दृष्टिपात आते है। द्यौ—लोक में मानव के शब्द मानो विद्यमान हो जाते है। मैं बेटा! इस सम्बन्ध में विशेष विवेचना देने नही आया हूँ, केवल परिचय देने के लिए, आया हूँ और वह परिचय क्या है कि हम विज्ञान के वांगमय में प्रवेश होकर के, सृष्टि के पिता ने जिस यज्ञशाला का निर्माण किया। यागां भविते लोकाम् मानव को जागरूक होकर के अपने मानवीय कर्तव्य का पालन करना चाहिए। देवपूजा में सदैव मानव को रत रहना चाहिए।

तो आओ, मेरे प्यारे! आज मैं विशेष विवेचना न देता हुआ केवल एक वेद मन्त्र की प्रतिभा में चला गया। वेद मन्त्र बेटा! देखो, चित्रं रथं ब्रह्माः यह हमारे यहाँ परम्परागतों से बेटा! क्रियाकलाप होते रहे हैं। आज का हमारा यह वाक् क्या कह रहा है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए अपने में यागां ब्रह्मे विचारों का याग करने वाले बने। मुनिवरो! देखो, विचारां अन्धनं ब्रह्मे कृताम् मानव को हर प्रकार से अपने जीवन को सुकार्यो में परिणत करना चाहिए। अब मेरे प्यारे महानन्द जी कुछ दो शब्द उच्चारण करेंगे।

महर्षि महानन्द जी

ओ३म् देवां सम्भवाः दिव्यां गतं मयाः

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अथवा मेरे भद्र ऋषि मण्डल। मेरे भद्र समाज! अभी अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव त्रेता के काल में हमें भ्रमण करा रहे थे और हमें ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे हम राम की उस यज्ञशाला में विद्यमान हो। मानो उनके जो विचार, परम्परा का जो साहित्य हमारे समीप आता है उस साहित्य के वांगमय में कितना विज्ञान है और कितनी धाराएं हैं। ऋषि मुनियों ने, अपने में कितना अनुसंधान किया है। आज वर्तमान का जो काल है, दिवस है जहाँ ये हमारी आकाशवाणी मानो प्रविष्ट हो रही थी। वहाँ एक याग को सम्पन्न किया गया। परन्तु आज मेरा अन्तर्हृदय सदैव प्रसन्न युक्त रहता है। परन्तु जहाँ प्रसन्नता में परिणत रहता है वहाँ नाना प्रकार की उदण्डता भी, इस समाज की मुझे स्मरण आती रहती है।

आधुनिक काल का जो राष्ट्रवाद है मानो राष्ट्रीय विवेचना भी प्रायः हमारे समीप आती रहती है। आज मैं राष्ट्रीयवाद या इस अपवाद विशेष में अपने विचारों को नही दूँगा। केवल यह कि यजमान के हृदय की मानो आकांक्षाओं को, उपवृत्तियों को मानो सम्भूति देने चला आता हूँ। मेरा हृदय तो सदैव यह कहता रहता है कि हे यजमान! तेरे साथ में मेरा हृदय मानो हृदय से समन्वय रहता है। हे यजमान तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, मानो देखो, याग और देवतम ये देवताओं की पूजा है और देखो, यह देवयाग कहलाता है जब यागां ब्रह्मलोकां ब्रहे वाचन्नमाः हे यजमान! तेरा द्रव्य सदैव सत् कार्यो में, सत् क्रियाकलापों में लगा रहे, ऐसी मेरी सदैव कामना रहती है और तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे।

प्रभु का रचाया हुआ याग

परन्तु मध्यकाल में यागों की प्रतिक्रियाएं बहुत क्षुद्र रूपों में परिणत हुई। जब मैं महाभारत काल के पश्चात् वाम मार्ग के युग में जाता हूँ तो वाम मार्ग का काल बड़ा विचित्र रहा है परन्तु जो नाना प्रकार के सम्प्रदाएं, नाना प्रकार की जो रूढ़ियाँ हैं, इन रूढ़ियों में यज्ञ के ऊपर बड़ा आघात होता रहा है। परन्तु यह याग प्रभु का रचाया हुआ है। वेद की उद्गीतता का गान है तो यह शांत नही होता। कोई न कोई किसी न किसी रूप में ये मानो सुगन्धि का स्वरूप बना रहता है। वर्तमान में भी बन रहा है और परम्परागतों में तो इसका चलन बहुत ही क्रियाकलापों में निहित रहा है परन्तु देखो, वाममार्ग समाज ने, इस याग के ऊपर जो आक्रमण किया तो याग को अहिंसा से हिंसा में परिवर्तित कर दिया और जैसा जिसका नामोकरण मानो वैसे ही प्राणी की इसमें आहुति देना प्रारम्भ किया। ये बड़ी क्षुद्रता रही है। ये बड़ा इस महाभारत के काल के बाद में रहा है।

देखो, इस महाभारत काल के पश्चात के काल में मैं तुम्हें इसलिए ले जा रहा हूँ। कि यागों का चलन अपने स्थान में कितना विकृत हुआ है। उस विकृतता को समाप्त करने के लिए समय, समय पर परमपिता परमात्मा याग के लिए पुण्य आत्माओं को मानो अवतरित करते रहते हैं। वह परमात्मा की प्रतिभा कहलाती है। मैं पूज्यपाद गुरुदेव से सदैव प्रार्थना करता रहता हूँ दर्शनों में दर्शनों के मर्म को जानने वाले प्रियतम मानो देखो, उनका हृदय बड़ा उदारता में परिणत रहा है। बड़ा गंभीरता का अध्ययन था। परम्पगतों में मानो देखो, यहाँ साहित्य में विकृतियाँ आई और यागों के ऊपर आक्रमण हुआ।

मानो अजामेघ में बकरी की आहुति, अश्वमेघ में घोड़े की आहुति और वाजपेयी याग में देखो, गऊ के बछड़े की आहुति मानो देखो, गौमेघ में गौ की आहुति ये कितना पामर पना आ रहा है समाज में, मानो देखो, इस समाज के लिए मैं सदैव प्रभु से, समय समय पर आत्मवेत्ताओं से यह निर्णय कराता रहता हूँ कि मानो देखो, अजामेघ में तो विजय के लिए घोषणा की गई। परन्तु वहाँ पशु की वृत्तियां नही बनाई, पामर प्रवृत्ति नहीं होनी चाहिए। वाजपेयी याग में पृथ्वी का, मेघ मण्डलों के जलों का दोनो का देखो, उन दोनों का परस्पर समन्वय होता है और इसलिए वो वृष्टि यागाम् उसके लिए याग किए जाते हैं। वह समय–समय पर होते हैं परन्तु उसमें हिंसा नहीं है। मानो देखो, अहिंसा का हिंसा में क्या समन्वय रहता है।

इसीलिए मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को यह निर्णय कराता रहता हूँ हे मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! यागों में बड़ी विकृत्तियाँ आई है। वो प्रभु की अनुपमता है परन्तु समय समय पर आज भी पर्वतीय क्षेत्रों में, आज भी कहीं मानो वो विकृतियाँ चली आ रही हैं। हे ब्रह्मणः हे बुद्धिमान! तू अपनी घोषणा को राजा तक पहुँचा कि याग में हिंसा नही होनी चाहिए, विचारों में हिंसा नहीं होनी चाहिए यजमान के।

तो मेरे परम अग्रम् पूज्यपाद गुरुदेव से मैं वर्णन करता रहता हूँ भगवन्! आभां ब्रहे आओ हम देखो, इस विचार को लेकर के विशेषता में जाना नहीं चाहते। न मैं राष्ट्रवाद की चर्चा कर रहा हूँ, न यहाँ यागों के चलन की चर्चाएँ। केवल हे यजमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, महान बना रहे अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पा रहा हूँ।

मेरे प्यारे ऋषिवर! मेरे प्यारे महानन्द जी ने अपने कुछ दो विचार व्यक्त किए कि यागों के ऊपर आक्रमण हुआ और याग अहिंसा से हिंसा में परिवर्तित हुआ और पुनः समय–समय पर वो हिंसा अहिंसा में भी परिवर्तित होता रहता है। तो बड़ा विचार प्रियतम है यजमानों के किए, पुत्र ने अपनी कामना प्रकट की है। इसके साथ ही हमारा ये वाक् अब समाप्त होने जा रहा है। आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय यह कि हमारे यहाँ यागों का बड़ा विशाल मानो विज्ञान रहा है। बड़ा विशाल इसका विश्लेषण होता रहा है। तो ये आजका वाक् अब समाप्त, अब वेदों का पठन–पाठन

ओ३म् ब्रह्मवायुः आभ्यां देवं आपो ऋषि वरूणं गृहतां आपा रथः वाचन्नमं नमः
ओ३म् श्वंजनः गतं आभ्यां रथ।

अच्छा भगवन् आज्ञा दीजिए

'होता' स्वरूप

6.1.89
मोदीनगर, गाजियाबाद

जीते रहो!

देखो, मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भाँति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हे प्रतीत हो गया, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन–पाठन किया। हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेद–वाणी का प्रसारण होता रहता है। जिस पवित्र वेद–वाणी में, उस परमपिता परमात्मा कि महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा महिमावादी है और उनका जो अनन्तमयी जगत है मानो सर्वत्र ज्ञान और विज्ञान उसमें निहित रहता है तो हम उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान की उस प्रतिभा में उड़ान उड़ने लगे, जिससे हमारा जीवन सर्वत्र विज्ञान में रत हो जाये क्योंकि हमारे यहाँ सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर के मानव विज्ञान की विचित्र–विचित्र उड़ान उड़ता रहा है।

यज्ञमयी सुकर्म क्रियाएं

आज के हमारे वेद के पठन–पाठन पाठन में भी नाना सूर्यो का वर्णन हो रहा है। परन्तु एक नहीं, दो नहीं हमारे यहाँ परमपिता परमात्मा की महती और अनन्तता में उस विज्ञान का एक स्वरूप माना गया है जिसके ऊपर सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर के वर्तमान के काल तक मानव अपनी एक महान उड़ान उड़ता रहा है। आज मैं तुम्हें विज्ञान के उस क्षेत्र में ले जाना नहीं चाहता हूँ विचार केवल यह कि हमारा एक प्रकरण चल रहा है और वह प्रकरण है कि हम याज्ञिक हो, संसार का जितना भी सुकर्म है जितनी भी सुकर्म क्रियाएँ हैं वे सर्वत्र एक यज्ञमयी स्वरूप मानी गई है। इसलिए हम सब उस परमपिता परमात्मा की यज्ञशाला में विद्यमान हैं और अपने विचारों में, अपनी महान कृतियों में, मानो देखो, हम याज्ञिक बनते चले जाये। जिससे हमारा जीवन एक महान प्रतिक्रियाओं में रमण करने लगे, क्योंकि संसार में, जब मानव अपने प्रभु के विज्ञान, ज्ञान की उड़ाने उड़ने लगता है तो मानो वह बड़ा विचित्र, और ऋषि मुनि अपनी एक स्थलियों में विद्यमान होकर के ऊर्ध्वा में उड़ान उड़ते रहते हैं और प्रभु के विज्ञान, प्रभु का आध्यात्मिकवाद मानो वो दोनो में रत हो जाते हैं।

विज्ञान की दो प्रतिक्रियाएं

हमारे यहाँ दो प्रकार का ज्ञान और विज्ञान माना गया है। विज्ञान की दो ही प्रतिक्रियाएँ मानी गई हैं। एक आध्यात्मिक विज्ञान है और एक भौतिक विज्ञान। तो भौतिक विज्ञान में मानो अपने में नाना प्रकार की उड़ाने उड़ता हुआ मुनिवरो! परमाणुओं में प्रवेश हो जाता है। परन्तु एक आध्यात्मिकवाद है, जहाँ मानव यह विचारता है कि मैं मृत्यु से पार हो जाऊँ और मेरी मृत्यु नही होनी चाहिए। प्रत्येक मानव के हृदय में यह आशंका बनी रहती है कि मेरी मृत्यु नही आनी चाहिए। मैं मृत्यु से पार हो जाऊँ। तो बेटा! यहाँ ऋषि–मुनि अपनी–अपनी स्थलियों पर विद्यमान होकर के, नाना प्रकार की उड़ाने उड़ते रहते है और यह विचारते रहते है कि जो भी जितने भी क्रियाकलाप हैं, अनुष्ठान है, तपस्या है, प्राणायाम है जो भी मानव क्रियाकलाप कर रहा है वह इसीलिए प्रयत्नशील है कि मेरा जीवन अंधकार में न चला जाये, मैं मृत्यु को प्राप्त न हो जाऊँ। बेटा! माता अपने बाल्य को शिक्षा दे रही और वह शिक्षा देते हुए उसके हृदय में ये आशंका रहती है कि मेरा बाल्य मानो सदैव ऊर्ध्वा में उड़ता रहे और मेरा बाल्य मानो महान बने और उसके जीवन में मानो अंधकार न आ जाये

प्रकाश–युक्त जीवन

तो ये मानो देखो, सर्वत्र एक अभिलाषा है और वह अभिलाषा यह है कि मानव के जीवन में अंधकार नही आना चाहिए। बेटा! अंधकार से मानव को मुक्त होना है। आज का हमारा वेद मन्त्र यही कह रहा है कि मृत्यु भवाः ब्रहे वाचन्नमं ब्रह्माः लोकाम् बेटा! देखो, इस लोक के लिए हम गमन करे, जहाँ जाने के पश्चात हमारा जीवन प्रायः प्रकाश में रत हो जाये। क्योंकि प्रकाश के लिए मानव परम्परागतों से बेटा! उड़ानें उड़ता रहा है। विचारता रहा है। इसीलिए हमारे ऋषि मुनियों ने बेटा! याग का अनुष्ठान बड़ा विचित्रतव माना है।

मेरे प्यारे! देखो, यह अनुष्ठान ये क्रियाएँ अपनी आभा में रत यागां रूद्रभागप्त प्रमाणाः मृत्ये देवाः ये पुत्र बन करके रहता है। ये मृत्यु को अपने में समन कर लेता है। और मुनिवरो! देखो, प्रकाश को दे देता है।

तो इसीलिए हमारे यहाँ ये याग भौतिकवाद से आध्यात्मिक मार्ग में ले जाता है। हमारे यहाँ दो प्रकार के यागों का चयन परम्परागतों से ही माना गया है। एक वह चयन है जो मुनिवरो! देखो, आध्यात्मिक और भौतिक वृत्तियों में रत रहता है तो विचार विनिमय क्या कि हम उस महान देव की उपासना करते चले जाये जिस देव के ज्ञान और विज्ञानमयी जगत को, रचाए हुए जगत में हम वास करते है।

मानव विज्ञानवेत्ता बन रहा है, वह अग्नि से साकल्य ले रहा है। मानो जल से साकल्य ले रहा है वह आपो और पृथ्वी से गुरुत्व ले रहा है और मानो देखो, उस को लेकर के वह परमाणुवाद में रत हो जाता है। तो उस परमाणुवाद में रत होने से मेरे प्यारे! वह भौतिक विज्ञान की ऊर्ध्वा में उड़ाने उड़ने लगता है। परन्तु एक आध्यात्मिकवेत्ता हैं वह कहीं सूर्य पर अनुसंधान करता है कही मानो ब्रहे सम्भूति पर अनुसंधान करता है। नाना प्रकार के अनुसंधान करने से बेटा! मृत्यु से पार होने का प्रयास करता रहता है।

सप्त होता

आओ, मेरे प्यारे! देखो, मैं तुम्हे विशेषता में नहीं ले जा रहा हूँ विचार केवल यह कि मुनिवरो! देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के यहाँ नाना ब्रह्मचारी विद्यमान हैं और ब्रह्मचारी ने यही प्रश्न किया कि महाराज। ये देखो सप्तं होता कौन से होते हैं? जिनके द्वारा यजमान याग कर रहा है और याज्ञिक बनना चाहता है। मेरे पुत्रो! देखो, उन्होंने कहा कि सप्तं होत्प्रमाणाः मानो देखो, यह सप्त होता हमारे शरीर में विद्यमान रहते हैं। ये बाह्य जगत में भी रहते हैं। तो मुनिवरो! देखो, सप्त होता हमारे यहाँ एक वृत्त माने गए हैं जिनको जानने के पश्चात् हमारा जीवन महान बन जाता है। मानो देखो, पंचीकरण होकर के, ये पंच महाभूतों में रत रहने वाले मेरे प्यारे! देखो, ये जगत सर्वत्र ही पंचीकरण है बेटा! देखो, पाँच महाभूत, पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ हैं और पंच–तन्मात्राएँ है। मेरे प्यारे! देखो, पाँच ही हमारे यहाँ देखो, प्रकृति की गति मानी गई हैं। ये पंचीकरण होने वाला गुरुतव, तरलतव, तेजोमयी, गतिमयी और मुनिवरो! देखो, गति जहाँ समाहित होती है वह अवकाश है।

प्रकृति की गतियाँ

तो विचार विनिमय क्या मुनिवरो! देखो, यह पंचीकरण है इसी प्रकार विज्ञान जब पंचः मानो देखो, विज्ञान के क्षेत्र में गमन करता है तो सबसे प्रथम वो प्रसारण, गति और मुनिवरो! देखो, ध्रुवा, ऊर्ध्वा और आकुंचन ये पाँच प्रकार की गति प्रकृति की हैं जो ये जगत हमे दृष्टिपात आ रहा है। तो मेरे प्यारे देखो ये सब पंचीकरण है, पंच होता है। यजमान बेटा! पंच होताओं के द्वारा याग कर रहा है। हे यजमान! तू सप्त होताओं के द्वारा मानो देखो, सप्त होता कौनसे है? मानो देखो, दो चक्षु, दो घ्राण इंद्रियों के छिद्र हैं, और दो श्रोत्रों के और एक मुखारबिन्दु मेरे प्यारे! ये सप्त होता है। जिनको तू संयम में करता हुआ, अपने जीवन को तपस्वी बनाता है।

अनुपम शरीर

और कैसे बनाता है तपस्वी? मेरे प्यारे! देखो, जो नाना प्रकार के रसों का रसास्वादन करने वाला जो मुखारबिन्दु। जो क्रिया में रत होता है, क्रिया मंगलं वाचन्नमं ब्रह्माः वह क्रियाओं में रत हो रहा है। बेटा! नेत्रों से मानो दृष्टिपात करता है। मुनिवरो! एक में विश्वामित्र है तो मुनिवरो! देखो, एक में जमदग्नि विद्यमान है। ये सर्वत्र एक देवता माने गए हैं बेटा! देखो, एक में व्रति है तो एक में द्वितीता है। मेरे पुत्रों! देखो, नेत्रों से दृष्टिपात कर रहा है कितने भेदन है बेटा! नेत्रों के? उन्ही नेत्रों से क्रोध की भावना आती है रूद्र की भावना आती है तो कैसा प्रचण्ड बन जाता है। मानो जिस समय नम्रता आती है तो नेत्रो में देखो, अश्रुपात आ जाते हैं। बेटा! ये कैसा अनुपम प्रभु ने ये मानो शरीर की रचना की है। मुनिवरो! जहाँ क्रोधाग्नि आती है तो अग्नि देखो नेत्रों, में लालिमा आ जाती है। जिस समय ये पर्जन्य व्यथित होता है तो पर्जन्यवादी बन जाता है।

प्रभु की यज्ञशाला

तो मेरे प्यारे! यह भिन्न–भिन्न प्रकार के स्वरूपों को धारण करता रहता है। इसी प्रकार देखो, दो चक्षु है जिनका समन्वय मानो दिशाओं से रहता है। जिनका समन्वय मेरे पुत्रो! देखो, इस लोक से भी रहता है और सबके स्थिति मानव के हृदय में समाहित हो रही है। मेरे प्यारे! देखो, नेत्रों का जितना क्रियाकलाप है, वह सब हृदय में समाहित है। ध्राण का जितना भी क्रियाकलाप है वह भी हृदय में है और मुनिवरो! देखो, जितना भी श्रोत्रों का क्रियाकलाप है, दिशाएँ, उन सबका समन्वय मानव के हृदय से, हृदय में अगम्य हो जाता है। मेरे प्यारे! देखो, षड रसों को मानव पान कर रहा है और पान करता हुआ उनकी स्थिति सब मानव के हृदय में निहित हो जाती है तो बेटा! ये कैसा अनुपम मेरे प्यारे! प्रभु की यज्ञशाला है। इसमें सप्त होता देखो, याग कर रहे हैं। और हृदय रूपी जो यज्ञशाला है उसमें बेटा! याग हो रहा है तो मुनिवरो! देखो, जब इस प्रकार का याग होता है तो मानव का आध्यात्मिकवाद कितना ऊर्ध्वा में गमन करता है। बेटा! वो कितनी महानता में रमण करता है।

पंच होता

मानो इसी प्रकार पंच होताओं के द्वारा याग होता है। पंच होता कौन से होते हैं? बेटा! देखो, सबसे प्रथम गुरुत्व है, जो पृथ्वी का गुण है, मुनिवरो! तरलत्व है जो मानो जल का गुण है, आपो का है और मुनिवरो! देखो, तेजोमयी अग्नि है और देखो, गतिवान वायु है और मुनिवरो! देखो, जिसमें सब समाहित हो जाते हैं वह अन्तरिक्ष है। इसी प्रकार प्रत्येक मानो पंचभूतों की स्थिति भी मानव के हृदय में समाहित हो रही है और वह परमात्मा का जो हृदय है उसमें वो समाहित हो रही है।

तो आओ, मेरे प्यारे! विचार क्या मुझे बहुत–सा काल स्मरण आता रहता है। हम उस प्रभु को बेटा! उस वसुन्धरा के रूप में वर्णित करते रहते हैं। हे माता वसुन्धरा! तू कल्याण करने वाली है। जिसे वेद में वसुन्धरा कहा है और मुनिवरो! देखो, वेदां ब्रह्मणे प्रत्येक मन्त्र उसकी गाथा गा रहा है। मानो देखो, ये पंचमहाभूत है जिनके द्वारा मानव याग करता है और याज्ञिक बनकर के मनिवरो! देखो, वह इनको जान लेता है और जानकर के वह ब्रह्मवर्चोसि बन जाता है। मेरे पुत्रो! देखो, ब्रह्मवर्चोसि कौन कहलाता है? परमपिता परमात्मा को ब्रह्मवर्चोसि कहते हैं। मेरे प्यारे! ब्रह्मवर्चोसि, ब्रह्मचारी को कहते हैं और ब्रह्मवर्चोसि मानो देखो, उस आभा को कहते हैं जिसमें मानव अपने में अपनेपन का भान करने लगता है।

तीन होता

तो मेरे प्यारे! विचार–विनिमय क्या, अब तीन होताओं के द्वारा भी याग होता है। मेरे प्यारे! तीन होता कौन से हैं? हमारे मानव शरीर में तीन गुण है। जो सब मनुष्यों के हृदयों में और सर्वत्र मेरी पुत्रियों के ममतामयी के हृदयों में सब में परिणत रहता है। मेरे प्यारे! जब सतोगुण आ जाता है तो मानव में सत् की चर्चाएँ आ जाती है और जब रजोगुण आ जाता है तो राजसी विचार आ जाते हैं जब तमोगुण आता है तो उत्पत्ति का मूल आ जाता है। बेटा! एक दूसरा गुण एक दूसरे में पिरोया हुआ है। तीन होताओं के द्वारा बेटा! विचारवान याग कर रहा है। कैसा विचारवान याग कर रहा है? मेरे प्यारे! देखो, मैंने तुम्हें बहुत पुरातन काल में कहा था कि तीन होता है। मानो देखो, सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण। हमारे यहाँ विष्णु का नाम बेटा! सतोगुण है, एक ही रूप

आता है कि बेटा! जो पालन करता है उसी का नाम विष्णु है। चाहे वो परमपिता परमात्मा हो, चाहे वो माता हो, चाहे वो राजा हो, चाहे वो मानो आत्मा हो, चाहे मुनिवरो! देखो, कोई भी सत् में रमण करने वाला सूर्य भी क्यो न हो। परन्तु उन सबका एक ही क्रियाकलाप है, एक ही कर्तव्य है कि वो सत से पालन करता है। सत्य में ही पालन है। माता अपनी लोरियों का पान करा रही है और देखो, उसे सत्य का उपदेश दे रही है। हे बालक! तू मानो देखो, महान है। आत्मा! तू विचित्र है। हे आत्मा! तू अखण्ड रहने वाला है। इस प्रकार की जब माता शिक्षा देती है तो वो सतोगुण में रत हो रही है।

त्रिगुणी माता

मेरे प्यारे! वो परमपिता परमात्मा तो सत्यमयी पालन कर रहे ही है। उनका वर्णन करना, वह विष्णु कहलाता है। हे विष्णु! तू मानो देखो, अपने में रत होकर के पालन कर रहा है। मेरे प्यारे! माता में तीनों गुण कहलाते हैं। मेरे प्यारे! सत् से लोरियों का पान कराती है और रजोगुण से बालक को दण्डित करके बेटा! उसे शिक्षा देती है और तमोगुण में जब रत होती है तो गर्भस्थल में मेरे प्यारे! उसे धारयामि बनाती है। धारयामि बनाकर के भी सत् का पालन कर रही है और रजोगुण में रत हो रही है तो बेटा! यह कैसा अनुपम एक विचार है, कैसा अनुपम मानो वेद का वाक् कहता है कि ऐसी माता याग कर रही है। हे माता! तू याज्ञिक बन। हे माता! तू अपने में स्वाहा उच्चारण करके मानो देवताओं को प्रसन्न कर। मेरे प्यारे! देवताओं को प्रसन्न जो माता करना जानती है वो अपने गर्भ से महान से महान बाल्य को जन्म दे देती है।

माता कुन्ती

मेरे प्यारे! आज मुझे मानो महाभारत काल में जाने का सौभाग्य प्राप्त हो गया बेटा! देखो, मैंने तुम्हे कई काल में वर्णन कराया कि माताएँ देखो, किस प्रकार वेद मन्त्रों का अध्ययन करके अपने पुत्रों को जिस देवताओं के गुणों वाला गुणावधानम् बनाना चाहती है तो माता उन्हीं गुणों को प्रदान कर देती है। मेरे प्यारे! देखो, मुझे कुन्ती का जीवन स्मरण है। बेटा! कुन्ती ने महर्षि दुर्वासा मुनि के आश्रम में अध्ययन किया। मानो देखो, उनकी अध्ययन की बड़ी उत्तम प्रतिक्रियाएँ रही है। मेरे पुत्रो! देखो, महर्षि दुर्वासा मुनि ने उन्हें विद्यालयों में भी कुछ वेद मन्त्रों का स्मरण कराया और उस विद्या का अध्ययन कराया कि हे पुत्रियो! नाना देवियाँ जो उनके यहाँ अध्ययन करती थी। कुन्ती ही नहीं बेटा! एक सौ ग्यारह ब्रह्मचारिणी मानो देखो, उस ब्रह्मविद्या को और वेद की शिक्षा को पाने के लिए तप कर रही थी। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा हे पुत्रियो! जिस देवताओं के गुणो की तुम संतान उत्पन्न करना चाहोगी मानो देखो, उसी वेद का अध्ययन करो उसी देवता के स्वरूप को वे शिशु उन्हीं गुणों को धारण करने लगे।

तो मुनिवरो! देखो, माता कुन्ती का यही कर्तव्य था कि जब उस माता के गर्भस्थल में शिशु का प्रवेश होता तो वह मानो अपने पति पाण्डु से पृथक् हो जाती और कहती कि प्रभु! अब मैं मानो देखो, गुणों को, बाल्य को देना चाहती हूँ। मेरे प्यारे! देखो, पाण्डु उन्हें स्वीकार करते रहे। बेटा! देखो, सबसे प्रथम धर्मराज की देखो, धर्मात्मा बनाने के लिए उन्होंने तपस्या की, वेद मन्त्रों का उसी प्रकार का प्रातःकालीन अध्ययन करना, याग करना और याग के पश्चात् बेटा! अन्तर्मुखी होकर के और अपने शिशु, जो आत्मा विद्यमान है शिशु से वार्ता प्रकट करती और उस देवताओं के गुणों को प्रदान कर देती। मेरे प्यारे! देखो, सबसे प्रथम गृह सम्भवः वह तो सूत पुत्र कहलाता ही था।

परन्तु देखो, धर्मराज जो पाण्डू पुत्र कहलाते थे। मेरे प्यारे! देखो, द्वितीय उन्होंने तपस्या के द्वारा ही मेरे प्यारे! देखो, माता याग कर रही है। आत्मा से वार्ता प्रकट कर रही है। प्राण सत्ता के द्वारा प्राणायाम करके, आत्मा से आत्मा का मिलान हो रहा है। मेरे प्यारे! देखो, प्राण उदान को जब समान में परिणत कर दिया जाता है तो बेटा! देखो, माताएँ अपने गर्भ की आत्मा से चर्चा करने लगती है। वे चर्चा में रत हो जाती है। मुनिवरो! देखो, मैंने उस पालं ब्रहे मेरे पुत्रो! देखो, मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस विद्या को देने का भी सौभाग्य प्राप्त होता रहा है। मेरे प्यारे! देखो, इस प्रकार उन्होंने तीन पुत्रों को जन्म दिए मानो देखो, दो पुत्र माद्री से हुए उन्होंने भी उसी प्रकार का तप किया। बेटा! गर्भ जहाँ रहा और गर्भ के पश्चात् माताएँ तपस्या में तल्लीन हो जाती है।

देवताओं की धरोहर

तो विचार आता रहता है बेटा! द्वापर के काल में ये पांचो पाण्डु पुत्र मानो देखो, देवताओं की धरोहर थे और माता ने तपस्या करके बेटा! देखो, उन्हें देवत्व बनाया। देवत्व का निर्माण किया। मेरे प्यारे! उनमें न घृणा थी, न ईर्ष्या थी सत् के उदगार गाने वाले वीरत्व को प्राप्त होते रहे। मेरे प्यारे! देखो, ये माताओं का तप है। जब माता मल्दालसा के द्वार पर जाता हूँ तो बेटा! देखो, सतोयुग के काल में मुनिवरो! देखो, मनुवंश में मेरे पुत्रो! देखो माता मल्दालसा हुई और माता मल्दालसा ने अपने गर्भ में ही तीनों पुत्रों को बेटा! देखो, ब्रह्मवेत्ता बना दिया। वे ब्रह्म की वार्ता प्रकट करती रहती, ब्रह्म की विवेचना करती रहती बेटा! जब बालक इस संसार में आए तो उनका नामोकरण करने के पश्चात् बेटा! देखो, उनके उद्गीत गाने लगी।

तो विचारा–विनिमय में क्या, मेरे पुत्रो! मैं ये विचार दे रहा हूँ कि संसार में परमात्मा का जो नियम है, परमात्मा की जो व्यवस्था है उसके अनुसार मानव को अपने जीवन को निर्माणित करना है। जिससे बेटा! ये समाज ऊँचा बनें। समाज की महानता ऊँची बनें। ये माताओं के द्वारा ही निर्माणित हुई है और उन्हीं से ये ऊर्ध्वा में गमन करता रहेगा।

मेरे पुत्रो! देखो, मैंने बहुत पुरातन काल में महाराजा अश्वपति के यहाँ विद्यालय में कुछ मानो देखो, शिक्षा देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। कन्याओं को शिक्षाएँ दी हैं मानो उनका जीवन बड़ा महानता में गमन करता रहा है। मेरे पुत्रो! मैं विशेषता में न जाता हुआ, विचार यह दे रहा था कि मुनिवरो! देखो, माता का नाम विष्णु है। हे विष्णु! तू कल्याण करने वाला है। हे माता! तू सत् में जब होती है तो मानो विष्णु याग करती है। रजोगुण में होती है तो तू मानो देखो, रूद्र याग करती है और जब तमोगुण में होती है तो ब्रह्म याग हो रहा है। मेरे प्यारे! कैसा विचित्र है एक दूसरा मनका एक दूसरे में पिरोया हुआ है। एक ही सूत्र के तीनो मनके हैं। मेरे पुत्रो! विचार क्या कि हमारे यहाँ सतोगुण में रत रहना तमोगुण में और मुनिवरो! देखो, याग करना, ही मानो देखो, इन क्रियाओं का नाम याग है। अग्निहोत्र करना मेरे पुत्रो! देखो, ब्रह्मवेत्ता बना देना, ये सब माताओं का बड़ा अस्तित्व रहा है संसार में। तो बेटा! आज में विशेषता में न जाता हुआ, केवल ये कि हम इन तीनों गुणों के द्वारा याग करने वाले बनें। बेटा! तीन होताओं के द्वारा याग हो रहा है। सामान्यता में याग हो रहा है। उस याग को हम जानने वाले बनें।

दो होता

बेटा! देखो, दो होताओं के द्वारा भी याग होता है। ये दो होता कौन से है? बेटा! देखो, ब्रह्मं को जानना और प्रकृति को जानने का नाम मुनिवरो देखो याग माना गया है। इसमें महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने यही कहा है कि ब्रह्मवर्चोसि ब्रह्मणां व्रेते हे ब्रह्मचारी! तू मानो देखो, याग कर रहा है। मानं ब्रह्मेः तुम ब्रह्मवर्चोसि बना रहा है। बेटा! ब्रह्मा व्रहे वेद के आचार्यो ने बड़ी सुन्दर वार्ता प्रकट की कि देखो, ब्रह्मवर्चोसि मेरे प्यारे! ब्रह्म की चरी को कौन चरता है? ब्रह्मचारी ब्रह्मणेव्रतां जब मुनिवरो! देखो, प्रत्येक मानव अपने श्वास की गति को ब्रह्मसूत्र में पिरो देता है तो मेरे प्यारे! ये ब्रह्म को जानने लगता है और वह प्रकृति में समाविष्ठ हो जाता है। प्रकृति और ब्रह्म को ब्रह्मचरिष्यामि कहलाता है। देखो, ब्रह्मचारी भी ब्रह्मचरिष्यामि कहलाता है।

मेरे प्यारे! ब्रह्म और चरी। ब्रह्म कहते हैं परमात्मा को, चरी कहते हैं प्रकृति को। कि देखो, प्रकृति को जानने वाला, वह ब्रह्मचरी को जानता है और वह ब्रह्म को उसमें समावेश ब्रह्म को उसमें ओत–प्रोत दृष्टिपात करने वाला देवाः वो ब्रह्मचरिष्यामि बन जाता है। वह ब्रह्मचरिष्यामि बनकर के नाना प्रकार की ऊर्ध्वा में उड़ाने उड़ने लगता है विचित्र उड़ानें उड़ने लगता है। मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्म के पुत्र अथर्वा की चर्चा आती है। ब्रह्मा के पुत्र अथर्वा बेटा! देखो, अपने आसन पर विद्यमान होकर के ब्रह्म और चरी दोनों की उपासना करते थे तो बेटा! वो मृत्यु को विजय करने वाले बने।

ब्रह्मचरिष्यामि

मेरे पुत्रो! देखो, ब्रह्मचारी कैसे विजय करता है? मुनिवरो! देखो, वह अपने विचारों को महान कैसे बनाता है? जो अन्नदान भूतप्रवाणाम् बेटा! अन्न की विशेषता होनी चाहिए। अन्न विचारवान होना चाहिए। अन्न से ही मानव के मन की उत्पत्ति है और मन प्रकृति का सबसे सूक्ष्म तन्तु माना गया है और जब मानो देखो, प्रकृति का तन्तु इसको प्राण में समावेश करके बेटा! जब विचारवान बनता है तो बेटा! वो ब्रह्मचरिष्यामि बनकर के अपने में तपस्वी बन करके मेरे पुत्रो! देखो, वह परमपिता परमात्मा की महती को प्राप्त होने लगता है।

तो मुनिवरो! देखो, मैं कोई विशेष चर्चा प्रकट करने नहीं आया हूँ मैं कोई व्यारव्याता नही हूँ केवल परिचय देने चला आता हूँ और वह परिचय क्या है? मुनिवरो! देखो, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने अपने जीवन में यही एक महत्व दिया कि अन्न को पवित्र बनाओ और अन्न के द्वारा मन का निर्माण होगा और मन जब पवित्र हो जायेगा तो उसमें विचार और मुनिवरो! देखो, गति का मिश्रण होकर के, तुम एक ब्रह्मसूत्र में प्रवेश हो जाओगे। तो मेरे पुत्रो! विचार क्या, आज मैं विशेषता में नही जाना चाहता हूँ।

आत्मा का लोक

तो मुनिवरो! देखो, विचार यह हो रहा था कि दो होताओं के द्वारा यजमान याग करे ब्रह्म और चरी दोनों को जाने.....। जिस आत्मा का लोक यह शरीर बन गया है। क्योंकि यह आत्मा का लोक कहलाता है बेटा! जैसे जाल्वी ऋषि महाराज ने यह प्रश्न किया। एक समय महर्षि द्रौतिक ऋषि महाराज से कि हे महाराज! मैं जानना चाहता है कि आत्मा का लोक क्या है? तो उन्होंने कहा कि आत्मा का लोक पंच महाभूत है। ये पंचमहाभूतों का जो शरीर है जिसमें आत्मा विद्यमान है। वह ही आत्मा का लोक है।

एक होता

तो मेरे प्यारे! जब यजमान कहता है ब्रहे, एक होता कौन–सा रह गया है ऋषिवर! तो उन्होंने कहा एक होता ब्रह्म है। इस ब्रह्म में मानो यह संसार देखो, माला के सदृश है। जैसे एक धागा है छिद्र है। उस छिद्र में मुनिवरो! देखो, प्रत्येक लोक, लोकान्तर क्या ये ब्रह्माण्ड पिरोया हुआ है। मानव भी उसी में पिरोया हुआ है। तो मेरे प्यारे! ये प्रकृति भी जब उस सूत्र में प्रवेश होती है तो वो माला बन जाती है और ऐसी विचित्र माला, जिसमें मेरे प्यारे! भिन्न–भिन्न प्रकार के मनके पिरोये जाते है और वह माला बन जाती है। और माला तब बनती है जब उसमें एक ब्रह्मसूत्र पिरोया जाता है। बेटा! वो ब्रह्मसूत्र है। उस सूत्र में मुनिवरो! देखो नाना जगत अपने में परिणत हो रहे है, सूत्रित हो रहे है। उसी सूत्र को देखो, जब अपने में विचारते है तो मेरे प्यारे! देखो, नाना मालाएँ बन जाती है बेटा! विचित्र–विचित्र मालाएँ बन जाती है। कैसी माला बनती है? बेटा! जब विचारवेत्ता अपने में विज्ञान की उड़ाने उड़ता है, जब अपनी अन्तरात्मा को प्राण के सन्निधान से, सानिध्य मात्र से ही बेटा! जब देखो, ब्रह्मसूत्र में ले जाता है। तब मानो देखो, यह एक–एक मनके की, एक–एक लोक की माला बन जाती है और लोक इसको अपने में धारण करने लगता है।

ब्रह्म सूत्र

मेरे प्यारे! मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन कराया है कि वह ब्रह्म का सूत्र कैसा है? बेटा! कैसा विचित्र है मुनिवरो! देखो, वह अगणित हो जाता है जगत् में। मेरे प्यारे! देखो, मैंने कई काल में वर्णन किया। आज भी मेरा मानो प्रसंग है। मेरे पुत्रो! यह जो ब्रह्मसूत्र यह कैसा है? यह मानो सूत्र में कैसे पिरोया गया है? मुझे ऐसा स्मरण है बेटा! जब वैज्ञानिक जन और मुनिवरो! देखो आध्यात्मिकवेत्ता एक स्थली पर विद्यमान होकर के, जब विज्ञान की उड़ाने उड़ने लगते हैं। परमात्मा के ब्रह्माण्ड की उड़ाने उड़ने लगते हैं। तो वह विचारते हुए कहते है कि यह जो पृथ्वियाँ हैं मानो जो पृथ्वियाँ दृष्टिपात आ रही है। मेरे पुत्रो! देखो, एक पृथ्वी नहीं, दो पृथ्वी नहीं, ऐसा ऋषि कहते हैं। मुनिवरो! देखो, तीस लाख पृथ्वियाँ कहलाती है। और तीस लाख पृथ्वियों की एक माला बन गई है वे सूत्र में पिरोई गई हैं और उस माला को धारण करने वाला सूर्य मण्डल कहलाता है। बेटा! सूर्यमण्डल उसको धारण करता है। परन्तु वैज्ञानिक कहते है कि यहीं तक माला बनी है परन्तु वैज्ञानिक और आध्यात्मिकवेत्ता दोनों विद्यमान होकर के विचारते हैं, मनन करते हैं और एक सूत्र में जाने का प्रयास करते हैं तो बेटा! एक सहस्र सूर्यो की माला बनी। एक सहस्र सूर्यो की माला की गणना कराई तो बेटा! देखो, उस माला को धारण करने वाला मेरे प्यारे! देखो, बृहस्पति मण्डल। बृहस्पति इतना विशाल मण्डल है जिसमें एक सहस्र सूर्य समाहित हो जाते हैं।

मण्डलों की माला

मेरे प्यारे! देखो, सूर्यों की माला बनी, बृहस्पति ने अपने में धारण कर ली। विचारवानों ने, वैज्ञानिकों ने, आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ताओं ने विद्यमान होकर के उड़ान उड़ने लगे। एक सहस्र बृहस्पतियों की माला बन करके उसे आरूणि मण्डल ने अपने में धारण कर लिया। आरूणि मण्डल इतना विशाल है कि एक सहस्र बृहस्पति समाहित हो गए। मेरे प्यारे! देखो, जब आरूणि ब्रहे जब उनकी माला बनी, तो एक सहस्र मुनिवरो! आरूणि मण्डलों की माला बन करके उसे ध्रुव ने अपने में धारण कर लिया। मेरे प्यारे! ध्रुव मण्डल कितना विशाल मण्डल है कितना व्यापिक है। विचारवानों ने जब ओर अनुसंधान किया तो एक सहस्र ध्रुव मण्डलों की माला बनी उसको बेटा! स्वाति नक्षत्र ने अपने में धारण कर लिया। एक सहस्र स्वाति नक्षत्रों की माला बनी तो बेटा! उसको मूल नक्षत्रों ने अपने में धारण कर लिया। एक सहस्र मूल नक्षत्रों की माला बनी जिसको देखो रोहिणी मण्डल ने अपने में धारण कर लिया। एक सहस्र रोहिणी मण्डलों की माला बनी तो मेरे प्यारे! देखो, उन मण्डलों को अचल मण्डल ने अपने में धारण कर लिया। एक सहस्र अचल मण्डलों की माला बनी जो कृतिका मण्डल ने अपने में धारण कर लिया। एक सहस्र कृतिका मण्डलों की माला बनी बेटा! उसको ग्रहण केतु मण्डल ने अपने में धारण कर लिया। एक सहस्र ग्रहणकेतु मण्डलों की माला बनी तो उन्हें बेटा! गन्धर्व ने अपने में धारण कर लिया। बेटा! हम कहाँ रह गए। हम तो मानो देखो, एक कुकृति अप्रताम हमारी किसमें गणना मानी गई है। प्रभु का राष्ट्र कितना विचित्र है।

मेरे प्यारे! देखो इतनी माला बनी, इतने नक्षत्रों की माला बनी बेटा! मेरे प्यारे! देखो, इतने नक्षत्रों का एक सौर मण्डल बन गया और ये सौर मण्डल को धारण करने वाला मेरे प्यारे! देखो, सौर मण्डलों को भी कोई धारण कर रहा है। मुनिवरो! देखो, एकां भूतां ब्रह्मणे, वेद का मन्त्र कहता है आख्यायिका कहती है। मुनिवरो! देखो, एक सहस्र सौर मण्डलों की एक आकाश गंगा बनी। मेरे प्यारे! आकाश गंगा कैसी विचित्र है। इस आकाश गंगा में मेरे प्यारे! एक आकाश गंगा नही, दो नहीं वेद की आख्यायिका तो यह कहती है सहस्राणां व्रभाः प्रो सम्भवेति लोकाम्।

मेरे प्यारे देखो, (1,99,69,79,561) एक अरब, निन्यानवे करोड़, उनहत्तर लाख, उन्नासी हजार, पांच सौ इक्सठ के लगभग बेटा! इसमें आकाश गंगाओं की एक निहारिका बनी। मेरे प्यारे! देखो, एक निहारिका नहीं, दो निहारिका नहीं मेरे पुत्रो! देखो, पौने दो अरब के लगभग ऐसी मानो निहारिकाओं की बेटा! एक अवन्तिका बन जाती है।

तो मेरे प्यारे! प्रभु का कितना विशाल मण्डल है। बेटा! ऋषियों ने अपनी समाधि के द्वारा यहाँ तक इस मण्डल को जाना। आगे मुनिवरो! देखो, वह मौन हो गया और मौन होकर के यह कहा कि यह तो अनन्तमयी जगत है। मेरे प्यारे! देखो, प्रभु का कितना विशाल जगत है मानो इसके चिंतन में लग जाओ, तो मानव का जीवन बेटा! एक नहीं, दो नहीं कई जीवन समाप्त होते चले जायेंगे परन्तु अन्त में वह प्राणी मोक्ष को प्राप्त हो जायेगा। परन्तु देखो, उसकी कितनी महानता है।

विचार–विनिमय क्या बेटा! मैं बहुत दूरी चला गया हूँ विचार देता–देता बहुत दूरी चला गया। इसके ऊपर तो बहुत व्याख्याएँ की जा सकती है। परन्तु विचार केवल यह है कि मुनिवरो! देखो, 'एको बहुधा वह तो एक है, उस परमात्मा के चिन्तन में लगो और वह चिन्तन मुनिवरो! देखो, इतना विशाल है। देखो, अंत में मानो एकोकी मानो देखो, एक होता याग कर रहा है। बेटा! एक होता के द्वारा याग हो रहा है। वो होता आत्मा है परन्तु आत्मा ब्रह्म के समीप जाना चाहता है वह अपने सखा के द्वार पर जाना चाहता है।

तो मुनिवरो! देखो, सर्वत्र ज्ञान और विज्ञान की आभा में रत होकर के प्रभु की अवन्तिका, निहारिकाएँ आकाशगंगाओं तक को जान करके बेटा! ये विचार लिया कि मानव कितना सूक्ष्मतम है। ये पृथ्वी कितनी सूक्ष्मतम है कितनी पृथ्वियों का निर्माण किया है मेरे प्रभु ने, मेरे पुत्रो! देखो, आज का विचार–विनिमय क्या कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए, ज्ञान और विज्ञानमयी जो वेद का एक रहस्यमयी ज्ञान है उसको जानकर के मेरे पुत्रो! देखो, हमें अपने जीवन में ऊँचा बनना चाहिए। प्रत्येक मानव परम्परागतों से बेटा! अनुसंधान करता चला आया है। अनुसंधान देखो, ये मानव का मौलिक गुण है। अनुसंधान परम्परागतों से ही ऋषि मुनि बेटा! अपनी आभा में विद्यमान होकर के अनुसंधान करते रहे हैं।

ये आज का विचार–विनिमय अब समाप्त होने जा रहा है। आज के विचारों का अभिप्राय क्या, कि वे परमपिता परमात्मा जो ज्ञान और विज्ञान में रत रहने वाले है। आध्यात्मिकवाद और भौतिकविज्ञान में जो मानव रत रहने वाला है जो जड़ जगत में और चेतनामयी जगत में जो रहने वाला है वो मानो एक सूत्र बना हुआ है। उस सूत्र में मानो हमें अपने को पिरोना है और मेरी माताओं का कितना अस्तित्व रहा है कि मुनिवरो! देखो, माता के गर्भ में जहाँ शिशु का प्रवेश हुआ माना ने तपस्या करना प्रारम्भ किया। तो बेटा यह संसार सतोमय रहा। यह संसार मानो तमोगुण सूक्ष्म आता रहा।

.... शेष अनुपलब्ध।

कर्मों का प्रवाह

7.1.89
मोदीनगर, गाजियाबाद

आज का हमारा वेद मन्त्र कुछ कह रहा है। वेद मन्त्र ये कहता है सम्भवः ब्रह्म वायुः सम्वृत्तिः देवत्वां देवाः मेरे प्यारे! देखो, यह जो वायु है ये अपने वेग में गमन कर रहा है। परन्तु इसके गर्भ में क्या–क्या द्रव्य है। क्या–क्या मानो इसमें प्राण सत्ता है। ये सब अध्ययन का विषय है। अपने में उसे जाना जाता है।

मानवीय दर्शन

तो मुनिवरो! देखो, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही मानवीय दर्शन में, जाने वाला बेटा! यह उड़न उड़ता रहा है कि हम मानवीयता में जाने का प्रयास करें और मानो दार्शनिक समय मानो दर्शन उसे कहा जाता है। जिस दर्शन में मानो आध्यात्मिक और विज्ञानवाद है उस विचार में, हमारे यहाँ मानो दर्शन कहा गया है। मुझे स्मरण आता रहता है महाराजा अश्वपति का राष्ट्र जहाँ मानवता की चर्चाएँ होती रहती और मानवता के सम्बन्ध में उनके यहाँ ज्ञान और विज्ञान बड़ी ऊँची उड़ाने उड़ता रहा है। तो मानो दर्शन को लाने के लिए राष्ट्र की निर्माणत्ता होती है। राष्ट्र का निर्माण होता है क्योंकि हमें अपने जीवन को ऊँचा बनाना है और मानव दर्शन को लाना है।

मेरे प्यारे! देखो, सबसे प्रथम, तो मैंने कई काल में कहा है आज भी वेद का मन्त्र आ रहा था, मेरी प्यारी माताएँ मानो अपने में दर्शन को लाने के लिए तत्पर हो जायें तो यह संसार दार्शनिक हो जाएगा, इसमें अज्ञान नहीं रह सकता। तो अज्ञान को नष्ट करने के लिए, हे माता! तुझे विष्णु बनना होगा। श्रीराम को उत्पन्न करने से पूर्व माता को जन्म लेना होगा। मानो यदि हम याग और तपस्या में जीवन को लाना चाहते हैं। तो विद्यालयों को ऊँचा बनाना है तो अरून्धती और वशिष्ठ को जन्म लेना होगा। मेरे प्यारे! जिससे देखो, हमारे यहाँ एक याग हो जाये और यागां रूप भागं ब्रह्माः मेरे प्यारे! देखो, याग के ऊपर बहुत चर्चाएँ देते रहे हैं।

विवेक की आवश्यकता

मैं आज तुम्हें ऐसे विद्यालय में ले जाना चाहता हूँ, जिस विद्यालय में बेटा! आध्यात्मिकवाद को लेकर के, मानव बेटा! विज्ञान की कितनी ऊँची उड़ाने उड़ता रहा है। मैं यह बहुत पूर्व काल में भी, तुम्हें यह वाक् चर्चा में लाया हूँ और मानो हम अपने देखो, नाना प्रकार के प्राणायाम् करता हुआ प्राणों की साधना में परिणत होता हुआ अपने रूग्णों को जो शांत कर लेता है। वह मानो विवेकी बन जाता है। क्योंकि विवेक में जाना बहुत अनिवार्य है। राजा भी जब अपनी स्थली पर विद्यमान होता है तो यह विचारता है, प्रभु से कहता है, हे प्रभु! मेरे राष्ट्र में विवेकी पुरुष होने चाहिए और विवेकी महात्मा होने चाहिए, ऋषि होने चाहिए जिससे मेरा राष्ट्र बुद्धिजीवी बने। क्योंकि राष्ट्र तभी ऊँचा बनता है जब बुद्धिजीवी प्राणी रहते है। और जब बुद्धिजीवी प्राणी नही रहते तो राजा के राष्ट्र में अज्ञान आने का सदैव संदेह बना रहता है। तो मुनिवरो! देखो, उस संदेह को राष्ट्रवेत्ता यह विचारता रहता है कि मेरे राष्ट्र में विवेकी महात्मा हो। वह वेद और दर्शनों के और मानो दर्शनों की ऊँची उड़ाने उड़ने वाले हों। तो बेटा! देखो, इस प्रकार का विचार हमारे यहाँ परम्परागतों से मानवीय मस्तिष्कों में रहा है।

मेरे प्यारे! देखो, इस प्रकार का विचार, देते हुए मुझे एक वार्ता स्मरण आ रही है। आज बेटा! मैं तुम्हें वार्ता में ले जाऊँगा, जहाँ मानो देखो, निर्णय अब्रहा व्रत होकर के मुनिवरो! देखो, कितना अद्वितीय बन जाता है। बेटा! तुमने साकल्य मुनि का नाम तो श्रवण किया ही होगा। साकल्य मुनि महाराज बड़े आध्यात्मिकवादी और मानो देखो, वह आध्यात्मिकवाद में रत थे और मुनिवरो! देखो, साकल्य मुनि महाराज अपने ही आसन पर विद्यमान होकर के, वे तपस्या करते रहते थे और दर्शनों का अध्ययन करते रहते थे। मेरे प्यारे! वे नाना प्रकार के अनुष्ठान करते रहे। और यह इसलिए क्योंकि मैं मृत्यु को प्राप्त न होऊँ, मैं अज्ञान में न चला जाऊँ, मैं मृत्युंजयी बन करके मोक्ष को प्राप्त हो जाऊँ। ऐसा साकल्य मुनि के अन्तर्हृदय में एक विचार बन रहा था।

रेचक, कुम्भक से अन्तरिक्ष उड़ान

तो मुनिवरो! बहुत समय हो गया वे अध्ययन करते–करते अपने जीवन में कहीं मानो देखो, वह प्राण के सानिध्य से अपने जीवन में, मानो देखो, कुम्भक और रेचक करते रहते थे और देखो, ज्ञान और विज्ञान भी उसी प्राण के माध्यम से वे अपनी क्रियाओं में लाने का प्रयास करते रहते थे। मेरे प्यारे! एक समय तो ऐसा कहा जाता है। उनके सम्बन्ध में कि वे रेचक और कुम्भक करते हुए बेटा! अंतरिक्ष की उड़ान उड़ने लगे। अन्तरिक्ष की उड़ान उड़ते हुए मानो देखो, वे ब्रह्मे ब्रहाः अपने तीनो शरीरों को जानने का प्रयास करते रहते थे। समय–समय पर बेटा! गोष्ठियाँ होती रही। एक समय बेटा! महर्षि उद्यालक गोत्र में जन्म लेने वाले शिकामकेतु उद्यालक और उनकी पत्नी शकुन्तका वे दोनो बेटा! भ्रमण करते हुए भयंकर वनों में, कुछ औषधियों के लिए, वनस्पतियों के लिए अपने याग के लिए वे भ्रमण कर रहे थे। तो साकल्य मुनि महाराज अपनी शांत मुद्रा में विद्यमान थे। मुनिवरो! दोनों पति–पत्नी के हृदयों में बहुत दूर से ही मानो देखो, प्रेरणा हुई कि इस वन में। ऋषि साकल्य मुनि रहते हैं तो मुनिवरो! देखो, मानो भ्रमण करते हुए साकल्य मुनि के द्वार पर जा पहुँचे और साकल्य मुनि महाराज ने कंद मूल से उनका अतिथि किया और अतिथि करने के पश्चात् उन्होंने कहा–कहो–भगवन्! कैसे भ्रमण कर रहे हो? उन्होंने कहा–प्रभु! हम देखो, अपने गृह में, अपने आश्रम में याग करते है और उसमें विज्ञानशाला भी है। विज्ञान में अनुसंधान करते रहते हैं। तो प्रभु! आज हम कुछ औषधियों के लिए भ्रमण करते हुए तुम्हारे यहाँ गमन कर गए तथा तुम्हारे यहाँ विराजमान हो गए। इच्छा हुई कि दर्शन हो जाये तो प्रभु दर्शनों के हम उत्सुक है।

तो देखो, ऋषि ने कहा–कि 'बहुत प्रियतम'। तो मेरे प्यारे! उन्होंने कहा प्रभु! हमारे आश्रम में किसी समय पधारिए। प्रभु! देखो, वहाँ हम याग करते है और अपने पूर्वजों के प्रति कुछ यंत्रों का निर्माण कर रहे हैं। मानो मेरा पूर्व जन्म अब्रहाः वृष्टि देवाः तो प्रभु मेरी इच्छा यह है कि मैं उसका अकृतो मानो देखो, आपको भी दृष्टिपात कराऊँ। साकल्य मुनि ने कहा–प्रभु! समय मिलेगा, तो हम अवश्य आ पाएंगे।

तो मेरे प्यारे! दोनो देवं ब्रहाः पति पत्नी ने वहाँ से गमन किया। परन्तु ऋषि पुनः तपस्या करते रहे। एक समय बेटा! उन्होंने अपने चित्त मण्डल को जानने का प्रयास किया। मेरे प्यारे! यह मन की कितनी धाराएँ है, चित्त में कितने द्रव्य है और देखो, अहंकार उनको कैसे कटिबद्ध कर रहा। ऐसा मेरे प्यारे! वे निर्णय कर रहे थे। मेरे प्यारे! देखो, कुछ समय व्यतीत हुआ तो मानो देखो, एक हिरणी माता के बेटे को, एक हिंसक प्राणी उनके आश्रम के निकट को जा रहा था। तो गर्भ में विद्यमान, हिसंक प्राणी के क्रियाकलाप से उसका गर्भाशय ऋषि के आश्रम में मानो पात हो गया। पात होने से बेटा! वह हिरणी तो आगे चली गई भय के कारण, कि मेरी मृत्यु का कारण मेरे समीप है। मेरे प्यारे! देखो, वह साकल्य ऋषि लेने जा रहे थे कि ये तो जरायुज है इसमें कोई प्राणी है।

जीवन का रहस्य

मेरे प्यारे! उन्होंने जरायुज में ही वकुन्त किया और उसमें कुछ जल स्थापित किया। तो बेटा! उस बाल्य को श्वास आ गया। श्वास की गतियाँ प्रबल हो गई। मुनिवरो! देखो, वह बाल्य शुद्धाब्रहे वह जीवित हो गया। मेरे प्यारे! देखो, उस बालक की साकल्य मुनि पालना करने लगे। उनके पितर रोहिणीकेतु मुनि महाराज द्वार पर आए और रोहिणीकेतु ने कहा–हे साकल्य! तुम्हे हमसे मोह नहीं हुआ माता से मोह नहीं हुआ, तुम्हे मानो देखो, प्रभु से मोह हुआ, और आज तुम एक हिरणी के बाल्य से मोह कर रहे हो। उन्होंने कहा–प्रभु! मुझें मोह हो गया है। उन्होंने कहा–ऐसा करोगे तो तुम्हारे जीवन में अधूरापन आ जायेगा। तुम्हारे जीवन का रहस्य समाप्त हो जायेगा। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा–भगवन्!! अब तो मुझे मोह हो गया है परन्तु देखो, उन्होंने कहा–तुम पितरो से मोह नहीं कर सकते। ऋषि ने कहा–कि पितरजन मेरे महान है परन्तु वो तपस्वी है वो मानो अन्तरात्मा को जानते है। मैं उनसे मोह क्या करूँ? ये मेरा हृदय कि बाल्य से मेरा मोह हो गया है।

साकल्य मुनि का मोह में प्राणात्त

मेरे प्यारे! देखो, जब उन्होंने ऐसा कहा–तो पितर शांत हो गया। माता भी शांत हो गई। मुनिवरो! देखो, उन्होंने अपने आसन को गमन किया और वे बड़े दुःखी थे। उनके हृदय में यह विचार आया कि बाल्य को मोह हो गया है और मोक्ष की पगडंडी पर जाने वाले नीचे आ जाये ये बड़ा आश्चर्य होगा। मेरे प्यारे! देखो, उड़ान करके उन्होंने अपने आश्रम को गमन किया और मुनिवरो! साकल्य मुनि महाराज विचार–विनिमय क्या, उस बाल्य से मोह हो गया, प्रबल मोह हो गया! मेरे प्यारे! देखो, हिरणी के बालक को तो समय पर जाना है। वह तो समय पर जाने के लिए, तत्पर रहा, वह हिरणी का बाल्य चला गया। मेरे प्यारे! ममता में साकल्य मुनि महाराज यह उद्गीत गाते थे हे बालक! तू कहाँ चला गया? मानो मैंने तुम्हें अपने हृदय से आलंगित किया था। मेरे प्यारे! उनका मोह अति प्रबल हो गया। अन्त में बेटा! देखो, साकल्य मुनि का भी प्राणान्त हो गया।

मोह की परिणिति

प्राणान्त हो जाने के कारण मेरे पुत्रो! देखो, वह राजा के यहाँ मुनिवरो! देखो, उस आत्मा को जाना हुआ। सुनीति नाम के राजा बेटा! सतयुग के काल की वार्ता है। सुनीति नाम के राजा मेरे प्यारे! देखो, उनके यहाँ उनकी पत्नी मागलं वृहिता रम्भेश्वरी मेरे प्यारे! देखो उसके गर्भ में उस आत्मा का प्रवेश हो गया। जब आत्मा का प्रवेश हो गया, बिन्दुओं के द्वारा शिशु का जब प्रवेश हो गया तो बेटा! वह पनपने लगा। माता जब, जहाँ वह परिणत होती मेरे प्यारे! उस बाल्य को जाना था क्योंकि वह मोक्ष के निकट से आया था। वह ज्ञानं ब्रहे हे मेरे प्यारे! देखो, जहाँ माता के गर्भस्थल में बेटा! सुषुम्णा नाम की नाड़ी पुरातत नाम की नाड़ी, गमन कर रही है पंचम् नाम की नाड़ी जहाँ गमन कर रही है और भी नाना जैसे लोह की नदियाँ गमन कर रही है मेरे प्यारे! देखो, वहाँ तो वह कहता, साकल्य मुनि महाराज–हे प्रभु! मुझे इस संसार से ले चल! हे प्रभु! मुझे इस माता के गर्भ से बाहर कर। हे प्रभु! मैंने पूर्व जन्म में मोह किया था जब मैं साकल्य मुनि था। प्रभु! अब मैं मोह नही करूँगा। प्रभु! मैं मोह नही करूँगा, प्रभु! मुझे क्षमा करो।

साकल्य मुनि की आत्मा

मेरे प्यारे! देखो, यह वार्ता प्रकट कर रहे थे, वे बड़े आनन्दितं प्रहा देखो, कुछ समय के पश्चात्, समय आने पर मुनिवरो! देखो, माता के गर्भ से वो पृथक् हो गया। जब पृथक हो गया, पृथक् हो जाने के कारण मुनिवरो! देखो, वह ब्रहे राजा के यहाँ एक बड़ा आनन्द हुआ। राजा के यहाँ पाण्डितव याग

कर रहें हैं। कहीं साधना करने वाले साधना कर रहे हैं। राजा के पूरे राष्ट्र में बेटा! एक आनन्द हुआ है। वह उल्लास में राजा देखो, उल्लासित हो रहे हैं। मेरे पुत्रो! मुझे स्मरण आता है। मैं जब दृष्टिपात करता हूँ कि मानव कहा का कहा चला जाता है। मेरे प्यारे! देखो, जब वह बालक कुछ प्रबल हुआ तो मुनिवरो! देखो, वह बुद्धिहीन रहा, वह विवेकी था, आत्मवादी था। क्योंकि आत्मवादी ही बेटा! इस संसार से विमुक्त हो जाता है।

मेरे प्यारे! देखो, राजा ने विचारा, अपनी पत्नी से बोले हे देवी! ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे मेरा जो ये बाल्य पुत्र है यह मानो जैसे बुद्धिहीन हो। उन्होंने कहा—नहीं राजन्! बुद्धिहीन नहीं है। कुछ प्रबल हुआ तो मानो मोह किसी वस्तु से नही था, न प्रीति थी। मेरे पुत्रो! देखो, वह राजा ने स्वीकार कर लिया और देवी ने भी यह स्वीकार कर लिया कि पुत्र तो बुद्धिहीन है।

मेरे प्यारे! बुद्धि के विशेषज्ञों में उनका प्रवेश कराया गया और बुद्धि विशेषज्ञ उनकी चिकित्सा करते, परन्तु उनकी चिकित्सा नही हो पाती ,क्योंकि बुद्धि में कोई विकार नही था। वह तो सन्य थे, आत्मवेत्ता थे, संसार से विमुक्त उनका जीवन था। मेरे पुत्रो! राजा ने उसे वाटिका में स्थिर कर दिया, कुछ समय पश्चात् वाटिका को नष्ट करने लगे। जब वाटिका नष्ट कर दी तो राजा ने कहा ये बालक तो बड़ा मूर्ख, धूर्त है। मेरे प्यारे! देखो, जब वाटिका के विशेषज्ञ राजा के द्वार पर पहुँचे तो राजा से कहा—प्रभु! तुम्हारे इस बाल्य ने सब वाटिका नष्ट कर दी। मेरे प्यारे! देखो, राजा ने कहा—जाओं, मेरे राज्य से दूर हो जाओ। मानो तुम महाबुद्धिहीन हो।

जड़ भरत

मेरे प्यारे! देखो, उस बालक का नाम राजा ने जड़ भरत के नाम से नियुक्त किया था। मेरे प्यारे! देखो, वह जड़भरत राष्ट्र को त्याग करके राजा की अनुमति से बेटा! वो भयंकर वन में पहुँचे और भयंकर वनों में बेटा! पत्र, पुष्प का पान करना, कन्दमूल का पान करना और अपनी आत्मा में लीन रहना बेटा! आत्मा में कैसे लीन रहता है? मानो इस संसार का कोई चिंतन नही कर रहा है। वह प्रभु का चिंतन कर रहा है। कि ये प्रभु कैसा है? प्रभु का राष्ट्र कैसा है? मानो मैं प्रभु के राष्ट्र में हूँ। मैं किसी के राष्ट्र में नहीं हूँ। मैं प्रभु के राष्ट्र में हूँ ,प्रभु का राष्ट्र बड़ा नितान्त है, प्रभु का राष्ट्र तो एक विज्ञानमयी है। प्रभु का राष्ट्र तो मानो एकोवृत्तियों में रत रहने वाला है।

आत्मा में लीन

मेरे प्यारे! देखो, वह ब्रह्मचारी, वह महात्मा मानो देखो, अपनी आत्मा में लीन हो गया। हे आत्मा! तू शरीर में विद्यमान है। तू किसी भी काल में नष्ट नहीं होता है। हे आत्मा! तू मानो देखो, निरंजन है। तू नष्ट नहीं होता, तू आत्मा मानो बुद्धिमान है। तेरी बुद्धि का मापदण्ड भी नष्ट नहीं होता। हे आत्मा! तू मानो देखो, ब्रह्मणे गाताः तू ऋतम्बरा है, तू प्रज्ञा है, तू मानो देखो, मेधा है। तू बुद्धि के भिन्न—भिन्न रूपों में गमन करने वाला तेरा चित्त का मण्डल बना हुआ है और चित्त के मण्डल में मैंने नाना प्रकार के संस्कारों को जाना है। महात्मा जड़भरत ने पूर्व जन्म में जब इतना तप किया था बेटा! वह अपने 1,85,561 जन्मो का साक्षात्कार कर सके।

चित्त मण्डल में संस्कार

तो मेरे प्यारे! देखो, चित्त के मण्डल में नाना जन्मों के संस्कार विद्यमान है। हे संस्कार! तू अपने में संस्कारित करने वाला मानो वन है। मेरे प्यारे! देखो, जड़भरत यह प्रार्थना कर रहा था, अपने में लीन हो रहा था। आत्मतत्त्व में रत होने वाला बेटा! बुद्धिमान होता। वह देखो, तपस्या करता हुआ संसार से उदासीन हो जाता है। पत्नी से उदासीन हो जाता है। अपनी आत्मा में वो लीन रहता है।

मेरे प्यारे! देखो, कुछ समय के पश्चात् मुनिवरो! देखो, वहाँ अव्रहे अयोध्या का राजा मुनिवरो! देखो, मनुवंश में हमारे यहाँ ये माना गया है कि अयोध्या का जो निर्माण किया है वो इक्ष्वा मनु ने किया है मानो देखो मनु जी महाराज ने इसका निर्माण किया। अष्टचक्रा नव द्वारो वाली पुरी मानो जैसे मानव के शरीर में आठ चक्र और नौ द्वार है और मुनिवरो! देखो, यह भूमि कहलाती है। अयोध्या का निर्माण इस प्रकार उन्होंने किया। तो मेरे प्यारे! देखो, महाराजा नयूष के हृदय में यह विचार आया कि मैं अपने पुत्र को राष्ट्र देकर के मैं मानो तपस्या के लिए गमन करूँ। मेरे प्यारे! देखो, राजा के राष्ट्र में जब समाज में, राजा तपस्वी होता है तो प्रजा भी तपोमयी बन जाती है। माता—पिता तपस्वी होते हैं तो बाल्य भी तपस्वी हो जाते है।

तप का महत्त्व

मेरे प्यारे! देखो, तप का बड़ा महत्व माना गया है। विचार आता रहता है तप किसे कहते हैं? मेरे प्यारे! पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियों को संयम में लाने का नाम तप है और चिंतन, मनन करने का नाम तप कहा जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, महाराजा नयूष ने अपने ज्येठे पुत्र भारद्वाज को, हंब्रेति वासोपन्पेह को निमंत्रित करके बेटा! देखो, उन्होंने अपने ज्येठे पुत्र सोमती सोमित नाम के सोमनिक मनु को उन्होंने अपना राज समर्पित कर दिया। उन्होंने कहा—हमारे यहाँ यह परम्परा मानी गई है कि त्यागो, त्यागं त्यागं ब्रह्मणे दोहा। जो मानो त्यागता है उसे त्याग प्राप्त होता है। मेरे प्यारे! जो त्यागता है उसे प्रभु प्राप्त होते है। मानो देखो, उन्होंने राष्ट्र को त्याग करके महाराजा नयूष ने अपने ज्येठे पुत्र को समर्पित कर दिया और चार मनुष्यों की पालिका में विद्यमान होकर के उन्होंने वहाँ से गमन किया।

मेरे प्यारे! देखो, गमन करते—करते वह बहुत दूरी तक चले गए तो उनका एक सेवक जो पालिका में था तो उसको रुग्ण हो गया। जब रूग्ण हो गया तो वह किसी मानव को यह जानने के लिए कि कोई पालिका को भेज ले। तो मानो देखो, वहीं जड़ भरत तपस्या कर रहे थे और जड़ भरत मानो देखो, मधुर पान किए हुए थे, वे उनको लाए और पालिका को, जब गमन करने लगे तो पालिका वो जानते नहीं थे। राजा नयूष कहीं ऊर्ध्वा में हो जाये, कहीं ध्रुवा में हो जाये। मेरे प्यारे! देखो, महाराजा नयूष को बड़ा क्रोध आया और क्रोध आने पर उन्होंने पालिका को रूकवा दिया और जड़ भरत पर उन्होंने आक्रमण किया।

तो मुनिवरो! देखो, आक्रमण करने के पश्चात जब वो शांत हुए तो मुनिवरो! देखो, शांत होने के पश्चात वे जड़ भरत प्रभु से प्रार्थना करने लगे और मग्न होकर के उन्होंने कहा हे प्रभु! मैंने तो पूर्व जन्म में मोह ही किया था प्रभु मेरी तो यह दशा है कि राजा ने भी मुझे राज से द्रोही कर दिया पितर ने भी, माता ने भी मुझे धिक्कारा और देखो, मैं यहाँ आ गया हूँ। हे प्रभु! ये जो संसार में काम भी करते हैं, क्रोध भी करते है प्रभु जो धन इत्यादियों में रत रहते हैं। जब वो तेरे द्वार पर जायेंगे तो प्रभु उनकी क्या दशा होगी? क्या गति होगी प्रभु! उनकी, मेरा तो यह परिणाम हुआ है। कि मैं मानो एक हिरणी के बाल्य से मोह किया और मोह के कारण भगवन्! मैं कहाँ आ गया हूँ, कहाँ मेरे पर यह आक्रमण हो रहा है।

मेरे प्यारे! प्रभु से याचना करने लगा। वह जड़ भरत कहता है प्रभु से हे प्रभु! यह संसार कहा है मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि इस प्रकार प्रार्थना कर रहा है तो महाराज नयूष आश्चर्य से चकित हो गया। उन्होंने—कहा, हे भगवन्! आप कौन हैं? उन्होंने कहा हे नयूष! ये संसार के प्राणी मुझे मानो देखो, जड़ भरत कहते है। मेरे प्यारे! राजा ने अपनी पालिका को त्याग दिया और सेवको को कहा—जाओ, व्रहे और देखो, वह जड़ भरत के चरणों में ओत—प्रोत हो

गए। उसने कहा—प्रभु! मुझे क्षमा कीजिए हे प्रभु! मैं तो बड़ा पामर हूँ, बड़ा धूर्त हूँ। हे प्रभु! मेरे ऊपर क्षमा कीजिए। मैं क्षमा का पात्र हूँ भगवन्!, हे भगवन्! जब मैंने राष्ट्र को त्यागा तो यह विचारा कि मैं जड़ भरत को ही गुरु निर्माणित करूँगा। हे प्रभु! मुझे क्षमा कीजिए।

प्रभु में लीनता

मेरे प्यारे! राजा के अश्रुपात हो रहे है परन्तु देखो, वह बोले हे राजन्! तुम अश्रुपात न करो, तुम आत्मा का चिंतन करो। आत्मा में लीन हो जाओ। जो मानो देखो, घटना जीवन में होती है वह तो प्रायः हो ही जाती है। परन्तु अब देखो अपने मार्ग का परिवर्तन करो। मेरे प्यारे! देखो, जब जड़ भरत ने आश्वासन दिया और पंक्ति लगाकर के विद्यमान होकर, के दोनो मानो एक दूसरे में ज्ञान का भरण करने लगे। उन्होंने कहा हे नयूष! तुम जानते हो कि जब संसार मे ये जो आत्मा का ज्ञान है यही तो वह ज्ञान है जिसमें प्रभु वास कर रहे हैं। मानो देखो, मैं उसी के चिंतन में लगा हुआ हूँ। अपने में, इंद्रियों का विषय मैं नहीं जानता। ज्ञानेन्द्रियों का विषय नहीं जान रहा हूँ। मैं कर्मेन्द्रियों को नहीं जान रहा हूँ, मैं यह जानता हूँ मेरा लक्ष्य है कि मेरी आत्मा प्रभु में लीन हो जाये। मेरी अन्तरात्मा प्रभु में समर्पित हो जाये। प्रभु मेरी यह इच्छा है, ऐसा मेरा लक्ष्य बना हुआ है।

सात जन्मों से लक्ष्य

यह लक्ष्य मानो देखो, मेरा सात जन्मों से तप चला आ रहा है। मानो देखो, इस से पूर्व जन्म में तो हिरणी के बाल्य से मोह होकर के भगवन्! इस दशा में जड़ भरत हुआ हूँ उससे पूर्व जन्म मेरा वृती नाम के ऋषि से वर्णित हुआ। उस समय मुझे मानो एक बेटी! पर क्रोध आ गया था। वह कामा—कामा कहती, मुझे क्रोध आया, उसी क्रोध के कारण, मैं मोक्ष से मानो देखो, द्वितीय स्थान पर आ गया। हे राजन्! मानो उससे पूर्व जो जन्म था वह मेरा मानप्रीतिक के रूप में था। मानप्रीतिक के रूप में एक समय में 185 वर्ष तक मैंने चित्त के मण्डल को जाना और देखो, प्राणों को एकाग्र किया, मैं लोकों की यात्रा करता रहा परन्तु एक समय देखो, मैं जब मार्कण्डेय ऋषि के आश्रम में परिणत हो गया था तो मार्कण्डेय ने मानो देखो, मुझे कुछ आश्वासन दिया और मार्कण्डेय से मुझे मानो देखो, मोह हो गया। उस मोह के कारण मेरी तपस्या का फल समाप्त हो गया। हे प्रभु! मैं मानो देखो, एक समय में पर्वतों की कन्दराओं में मृती राजा भ्रमण कर रहे थे मानो देखो, उससे मैं क्रोधित होकर के मेरा अन्वत समाप्त हो गया।

तो प्रभु मैं सात जन्मों से इस चक्र में लगा हुआ हूँ। अब मैं यह चाहता हूँ कि मेरे गुणों का भी अन्त हो गया है। अब मैं चाहता हूँ मानो तुमने मुझे दण्डित किया, तो मुझे क्रोध नहीं आया। तो मेरी इच्छा यह बन गई है कि हो सकता है अब तो प्रभु के द्वार पर चला जाऊँ।

तपस्या से ऊर्ध्वगति

तो मानो देखो, मानव किन—किन कारणों के वशीभूत कहाँ—कहाँ मानो देखो, नीचे चला आता है। पुनः तपस्या के बल से उर्ध्वा में चला जाता है।

तो मेरे प्यारे! देखो, महात्मा जड़ भरत अपने में गमन करते हुए अपने में, आत्मविज्ञान में रत होते हुए आत्मा के प्रकाश में वे दृष्टिपात करते रहते। बेटा! आत्म प्रकाश, एक महान प्रकाश है। जिस को जानकर के मानो आध्यात्मिकवाद से, एक महान गतियों को प्राप्त हो जाता है। तो इसीलिए उन्होंने कहा कि संसार में विवेक होना चाहिए और विवेक में मोह नहीं होना चाहिए। विवेक में अज्ञान नहीं होना चाहिए। ज्ञानयुक्त जो विवेकी पुरूष होता है वो इस सागर से पार हो जाता है।

तो देखो, महाराजा नयूष और जड़ भरत दोनों देखो, विचार कर रहे है। तारा मण्डलों की माला गणित कर रहे हैं। अग्नि की तरंगो को गणना में ला रहे हैं। मेरे प्यारे! देखो, वह अपने जन्म जन्मातरों के संस्कारों को अपने में दृष्टिपात कर रहे चित्त के मण्डल में, बेटा! उन दोनों को लगभग मुझे ऐसा स्मरण है बेटा! कि बारह—बारह वर्षों के उन्होंने इस प्रकार के अनुष्ठान किए। वायुमण्डल पवित्र हो गया। बेटा! ऐसा प्रतीत है कि उन्होंने 105 वर्ष तक दोनों ने तपस्या की। उनकी ममता समाप्त हो गई और चित्त के मण्डल में अन्तरात्मा मानो देखो, प्राणेश्वर को जानकर के, प्राणों को एकाग्र करके, प्राणों को अपान में, अपान को उदान में, उदान को समान में, समान को मुनिवरो! देखो वह व्यापिक रूप और अवृत्ति इत्यादि में रमण करते हुए बेटा! देखो, वह पृथ्वी के ऊपर वह मेरे प्यारे! मोक्ष की साधना करते रहे और उसी में बेटा! वह रत होते हुए बेटा 185 वर्षों तक तप किया, अनुसंधान किया बेटा! देखो आगे चल कर के उन्हें मोक्ष की पगडन्डी प्राप्त हो गई।

ये हे बेटा! आज का वाक्, आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय यह कि मुनिवरो! देखो, संसार में मानव कहाँ—कहाँ जाता है। किस—किस प्रकार के तपों में रत हो जाता है। बेटा! साकल्य मुनि महाराज को ममता केवल हिरणी के बाल्य से थी और उसी से वो मोक्ष के नीचे आ गए, पगडन्डी से नीचे आ गए। मोक्ष की पगडन्डी प्राप्त करने वाले थे। मेरे प्यारे! देखो, मानव को तपस्या करनी चाहिए, परन्तु ममता से रहित हो जाये। मोह से रहित हो जाये। देखो, प्रीति होनी चाहिए, मोह नही होना चाहिए। मोह से मानो ध्रुवा में जाता है। और प्रेम से, स्नेह से मानो परमपिता परमात्मा को प्राप्त हो जाता है। जब सर्वत्र प्राणियों से उसे स्नेह हो जाता है। स्नेह मुनिवरो! देखो, जैसे आपोमय से स्नेह होता है वह स्नेह को जान करके अपनी मानो पिपासा को शांत कर देता है।

ये है बेटा! आज का वाक् मैं विशेष चर्चा न करता हुआ विचार यह कि मुनिवरो! परमपिता परमात्मा का जगत् बड़ा अनन्तमयी है। परमात्मा एक अलौकिक है, अभ्योदय होने वाले है। बेटा! उस परमपिता परमात्मा की महती अनन्तता के ऊपर विचार—विनिमय करते हुए, इस संसार सागर से पार हो जाये ये हे बेटा! आज का वाक् अब समय मिलेगा, तो शेष चर्चाएँ कल प्रकट करेंगे। आज का वाक समाप्त अब वेदों का पठन—पाठन।

ओ३म् देवाः रथं आभ्यां वायाः रथं मा नाः
ओ३म् तन्वायत्वामाहम् प्रभुः सर्वः
तनु गायन्त्वा मनु द्यौ सर्वाः

मौलिक प्रकाश

18.1.89
खेडी, मेरठ

जीते रहो,

देखो, मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भाँति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन—पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है। जिस पवित्र वेद वाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी है और उनका ज्ञान और विज्ञान भी अनन्तमयी

माना गया है और जितना भी ये जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है। उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में वे परमपिता परमात्मा दृष्टिपात आते रहते हैं।

क्योंकि ये जो जगत है ये दो प्रकार का माना गया है एक जड़ है, तो दूसरा चैतन्य है। परन्तु विचार–विनिमय करने के लिए यह है कि वह परमपिता परमात्मा कितना अनूठा है और विचित्र है कि वो दोनो ही प्रकार के जगत में निहित रहते हैं। मानो जड़वत में भी, और चेतनता में भी मानो चेतना का स्वरूप, जहाँ ज्ञान और प्रयत्न रहता है और यह जो ब्रह्माण्ड है ये दो प्रकार के प्रतिनिधियों में मानो प्रायः परम्परागतों से ही भ्रमण करता रहा है और अपने में निहित रहा है परन्तु जब हम विचारते रहते हैं कि जितना भी यह पिण्डवाद है चाहे वह लोक–लोकान्तरों के रूप में हो, चाहे वह किसी भी रूप में विद्यमान हो, वे चाहे गतिवान भी हो, परन्तु उसके गर्भ में जड़वत् और वे परमपिता परमात्मा निहित है।

आत्मा का मौलिक स्वरूप

परन्तु दूसरा जगत वह माना गया जहाँ ज्ञान और प्रयत्न है। परन्तु ये आत्मा का मौलिक स्वरूप माना गया है। जहाँ ज्ञान और प्रयत्न है वहाँ चेतना है। और उस चेतना के गर्भ में भी परमपिता परमात्मा निहित रहते हैं। तो वह कितना अनूठा है, कितना अनुपम है और मानो उस परमपिता परमात्मा की हम सदैव उपासना करते रहे। हमारे यहाँ उस परमपिता परमात्मा की महती और उसका अनुपम स्वरूप हमारे समीप आता रहता है। जब हम साधना के क्षेत्र में प्रवेश करते है या साधना में परिणत हो जाते हैं तो वे परमपिता परमात्मा ही मानो देखो, अमूल्य रूप में ही विद्यमान रहते हैं और उसकी महिमा और उसकी महानता के लिए सदैव हमारा विचार–विनिमय चलता रहता है। हमारी प्रतिक्रियाएँ अपनी आभा में सदैव रमण करती रहती हैं और वे परमपिता परमात्मा मानो हमारे पुरोहित है। वे पराविद्या को प्रदान करने वाले हैं। इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा को अपना पुरोहित और अपना देवतव स्वीकार करते हुए हमें इस सागर से पार हो जाना चाहिए।

परमात्मा का अनुपम जगत

तो आओ, मेरे प्यारे! आज का हमारा वेद मन्त्र क्या कह रहा है। हम परमपिता परमात्मा की उपासना करते हुए और देव की महिमा का गुणगान गाते हुए ये विचारते रहते हैं कि हमारा वेद मन्त्र क्या कह रहा है और वेद मन्त्र हमें किस मार्ग के लिए प्रेरित कर रहा है क्योंकि संसार में जितना भी प्राणी मात्र है वह सृष्टि के प्रारम्भ से बेटा! देखो, प्रेरित होता रहा है। और किसी न किसी आभा में वो प्रेरणा को प्राप्त करता हुआ इस संसार में रत रहा है। तो आओ, मुनिवरो! देखो, आज हम अपने में प्रेरणा को प्राप्त करते हुए बेटा! उस परमपिता परमात्मा के अनुमप जगत में मानो उसकी आभा में सदैव रमण करते हुए हम इस सागर से पार हो जाए। ऐसी हमारी मानो कल्पना और विचारधारा परम्परागतों से रही है।

आओ, मुनिवरो! देखो, आज का हमारा वेद मन्त्र उस परमपिता परमात्मा की महिमा का वर्णन कर रहा है और परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान में रत हो रहा है। ये तो तुम्हें प्रतीत है कि प्रत्येक वेद मन्त्र में दोनो प्रकार के ज्ञान और विज्ञान की प्रायः चर्चाएँ होती रहती है क्योंकि प्रत्येक वेद मन्त्र में जब हम ज्ञान और विज्ञान की उड़ाने उड़ते रहते है तो परमपिता परमात्मा हमारा ज्ञान और विज्ञान का स्रोत माना गया है। मानो सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर बेटा! वर्तमान के काल तक नाना विज्ञानवेत्ता हुए हैं। नाना विज्ञानवेत्ता होने की वृत्तियों में, मानो देखो, कोई विज्ञानवेत्ता ऐसा नहीं हुआ है, जो परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को सीमाबद्ध कर सकें। क्योंकि वह सीमा से रहित है, सीमा में आने वाले नहीं है। तो इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा को सर्वोपरी विज्ञानवेत्ता स्वीकार करते रहते हैं और विज्ञान की आभा में सदैव रत रहते हैं। तो मुनिवरो! देखो, जितना भी अणु और परमाणुवाद वह मानो देखो, सर्वत्र परमपिता परमात्मा के गर्भ में निहित रहता है।

तो आज हम उस परमपिता परमात्मा की महती और अनन्तता के ऊपर विचार–विनिमय करते रहें। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनुपम है और वह देवत्व है और वे देवत्व को प्राप्त कराने वाले है। तो इसीलिए हम परमपिता परमात्मा की महिमा का सदैव गुणगान गाते रहें।

परमात्मा का राष्ट्र

तो आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना न देता हुआ, आज मैं कुछ ऋषि मुनियों के समीप तुम्हें ले जाना चाहता हूँ जहाँ ऋषि–मुनि अपनी स्थलियों में विद्यमान होकर के नाना प्रकार की उड़ानें उड़ते रहे हैं। नाना प्रकार की आभाओं में रत रहे हैं। तो आओ, मुनिवरो! देखो, आज मैं तुम्हें देखो, ऋषि–मुनियों के क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ जहाँ प्रत्येक मानव नाना प्रकार की उड़ाने उड़ता रहता है और विचारता रहता है कि हम उस परमपिता परमात्मा के राष्ट्र में आएँ हैं तो क्यों आए हैं? यह विचारते रहते हैं तो मेरे प्यारे! देखो, नाना प्रकार की विचारधारा ऋषि–मुनि अपनी प्रकट करते रहें हैं। मेरे प्यारे! देखो, यहाँ सबसे प्रथम तो प्रत्येक मानव का एक ही लक्ष्य रहता है कि हम मृत्यु में, हम अन्धकार में न चले जाये। मानो देखो, मृत्यु को जानने के लिए और अंधकार से पृथक् होने के लिए मानो प्रत्येक मानव परम्परागतों से ही अन्वेषण करता रहा है, अनुसंधान करता रहा है। तो मुनिवरो! देखो, प्रत्येक मानव यह चाहता है कि मेरी मृत्यु नहीं होनी चाहिए। तो मुनिवरो! देखो, इस मृत्यु से विजय होने के लिए नाना ऋषि–मुनियों का समाज समय–समय पर बेटा! एकत्रित होता रहा है और उनमें यह विचार–विनिमय होता रहा है कि मानो मृत्यु को प्राप्त नहीं होना चाहिए।

माता की व्याकुलता

एक मेरी प्यारी माता व्याकुल हो रही है। मानो देखो, एक दार्शनिक, एक महान पुरुष उसके समीप जाता है और माता से कहता है कि हे माता तू व्याकुल क्यों हो रही है? और वो कहता है कि मेरा पुत्र मृत्यु को प्राप्त हो गया है। परन्तु देखो, वह दार्शनिक कहता है कि हे माता! मैं कुछ जानना चाहता हूँ, ये शरीर तेरा पुत्र है या आत्मा तेरा पुत्र है? परन्तु माता मौन हो गई और अपने में ये विचारने लगी कि यदि मै शरीर को अपना पुत्र कहती हूँ तो शरीर तो ज्यों का त्यों निहित है। परन्तु यदि मैं आत्मा को अपना पुत्र कहती हूँ तो आत्मा किसी काल में विनाशता को प्राप्त नहीं होती। तो मुनिवरो! देखो, माता मौन हो जाती है। तो विचार आता रहता है बेटा! कि हमारा जो अन्तरात्मा है। वो जो चेतन्य ज्ञान और विज्ञान से जो मानो देखो, वृत्तियों से वृत्त और परमपिता की परमात्मा महती में सदैव लगा हुआ है। हम उस आत्मा को जानने का प्रयास करें।

मृत्युंजयी

तो बेटा! इस सम्बन्ध में नाना प्रकार के विचार हमारे मसीप आते रहते है। ऋषि–मुनियों का समूह विद्यमान होकर के ये विचारता रहता है कि मृत्यु से विजय होना है। मृत्यु से पार होना है। क्योंकि प्रत्येक मानव परम्परागतों से बेटा! नाना प्रकार के अनुष्ठान करता रहा है नाना प्रकार के यागों में परिणत रहा है। साधना में परिणत होता रहा है। प्राण के क्षेत्र में रमण करने लगता है। परन्तु देखो, उसका एक ही मन्तव्य है कि मैं मृत्यु से पार हो जाऊँ और मृत्यु मेरे समीप नहीं आनी चाहिए। तो बेटा! देखो, इस मृत्यु से विजय होने के लिए नाना ऋषिवर अपने में देखो, अनुष्ठान में लगे हुए हैं। मुझे वो काल स्मरण आता

रहता है बेटा! जब नाना प्रकार के यागों में, अनुष्ठान में मानव परिणत रहा है कि मैं मानो अपनी वृत्तियों में रत हो जाऊँ और वृत्तियों में रत होकर के, अपनी आभा, अपने प्रभु की महानता और उसके ज्ञान और विज्ञान में रत हो जाऊँ। ऐसा सदैव उसका मन्तव्य रहा है

महर्षि विभाण्डक का आश्रम

तो मेरे प्यारे! आओ, मुनिवरो! देखो, मैं आज तुम्हें महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज के आश्रम में ले जाना चाहता हूँ महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज बेटा! अपने आसन पर विद्यमान थे और महर्षि विभाण्डक मुनि ने ये घोषणा की, कि आओ, देखो, ऋषि–मुनियों को ये निमंत्रित किया कि आज हम मृत्यु से विजय होने के लिए मानो देखो, कुछ विचार–विनिमय करने के लिए तत्पर हैं। तो मेरे पुत्रो! मुझे स्मरण आता रहता है। उस सभा में विभाण्डक मुनि के आश्रम में बेटा! देखो, वैशम्पायन और महर्षि व्रेतकेतु और मुनिवरो! देखो, ब्रह्मचारी व्रणस्सुति मुनिवरो! कवन्धी और सुकेता और मुनिवरो! देखो, महर्षि भारद्वाज, महर्षि रोहिणीकेतु मुनिवरो! महर्षि प्रवाहण, महर्षि शिलक, महर्षि दालभ्य मेरे पुत्रो! देखो, नाना ऋषियों का एक समाज एकत्रित हुआ, उनमें ब्रह्मवेत्ता भी थे, ब्रह्मनिष्ठ भी थे और ज्ञान और विज्ञान की उड़ाने उड़ने वाले भी थे।

तो मेरे प्यारे! देखो, महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज ने एक वेद मन्त्र का उद्‌गीत गाया। उन्होंने कहा–ये वेद मन्त्र है और वेद मन्त्र कहता है मृत्युंजयं ब्रह्माः व्रहे सम्भवाः वायुः रेवकृतां ब्रह्मणे वृतं देवोः मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने वेद मन्त्र का उद्‌गीत गाया और ऋषि कहता है हे ब्रह्मवेताओं! तुम इसलिए एकत्रित हुए हो कि वेद मन्त्र कहता है कि हम सब मृत्यु से पार होना चाहते हैं और मृत्यु है क्या? उसके सम्बन्ध में विचार–विनिमय करना है।

प्रकाश के लिए संसार

तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि–मुनि अपनी–अपनी स्थलियों पर विद्यमान है। तो मेरे प्यारे! देखो उनमें कोई मध्यस्थ बना, कोई विचारवेत्ता बना और विचारवेत्ता बनकर के बेटा! अपने विचारों में रत हो गए और ये विचारने लगे कि ये जो मृत्यु का प्रसंग हमारे समीप आता है ये बारम्बार क्यों आता है इसका कारण क्या है? तो मुनिवरो! देखो, इससे ये प्रतीत होता है कि यह जो संसार हमें दृष्टिपात आ रहा है ये अन्धकार में है, मानो देखो, ये प्रकाश के लिए, यहाँ विश्राम करने वाला प्राणी प्रकाश के लिए ही मानो देखो, गमन करना चाहता है और यह विचारना चाहता है कि मैं प्रकाश में चला जाऊँ। तो मेरे प्यारे! देखो, उस सभा में भ्रमण करते हुए कहीं से बेटा! देखो, महर्षि कागभुषुण्डी जी और महर्षि लोमश मानो देखो, दोनों ऋषि भ्रमण करते हुए मेरे पुत्रो! देखो, उस सभा में आ पहुँचे। ऋषिवरों ने बड़ा स्वागत किया और विचारने लगे। परन्तु महर्षि लोमश और महर्षि कागभुषुण्डी जी से यह प्रश्न किया गया कि–महाराज! ये नोदा मन्त्र अभी–अभी उद्‌गीत गाया है विभाण्डक जी ने मानो इसका कुछ निर्णय किया जाये।

तो मेरे प्यारे! देखो, महर्षि कागभुषुण्डी जी ने कहा कि भई, मेरे विचार में तो ये आता है कि जिस आभा के लिए, जिस जिज्ञासा में तुम विद्यमान हो मानो देखो, वह तुम्हारा पूर्ण रूपेण, पूर्ण न हो सकेगा। मेरे प्यारे! देखो, उसमें महर्षि प्रवाहण ने कहा प्रभु! ऐसा क्यों? उन्होंने कहा ऐसा इसलिए क्योंकि ये जो मृत्यु है ये ऐसा प्रसंग है जो प्रत्येक प्राणी के समीप रहता है। परन्तु देखो, शरीर का जाना बहुत अनिवार्य है। परन्तु उसके पश्चात भी ये प्रसंग बना ही रहता है। क्योंकि जब तक हम परमपिता परमात्मा की महती को प्राप्त नहीं कर लेते। इसलिए परमपिता परमात्मा की महती को प्राप्त करो और प्रकाश में चले जाओ। परन्तु अन्धकार तुम्हारे से दूरी हो जायेगा।

तो मेरे प्यारे! देखो, इस आभा में जब कागभुषुण्डी जी ये वाक् उच्चारण किए तो सब ऋषि–मुनियों के विचारो में प्रणा व्रहे उनके हृदयों में हृदय ग्राही हो गया और उन्होंने ने कहा प्रभु! वाक् तो यथार्थ है।

आत्म चिन्तन की अनिवार्यता

विचार केवल यह है कि आज हम बेटा! देखो, उस परमपिता परमात्मा की महती का गुणगान गाते हुए आत्म चिंतन में लग जाये। क्योंकि आत्मा का विनाश नहीं होता है इसलिए आत्म चिंतन में लगना ही बहुत अनिवार्य है तो बेटा! देखो, उन्होंने अपना यह निर्णय देकर के वे अपने आसन पर विद्यमान हो गए।

महर्षि लोमश जी ने कहा–भई, ये जो संसार हमें दृष्टिपात आ रहा है। ये संसार मानो इसी प्रकार दृष्टिपात आता रहेगा और तुम इसको दृष्टिपात करते रहोगे और इसके ज्ञान और विज्ञान की उड़ाने उड़ने लगोगे। परन्तु देखो, इसका कोई अन्तिम चरण प्रतीत नही होता। तो बेटा! इतना वाक् उच्चारण करके उन्होंने कहा कि मृत्यु उसके पश्चात् भी उसके गर्भ में निहित रहती है। तो मेरे प्यारे! देखो इस आभा को उच्चारण करने के पश्चात, इन विचारों को देकर के वह अपने आसन पर विद्यमान हो गए।

मेरे प्यारे! देखो, वहीं कहीं से भ्रमण करते हुए बेटा! देखो, उद्यालक गोत्र में जन्म लेने वाले शिकामकेतु उद्यालक और मुनिवरो! देखो, उनकी पत्नी शकुन्तका भ्रमण करते हुए उस सभा में आ पहुँचे। मेरे प्यारे! देखो, सब ऋषि–मुनियों में मानो देखो, हर्ष की सीमा न रही। क्योंकि ऋषि का आगमन होना, वह भी उद्यालक गोत्र में जन्म लेने वाले ऋषिवर, जो विज्ञान की उड़ानें उड़ने वाले, साधना में परिणत होने वाले और वह इस विज्ञान को मानो देखो, आध्यात्मिकवाद को भी गम्भीरता से उसका मनन करने वाले थे। तो मेरे प्यारे! देखो, शिकामकेतु उद्यालक मुनि महाराज और उनकी देवी मानो देखो, उनके आसन पर विद्यमान हो गए। विद्यमान होने के पश्चात् महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज और मुनिवरो! देखो, महर्षि वैशम्पायन दोनों ने उनसे कहा–कहो, भगवन्! आज तो आपने बड़ी अनुपम कृपा की है जो मानो देखो, इस आसन पर तुम्हारा आगमन हुआ है। हे प्रभु! हम मृत्यु को जानना चाहते हैं। और मृत्यु के ऊपर विचार–विनिमय करने के लिए आएँ हैं।

मेरे प्यारे! देखो शिकामकेतु उद्यालक मुनि बोले–कि तुम्हें यह प्रतीत है विभाण्डक जी कि संसार में इस मृत्यु के विषय को तुम लेते ही क्यों हो? क्योंकि सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर के मानव इसके ऊपर विचार–विनिमय करता चला आया है और विज्ञान की उड़ानें उड़ता चला आया है। जब मानो देखो, तुम्हें यह प्रतीत है कि मेरी जो दिव्या है, यह विद्यमान है। इनके हृदय में मानो देखो, यह जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि मैं उस वाक् मैं रमण करना चाहती हूँ जिससे मानो अन्धकार में न रहूं और मैं उस ज्ञान और विज्ञान में रत होना चाहती हूँ तो मानो देखो, हम दोनो ने बारह–बारह वर्ष तक के अनुष्ठान किए, परन्तु देखो, ज्ञान और विज्ञान की उड़ानें उड़ते रहे और ज्ञान और विज्ञान की उड़ान उड़ने से हमने मानो देखो, नाना प्रकार के यागों में परिणत हुए मानो देखो, याग भी कई प्रकार के माने गए हैं। जब वैदिक साहित्य में पहुँचे वैदिकता में परिणत हुए तो मानो उसमें, नाना प्रकार के यागों का चलन है। कहीं वाजपेयी याग का वर्णन है, कहीं अग्निष्टोम याग का वर्णन है। कहीं मानो अश्वमेघ याग का वर्णन है कहीं अजामेघ है, कहीं कन्या याग है कहीं मानो देखो, रूद्र याग है, ब्रह्मयाग है, विष्णु याग है। भिन्न–भिन्न प्रकार के यागों का चलन है। इन यागों में जब परिणत होते हैं तो एक–एक वेद मन्त्र में यागों की प्रतिभा मानी गई है।

परन्तु देखो, उसके ऊपर भी अनुसंधान किया गया और विचारने से ये प्रतीत हुआ कि वह एक–एक अनुष्ठान हमने इसी प्रकार का किया और उसके करने का परिणाम यह हुआ कि हमने उन यागों को जानने के पश्चात् मानो देखो, हम विज्ञान के क्षेत्र में चले गए, और विज्ञान में परिणत हो गए। समय एकान्त स्थली में, हिमालय की कन्दराओं में मानो कुछ साकल्य एक एकत्रित करने पहुँचे। जब चरू को हमने एकत्रित किया तो उस समय देवी ने ये

कहा–कि प्रभु! यह जो साकल्य है जैसे यह अग्नि में भस्म हो जाता है और संसार को सुगन्ध देता है। इसी प्रकार मानव को भी ऐसे क्रियाकलाप करने चाहिए जिससे वह स्वयं भस्म होकर के भी सुगन्धि देता रहे, और वह सुगन्ध को ग्रहण करने वाले प्राणी अपने में मानो आत्मवेत्ता बनते रहें, और आत्मा का चिंतन करते रहें प्रभु! और विज्ञान में रत होते रहें।

ब्रह्माण्ड की आभा में शिशु

तो मेरे प्यारे! देखो, शिकामकेतु उद्यालक मुनि कहते है कि प्रभु! हमने जब उस साकल्य से यज्ञ किया तो मानो देखो, उसके पश्चात हम विज्ञान के क्षेत्र में प्रवेश हो गए, और विज्ञान के उस क्षेत्र में पहुँचे जहाँ अग्नि के परमाणु जब आपो के, जल के परमाणु से जब मिलान करके मानो देखो, उसमें ब्रह्माण्ड की आभा में, मानो रत हो जाता है। मानो देखो, हमने यंत्र का निर्माण किया और यंत्र में एक परमाणु को हमने विभक्त किया, और परमाणु की विभक्त करके विचारा कि हमारा जो वायुमण्डल है या ब्रह्माण्ड है ये कैसा है? तो मानो देखो, उस परमाणु का विभाजन करते ही जितना यह ब्रह्माण्ड है ये ब्रह्माण्ड मानो दृष्टिपात आने लगा। ये ब्रह्माण्ड बड़ा अनन्त है मानो देखो, उसको कोई भी वैज्ञानिक सीमाबद्ध नहीं कर सका। कितना विशाल यह विज्ञान है, कितना मानो देखो, यह ब्रह्माण्ड है। माता के गर्भ स्थल में जब शिशु और शिशु के अंग संग मानो देखो, ब्रह्माण्ड की एक आभा में वह शिशु विद्यमान हो जाता है।

तो मेरे प्यारे! देखो, इस प्रकार का विज्ञान, शिकामकेतु उद्यालक मुनि बोले कि हे भगवन्! जब हम इस प्रकार के परमाणुवाद में, ब्रह्माण्ड को दृष्टिपात करने लगे, तो हमें एक–एक वेद का मन्त्र, हमारे स्मरण आने लगा और मानो देखो, उसके ऊपर हम विचार–विनिमय करने लगे। तो मुनिवरो! देखो, विचार क्या, शिकामकेतु उद्यालक ने कहा कि यह जो मृत्यु का प्रसंग है मानो देखो, यह परमाणुवाद से भी जाना जाता है। परमाणु का ह्रास नहीं होता। मानो यह परमाणु विभक्त होने के पश्चात ज्यों का त्यों बना रहता है और मानो देखो, हमारा शब्द, हमारी ज्योतियाँ वह अन्तरिक्ष में, द्यौ में प्रवेश होकर के मुनिवरो! देखो, वे चित्रों के रूप में भ्रमण करती रहती है।

प्रकाशमय जीवन

तो मुनिवरो! देखो, यह वाक् महर्षि शिकामकेतु ने वर्णन किया तो ऋषि मुनि बेटा! अपने में मौन हो गए और ये विचारने लगे कि ये विज्ञान तो बड़ा अनन्तमयी माना गया है। मेरे पुत्रो! देखो, प्रत्येक मानव अपने विज्ञान में सदैव रत रहा है और मृत्यु से विजय वही प्राणी पार होता है जो मुनिवरो! देखो, परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान में लगा रहता है। वो सूक्ष्म मानो देखो, अनुभूति करने लगता है वह सूक्ष्म से सूक्ष्म अनुभूति जब करने लगता है तो अपनी आत्मा में ही अपने को दृष्टिपात करता है। अपने प्रभु को दृष्टिपात करता है और बाह्य जगत और आन्तरिक जगत दोनों का जब समन्वय हो जाता है तो मुनिवरो! देखो, मानव अपने अंधकार से दूरी हो जाता है, प्रकाश में चला जाता है। और वह प्रकाशमय होकर के बेटा! अपने जीवन को धन्य स्वीकार करता रहता है।

तो आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा तो तुम्हें प्रकट करने नहीं आया हूँ शिकामकेतु उद्यालक बड़े विचित्र रहे हैं। मेरे प्यारे! देखो, वह अपने आसन पर विद्यमान हो गए। इतने में महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज उपस्थित हुए और भारद्वाज मुनि महाराज ने जब अमृते ब्रह्माः विभाण्डक मुनि से कहा कि प्रभु! आपने यह जो सभा उपस्थित की है मानो देखो, इसके मूल में यही है कि हम मृत्यु को जानना चाहते है या मृत्यु से पार होना चाहते हैं। तो विभाण्डक मुनि बोले कि मृत्यु को जानना चाहते हैं। और उससे पार होना भी चाहते है।

तो महर्षि ने कहा ब्रह्मणे व्रतां देवाः ऋषि बोले, महर्षि भारद्वाज मुनि बोले कि हे ऋषिवर! तुम्हे यह प्रतीत है कि ये जो हम सब उपस्थित हुए है। हम मृत्यु से पार भी होना चाहते, हम मृत्यु को जानना भी चाहते हैं। मानो देखो, जानना तो वह होता है जब मुनिवरो! देखो, मानव अपने कर्तव्य का पालन करने लगता है। और कर्तव्यवाद में जब रत हो जाता है वह आत्मा की प्रेरणा के आधार पर, प्रेरणाओं को प्राप्त करके अपनी क्रियाओं में जो रत रहता है। वह मेरे प्यारे! देखो, मृत्यु स्वरूप आत्मा के स्वरूप में रत हो जाता है। मानो देखो, जैसे उन्होंने कहा कि मृत्युंजयं ब्रह्माः लोकां वायु सम्भवः ब्रहे कृतं द्यौलोकाः ऐसा उन्होंने द्यौलोक का वर्णन किया। उन्होंने कहा–हे भगवन्! देखो, मेरी विज्ञानशाला में या हमारे विद्यालय में ब्रह्मचारी अध्ययन करते रहते हैं तो ब्रह्मचारी ये कहते हैं कि प्रभु! हमें अंधकार नहीं चाहिए, हमें प्रकाश चाहिए हमें कर्तव्यवाद चाहिए। जैसे मेरी प्यारी माता के गर्भस्थल में मानो हम जैसे शिशु विद्यमान रहते है। तो माता उनका पालन करने में लगी रहती है और पालन करना, कर्तव्यवाद में लाना ही उस माता को ऊर्ध्वगति में ले जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, माता अपने में ममत्व को धारण कर लेती है। तो इसी प्रकार जब हम मृत्यु की आभा ब्रह्मे कृतम् मुनिवरो! देखो, वह उसका कर्तव्यवाद है। वह उसकी मानवता है, वह उसका मानवीय दर्शन कहलाता है।

आन्तरिक जगत

तो मेरे प्यारे! माता अपने गर्भ के रहस्यतम को नहीं जानती। परन्तु जब वो जान लेती है तो वह प्रभु के क्षेत्र में चली जाती है। जैसे ये जानती है कि मेरे गर्भ में मेरा जो शिशु है वह कैसे पनप रहा है? कैसे मानव जीवन सत्ता को पा रहा है? तो माता मानो देखो, प्राण के समीप जाती है। मन को लेकर के प्राण के सहित प्राण में जब रत हो जाती है तो प्राण और मन दोनो को एक सूत्र में लाकर के वो आंतरिक जगत में प्रवेश कर जाती है। जब वह आंतरिक जगत में मानो देखो, अपने में अनुभव करती है। अहो ये प्राण सत्ता तो मानो अपनी आभा में निहित रहती है मन सत्ता भी इसी प्रकार रहती है परन्तु शिशु के अंग संग तो सब देवता विद्यमान रहते है। कोई मानो अमृत दे रहता है कोई प्रकाश दे रहा है, कोई उष्णता दे रहा है कोई मानो देखो, प्राणं कोई अवकाश दे रहा है। तो मानो देखो, देवत्तव, निर्माण करने वाला निर्माण कर रहा है। इसमें मेरी कोई सत्ता नहीं। जब माता अपने में यह विचारने लगती है कि मेरे में तो मानो देखो, प्रभु ही तो रचनाकार है। वह रचना कर रहा है और देवता मानो देखो, मेरे शिशु के अंग संग विद्यमान है। वे निर्माण मानो देखो, कोई अमृत में देखो, जैसे चन्द्रमा अमृत देता है, सूर्य प्रकाश देता है और मुनिवरो! देखो, अपोमयी ज्योति देकर के और देखो, अंग संग ओढन और आसन बने हुए है और मुनिवरो! देखो, वायु प्राण दे रहा है। अग्नि ऊष्ण बना रहा है और अंतरिक्ष अवकाश दे रहा है।

विवेक की उत्पत्ति

वाह रे मेरे प्रभु! तू कितना विज्ञानवेत्ता है। परन्तु देखो, निर्माण कर रहा है देवता अंग संग है। मेरी भोली माता उन देवताओं से वंचित रहती है और जब माता इसको जान लेती है तो मानो देखो, माता को विवेक हो जाता है। कर्तव्यवाद में परिणत हो जाती है कि निर्माण करने वाला कोई और है। तो मुनिवरो! देखो, ये प्रभु की जो सृष्टि, जो प्रभु की रचना का जो कर्म है। सृष्टि की जो परम्पराएँ है इनको विचारने से मुनिवरो! देखो, विवेक की उत्पत्ति हो जाती है और विवेक में मुनिवरो! देखो, प्रकाश और उग्रक्रिया बन जाती है और अंधकार नष्ट हो जाता है और प्रकाश में वो रत हो जाता है।

विवेक में प्रकाश

तो मेरे प्यारे! आज मैं दूरी न चला जाऊँ, यह बड़ा गम्भीरतम रहस्य का उदगीत गाया जा रहा है। तो आओ, मेरे प्यारे! विचार—विनिमय क्या, महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने कहा कि हमारी विज्ञानशाला में मैंने यंत्रों के द्वारा भी इसको दृष्टिपात किया है। हे विभाण्डक! हे ऋषियों! मानो देखो, मृत्यु ब्रह्मणाः वृतेः देवः वेदां ब्रह्माः व्रतो देवाः मानो देखो, देवता यदि तुम्हें बनना है तो अंधकार को त्यागना होगा। अज्ञान को त्यागना होगा। प्रकाश में जाना होगा। जैसे रात्रि का अंधकार, चन्द्रमा में रत हो जाता है। इसी प्रकार इस संसार का अंधकार जब मानव के विवेक में रत हो जाता है तो बेटा! विवेक में प्रकाश ही प्रकाश रह जाता है।

तो बेटा! आज का हमारा वाक् क्या कह रहा है कि हम परमपिता परमात्मा की महती को और मानो देखो, उसमें मृत्यु को दृष्टिपात करने वाले अज्ञान में न जाये, हम प्रकाश में चले जाये। तो मेरे प्यारे! देखो, विचार—विनिमय क्या, आज का हमारा वाक् क्या कह रहा है कि हम परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाते हुए, इस संसार सागर से पार हो जाये और इस मानो देखो, मोह अमृतं ब्रह्माः लोकां।

तो महर्षि भारद्वाज मुनि ने कहा—कि प्रभु! एक समय मानो देखो, मेरे द्वारा मेरी विज्ञानशाला में, विद्यालय में कुछ ऋषि—मुनियों का आगमन हुआ और उन ऋषि मुनियों में महर्षि गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज की अध्यक्षता में बहुत से ऋषि पहुँचे। तो मानो देखो, मैंने उन्हें कहा, ये संकेत दिया कि मेरी विज्ञानशाला में, यज्ञशाला में याग करो। याग में विद्यमान हो जाओ। तो जब वे याग करने लगे तो मैंने बहुत समय, मानो देखो, मैंने महर्षि तत्त्व मुनि महाराज के द्वारा एक यंत्र को जाना था। उस यंत्र में यह विशेषता रही कि यजमान जैसे याग कर रहा है। यजमान जैसे स्वाहा हो रहा है होताजन, अध्वर्यु, उद्गाता मानो जैसे स्वाहा उच्चारण कर रहे है। अहाः जैसे वो साकल्य अग्नि में परिणत हो रहा है। ऐसे ही स्वाहा शब्द भी परिणत हो रहा है और वह देखो, एक यंत्र मैंने जाना था। उस यंत्र के माध्यम से मानो देखो, उनके चित्र मुझे द्यौलोक में जाते हुए दृष्टिपात् आने लगे।

ब्रह्माग्नि

तो मानो देखो, यंत्र मैंने स्थित कर दिया और उन्होंने जैसे याग का प्रारम्भ किया तो उन्होंने अग्नि की धाराओं पर जब वे शब्द, साकल्य, अग्नि के मुख में परिणत करके मानो देखो, अग्नि की धाराओं पर जब अपने शब्द को विद्यमान कर दिया तो वह शब्द व्यापक बन करके द्यौलोक में प्रवेश कर गया। तो मानो देखो, इस प्रकार का विज्ञान, यज्ञशालाओं में मानो देखो, हमने स्थित किया। और वह सर्वत्र ऋषिवर यह जान गए कि हमारा जो शब्द है वो अन्तरिक्ष में है और वह अग्नि की धाराओं पर है। मानो देखो, वही अग्नि ब्रह्माग्नि बन करके जब प्रत्येक मानव की विचारधारा उसमें परिणत हो जाती है द्यौलोक में क्या, मानो देखो, अन्तरिक्ष में, मृत्यु लोकों में ओत—प्रोत हो जाती हैं और वहाँ विद्यमान होकर के उनके चित्र उनकी आभा उन्हें प्राप्त होती रहती है।

ज्ञान रूपी प्रकाश

तो मेरे प्यारे! देखो, इस प्रकार जब ऋषि ने वर्णन किया तो भारद्वाज मुनि बोले—कि हे भगवन्! मैंने आचार्यो के समीप इस प्रकार की विज्ञानशालाओं में अनुसंधान किया हैं और ये विचारा है कि जब ये शब्द नित्य है और शब्द द्यौ—लोक में प्रवेश होता है। तो इसलिए मानव को शब्द यथार्थ उच्चारण करना चाहिए। क्योंकि वो शब्द उसी को प्राप्त होना है, उसी में आना है।

ये है बेटा! आज का वाक्। सभा में बेटा! देखो, इसके पश्चात् यह विचारने में आ गया कि मृत्यु को विजय करना है। तो ज्ञान, विज्ञान और विवेक में परिणत होकर के बेटा! प्रभु की उपासना में रत होना है और प्रकाश में जाना है, अंधकार को त्यागना है। ज्ञान का नाम प्रकाश है।

मुनिवरो! देखो, अज्ञान का नाम मृत्यु है। इसलिए मृत्यु को त्यागने का प्रयास करो और मुनिवरो! देखो, प्रकाश में जाने का प्रयास किया जाए, अंधकार को त्यागना, क्योंकि प्रभु का जो राष्ट्र है जब हम ये स्वीकार कर लेते है कि सब प्रभु का राष्ट्र है। तो बेटा! प्रभु के राष्ट्र में मानो देखो, अंधकार नहीं होता। वहाँ मुनिवरो! देखो, जरा नहीं होता, वहाँ मृतं ब्रह्मे बेटा! सदैव प्रकाश रहता है और जहाँ प्रकाश रहता है वहाँ मुनिवरो! देखो, मानव को अमृतम, आलस्य और प्रमाद नहीं होता। वहाँ सदैव प्रकाश ही प्रकाश रहता है। इसलिए अंधकार को त्यागना और प्रकाश को लाना यही हमारा कर्तव्य है। और इसी में हमें रत रहना चाहिए। इससे आगे की शेष चर्चा तो बेटा! कल ही प्रकट करूँगा। उनकी सभा का विसर्जन हो गया। अपने—अपने विचार ऋषि मुनियों ने दिए बेटा! उनके विचारों में बड़ी गम्भीरता, मानवता और विज्ञान बेटा! देखो, सर्वत्र विद्यमान है। इसी प्रकार विचार—विनिमय करके बेटा! इस सागर से पार हो जाना है। तो ये आज का वाक्, अब समाप्त, अब वेदों का पाठन—पाठन।

ओ३म् देवाः आभ्यां ऋषिमां देवं आपाः रथ ब्रह्माः वायुरथं दिव्यां आपाः
ओ३म् दधि ब्रह्माः वाचन्नमं रेवं भद्राः वायाः
ओ३म् तनु गन्धर्वः आपाः रथं आभाः

यौगिक याग

19.1.89
खेड़ी मेरठ

जीते रहो,

देखो, मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेद मंत्रों का गुणगान गाते जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा। आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रो का पठन—पाठन किया। हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेद—वाणी का प्रसारण होता रहता है। जिस पवित्र वेद—वाणी में, उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। जो परमपिता परमात्मा अनन्तमयी है और यज्ञोमयी स्वरूप है। मानो याग उसका आयतन है, उसका गृह है, उसका सदन है और वे उसी में वास कर रहे है। तो हम उस परमपिता परमात्मा, जिस परमपिता परमात्मा ने इस संसार रूपी यज्ञशाला का निर्माण किया वह निर्माणवेत्ता है, अनुपम है। तो हम ऐसे उस परमपिता परमात्मा की महती और अनन्तता के ऊपर सदैव विचार—विनिमय करते चले जाये और उसका जो रचाया हुआ यह ब्रह्माण्ड है, इसके ऊपर हम अन्वेषण करते चले जाये।

योग

क्योंकि प्रत्येक मानव का यह कर्तव्य है, कि जो परमपिता परमात्मा की सृष्टि में आया है। यह उस परमपिता परमात्मा का रचाया हुआ ज्ञान और विज्ञानमयी जगत है और यहाँ वह एक–एक प्राणी में वास कर रहा है और प्राणी–प्राणी का सहयोगी बना हुआ है। बेटा! प्राणी ही नही मानो एक–एक लोक लोकान्तर की आभा में परिणत हो रहा है। एक दूसरे में पिरोया हुआ दृष्टिपात आता है जब मैं ओत–प्रोत की चर्चाओं में या परमपिता परमात्मा का रचाया हुआ जो यौगिक जगत है जिसमें प्रत्येक मानव योगी बनने के लिए आया है। और योग उसे कहते हैं जिसमें मानवीयता और मानव दर्शन और मानव दर्शन का जो समन्वय है वह परमपिता परमात्मा से सम्मिलन हो जाये। तो उसका नाम योगी कहलाता है।

तो हमारे यहाँ ये जो जगत् दृष्टिपात आ रहा है। ये एक प्रकार का जगत् योगी है। और इसमें प्रत्येक मानव अपनी ऊँची–ऊँची उड़ाने उड़ने के लिए आया है। मैंने तुम्हें कई कालों में वर्णन करते हुए कहा कि हमारे ऋषि–मुनि एक–एक वेद मन्त्र का बेटा! देखो, अन्वेषण करते रहते थे और ऊँची–ऊँची उड़ानें उड़ते रहते थे। और ज्ञान और विज्ञान की आभा में सदैव रत रहें हैं। आज मैं विज्ञान के क्षेत्र में तुम्हें ले जाना नहीं चाहता हूँ मैं उन मालाओं में जाना नहीं चाहता हूँ जो अनुपम मालाएँ हैं और जिन मालाओं की धारण करने वाला बेटा! ये जगत अपने को ब्रह्म में और ब्रह्म को अपने में पिरो लेता है।

मानव हृदय की आभा

तो आओ मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें उस क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ जहाँ ऋषि–मुनि बेटा! देखो, याग के ऊपर अपना विचार–विनिमय करते रहें हैं। क्योंकि हमारा कर्तव्य है कि हम याज्ञिक, यौगिक और मुनिवरो! देखो, एक अनुपम आभा में रमण करने वाले बने। तो मुनिवरो! देखो, आज का हमारा वेद मन्त्रः हमें एक अनूठी प्रेरणा दे रहा है और हम उस प्रेरणा में जाना चाहते हैं जिस प्रेरणा को पान करते–करते बेटा! एक मानव अपने एक विचित्र अनुष्ठान में लग जाता है। और वह अपने वायु मण्डल को पवित्र बनाता है। प्रत्येक मानव के हृदय की आभा मानो वो परमपिता परमात्मा के हृदय से मिलान करना चाहती है और ये विडम्बना बनी ही रहती है परन्तु एक समय साकार रूप धारण कर लेती है।

आओ, मेरे प्यारे! देखो, आज मैं तुम्हें एक ऐसे क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ जहाँ बेटा! ऋषि मुनि विचार–विनिमय में करते हुए बेटा! अपनी बड़ी ऊँची उड़ानें और विचार देते रहे हैं। आओ मेरे प्यारे! आज का हमारा एक वेद मन्त्र आया है। जिस वेद मन्त्र में इस ब्रह्माण्ड को एक यौगिक रूप में परिणत किया है और मानो देखो, दो प्रकार का जगत् है। एक यौगिक है, एक रूढि कहलाता है तो मुनिवरो! देखो, एक रूढ़ि में तो मानव लालना, पालना करता है। इस संसार में रत हो जाता है और एक जगत बेटा! यौगिक होता है जो इस संसार को योगी के रूप में दृष्टिपात करता है। क्योंकि प्रत्येक मानव जगत में एक मानो देखो, यौगिकता में परिणत हो जाता है।

तो आओ मेरे पुत्रो! मैं तुम्हें यौगिकवाद की चर्चा करने जा रहा हूँ हमारे यहाँ बड़े महापुरूषों ने अपना मुनिवरो! अनुभव दिया है। अपनी विचार धाराएँ दी हैं जैसे महर्षि उद्यालक गोत्र में शिकामकेतु उद्यालक मुनि हुए है। हमारे यहाँ उद्यालक गोत्र बहुत परम्परागतों से रहा है। इन पारम्परिक चर्चाओं में बेटा! देखो, उनमें यौगिक भी रहें हैं और परमाणु विद्या को जानने वाले भी रहे हैं। जैसे महर्षि भारद्वाज के विद्यालय में जैसे याज्ञवल्क्य मुनि के विद्यालयों में बेटा! जो क्रियाकलाप होता रहा है वह किसी ओर मानव से नही है, कोई ऋषि–मुनि ऐसा नहीं है जो उनके विद्यालयों में जा–जाकर के अनुसंधान और उनकी प्रतिक्रियाओं को दृष्टिपात न किया हो।

उदीति मुनि महाराज

बेटा! त्रेता के काल में तुम्हें स्मरण होगा, मैंने तुम्हें शिकामकेतु और देखो, ऋषियों की चर्चा तो की, परन्तु एक उदीति मुनि महाराज हुए हैं। उदीति मुनि महाराज इतने यौगिक हुए कि मुनिवरो! देखो, राजा रावण के पुत्र मेघनाद और बाली पुत्र मानो देखो, सर्वत्र प्राण विद्या का अध्ययन करते रहें हैं और प्राणविद्या इतनी विशिष्ट उनकी रही? कि वो प्राण विद्या से जैसे बेटा! एक यान में अपनी उड़ान उड़ रहा है वो कुम्भक प्राणायाम से बेटा! ऐसे अन्तरिक्ष में अपनी उड़ाने उड़ते रहते। बेटा! तुमने दृष्टिपात किया होगा। आज मैं कुछ तथ्यों का वर्णन करने जा रहा हूँ।

मेरे प्यारे! देखो, देवर्षि नारद मुनि के विद्यालयों में जहाँ महात्मा ध्रुव जैसे बेटा! देखो, विशिष्ट जो प्राणविद्या को जानने वाले रेचक कुम्भक और देखो, अमृतयागसम् और मुनिवरो! खेंचरी मुद्राएँ इत्यादियों में रमण करते बेटा! देखो, वह एक कुम्भक प्राण के द्वारा वह ध्रुव की यात्रा करते रहे। तो मेरे प्यारे! आज मैं इस सम्बन्ध में यौगिक क्षेत्र में यदि मैं तुम्हें ले जाऊँगा। तो ये संसार सर्वत्र एक यौगिक वाद में परिणत हो जायेगा।

पुण्यवाद की प्रतिभा

तो आओ मेरे प्यारे! आज का हमारा विचार क्या कह रहा है देखो, अपने में इतने क्रियाशील बनें, हम अपने को आवेश में न ले जाये क्योंकि आवेश मानव के पुण्यवाद को समाप्त कर देता है। जो भी मानव यदि अपनी आभा में रमण करना चाहता है आत्मा के समीप जाना चाहता है तो हमारे यहाँ वेद का मन्त्र ये कहता है सम्भवः प्रवाहः वेदो अस्सुतं ब्रह्मणः पुण्यादं भूतं वाचन्नमं महात्माः मेरे प्यारे! देखो, आत्मा में जो पुण्यवाद की प्रतिभा हमारे अन्तः करण में विद्यमान होती है। वह आवेशों में आते ही यौगिकवाद को लाने नही देती है। यदि यौगिकवाद में आवेश आ गया तो अन्तःकरण में जो पुण्यवाद है वो भस्म हो जाता है। तो मेरे प्यारे! आज मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा नहीं, केवल मैं तुम्हें यौगिकवाद में ले जाने के लिए आया हूँ।

आत्मा से आत्मा की चर्चा

आओ मेरे प्यारे! मैं उन ऋषि मुनियों के क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ। जहाँ बेटा! देखो, ऋषि–मुनि नाना प्रकार की विद्याएँ प्रदान करते रहें हैं। इस प्राण विद्या को जानने के लिए मुनिवरो! देखो, माता मल्दालसा के समीप जब जाते हैं। तो उनके जीवन की चर्चाएँ, जो बेटा! देखो, अपने अन्तःकरण में प्रातःकालीन प्राण और अपान को बेटा! अपान को व्यान में, व्यान को समान में और समान को मुनिवरो! देखो, उदान में परिणत करते हुए वह मेरी प्यारी माता अपने गर्भ के आत्मा से वार्ता प्रगट करती है। मानो देखो, यह प्राण विद्या हमारे यहाँ बड़ी विशिष्ट बन करके रही है। और वो यौगिकवाद में रही है। तो मुनिवरो! देखो, माता मल्दालसा अपने गर्भ के आत्मा से, शिशु से वार्ता प्रकट करती है कि हे आत्मा! तू तो अखण्ड है मानो मेरे इस गर्भ स्थल में तेरा प्रवेश क्यों हुआ है? मानो देखो, कैसे तू निरंजन रहने वाली है तेरी मृत्यु नहीं होती? तुझे मेरे गर्भस्थल में आने का कैसे अवृत्त प्राप्त हुआ है।

तो मेरे प्यारे! देखो, आत्मा से आत्मा की चर्चाएँ हो रही है। वह कहती है ज्ञानाति जन्मं ब्रह्माः लोकं ब्रह्मणे वाचप्रह्मा लोकं वृत्ति देवाः वह आत्मा कहता है जो शिशु के रूप में है। कि मैं तेरे गर्भ में इसलिए हूँ क्योंकि मैं ब्रह्मवेता बनना चाहती हूँ, इस संसार में आया हूँ। मेरे प्यारे! देखो, आत्मा से आत्मा की चर्चाएँ, ये प्राण विद्या से ही प्राप्त होती रही है। तो मेरे प्यारे! यह असम्भव है। कि जब मुनिवरो! देखो, प्राण और अपान दोनों को मिलान किया जाता है। अपान और प्राण को और प्राण को समान में और समान को मुनिवरो! देखो, व्यान में परिणत करके माता अपने गर्भ की आत्मा से वार्ता प्रकट कर रही है।

अनुपम विद्याएँ

तो मेरे प्यारे! देखो, ये विद्याएँ है ये मानो बड़ी अनुपम विद्याएँ रही है। जो माताओं के द्वार पर रही है। माताओं ने उसका अध्ययन किया है। माता कौशल्या ने, महर्षि तत्त्व मुनि महाराज के यहाँ बारह वर्ष का अध्ययन करने के पश्चात् इस विद्या को जाना। कागभुषुण्डी जी के आश्रम में भी इस विद्या का अध्ययन होता रहा है। तो मेरे प्यारे! आज मैं इस सम्बन्ध में तो कोई विशेष चर्चा तुम्हें प्रकट करने नही आया हूँ। आज मुनिवरो! देखो, मैं तुम्हें उस क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ जहाँ ऋषि मुनि परस्पर बेटा! ये चर्चाएँ करते रहे हैं। और ये मालाओं का सूत्र बनकर बेटा! उसमें ये सूत्रित होता रहा है।

महर्षि गाड़ीवान रेवक मनि का आश्रम

तो आओ, मेरे प्यारे! मुझे स्मरण आ रहा है एक समय बेटा! देखो, कुछ ऋषि मुनियों का समूह महर्षि गाड़ीवान रेवक मुनि के द्वार एकत्रित हुआ। इसमें मुनिवरो! देखो, महर्षि प्रवाहण, महर्षि शिलक, महर्षि दालभ्य और ब्रह्मचारी कवन्धी, ब्रह्मचारी सुकेता, ब्रह्मचारी यज्ञदत्ता, ब्रह्मचारी रोहिणीकेतु और मुनिवरो! देखो, सोमकेतु दद्दड गोत्रिए और मुनिवरो! देखो, वृत्तिकामुनि मुनिवरो! देखो, उद्यालक गोत्री ये नाना ऋषि–मुनियों का समाज बेटा! देखो, इसमें देखो, देवर्षि नारद और भी इत्यादि ऋषि विद्यमान थे। जिसमें महात्मा जमदग्नि व्रेतकेतु और मुनिवरो! देखो, वैशम्पायन इत्यादि मुनियों का बेटा! एक समूह, समाज जब एकत्रित हुआ तो वे गाड़ीवान रेवक मुनि के यहाँ एकत्रित हुए। तो मुनिवरो! देखो, गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज ने 105 वर्ष तक मुनिवरो! देखो, मिथ्या नही उच्चारण किया। 105 वर्ष तक मुनिवरो! देखो, वो वायु का सेवन करते रहे। 105 वर्ष तक मुनिवरो! देखो उसी काल में अन्नाद का पान न करते हुए देखो, वह वायु की आभा में रत रहते, उसके पोषक तत्त्वों को प्राप्त करते तो मेरे प्यारे! देखो, 105 वर्ष तक उन्होंने नाना प्रकार के संकल्प करते हुए अपने आत्मतत्व को जानने के लिए, अपने को मृत्यु से पार होने के लिए बेटा! वह प्रयास करते रहे और ये विचारते रहे कि मेरा जीवन, मानो देखो, मृत्यु से पार हो जाये। मेरा जीवन यौगिक बन जाये। मेरे ये मानो जो पार्थितत्व है ये प्रकाश में चला जाये, अंधकार में न रहे, तो ऐसा प्रयास वो करते रहे। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने बारह वर्ष तक बेटा! चित्त के ऊपर अध्ययन किया। जिनमें जन्म जन्मातरों की आभा दृष्टिपात आती रही है। तो मेरे पुत्रो! देखो, आज मैं इन विचारों की गम्भीरता में नही ले जाना चाहता हूँ विचार केवल ये कि गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज के यहाँ नाना ऋषि मुनियों का समूह एकत्रित हुआ। जिसमें बेटा! देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि इत्यादि भी विद्यमान थे। मेरे पुत्रो! देखो, अथर्वा गोत्र में जन्म लेने वाली व्रेती मुनि और रेंगणीवृत्तिका मेरे पुत्रो! देखो, आश्रम में विद्यमान हैं। तो विचार–विनिमय होने लगा।

तो महर्षि गाड़ीवान रेवक मुनि ने ये कहा कि हे प्रभु! आप किसलिए हमारे यहाँ, इस आश्रम को कैसे पवित्र किया है? ये मेरा कैसा सौभाग्य है जो मेरे आसन को पवित्र, आप तो मेरे अतिथि है। मेरे पुत्रो! देखो, अतिथि का अभिप्राय वह होता है। जो एक बुद्धिमान, दूसरे बुद्धिमान के गृह में बेटा! प्रवेश कर जाये। तपस्वी, तपस्वी के गृह में प्रवेश कर जाये। और वहाँ दोनो परस्पर जो विचार–विनिमय है उस विचार का एक दूसरे में आदान–प्रदान हो जाये। मेरे पुत्रो! देखो, ज्ञान और विज्ञान की चर्चाएँ तो मानो देखो, अतिथि कहलाता है। वह अतिथि रूप कहलाता है। उसको अन्नाद देना मानो देखो, उसका स्वागत करना यह उनका कर्तव्य है।

जगत की प्रतिष्ठा

तो गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज ने सब ऋषि मुनियों का स्वागत किया। और कन्दमूल देकर के उन्होंने कहा–कहो, भगवन्! मेरे आसन् को तुमने कैसे पवित्र किया? आज मेरा कैसा सौभाग्य जागरूक हो गया है भगवन्! मेरे प्यारे! देखो इसमें वृत्तिका मुनि ने कहा–कि हे प्रभु! हम इसलिए आएँ है क्योंकि हम कुछ जानना चाहते हैं। गाड़ीवान रेवक ने कहा–प्रभु! मेरे से जानना चाहते हो मानो देखो, प्रभु तो अनन्त है। प्रभु निराभिमानी है। प्रभु मानो देखो, चैतन्य है। आप प्रभु की आभा में परिणत हो जाओ। उन्होंने कहा–उसकी आभा में तो हम सब परिणत है। परन्तु देखो, हम ये जानना चाहते है। इस सम्बन्ध में ब्रह्मणे लोकां वाचप्प्रह्मि ये वेद की आख्यायिका है। वेद की आख्यायिका ये कहती है कि यह जो ब्रह्माण्ड हमें दृष्टिपात आ रहा है ये एक दूसरे में पिरोया हुआ है। तो प्रभु! हम ये जानना चाहते है कि कैसे पिरोया हुआ है, ये ब्रह्माण्ड एक दूसरे में पिरोए हुए को जानना चाहते हैं?

मेरे प्यारे! गाड़ीवान रेवक बोले जैसे माता के गर्भ में मानो बाल्य पिरोया हुआ रहता है, और बाल्य में माता पिरोई हुई रहती है और माता में पितर पिरोए हुए रहते है और पितरों में आचार्य पिरोये हुए रहते है और आचार्य मानो ज्ञान और विज्ञान से पिरोये हुए रहते है। इसी प्रकार तुम भी मानो देखो, ऐसे स्वीकार करो यदि ऊर्ध्वा में जाना है तो मानो एक दूसरा जो यह ब्रह्माण्ड है। एक दूसरा जो परमाणु है वह एक दूसरे में पिरोया हुआ है। जैसे पृथ्वी आपो में है और आपो मानो अग्नि में है, अग्नि वायु में है, और वायु अन्तरिक्ष में है और अन्तरिक्ष महत्तत्व में पिरोया हुआ है। मानो देखो, ये सर्वत्र ब्रह्माण्ड एक दूसरे में पिरोया हुआ ही तो है।

मुनिवरो! देखो, ऋषि ने ये वर्णन किया तो ऋषिवर अपने में मौन हो गए। इतने में गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज से मुनिवरो! देखो, महर्षि विभाण्डक ने और वैशम्पायन ने एक स्वर में होकर के कहा कि प्रभु! हम यह जानना चाहते हैं मानं ब्रह्मे ब्रहाः ये मानो जो जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है इसकी प्रतिष्ठा कहाँ है जो और ये ओत–प्रोत हो रहा है।

चार प्रकार की सृष्टियाँ

तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने वर्णन करते हुए कहा कि ये जो जगत् हमें दृष्टिपात आ रहा है। ये नाना प्रकार की सृष्टि है। ये जो चार प्रकार का सृष्टि है मानो देखो, जैसे हमारे यहाँ स्थावर है, जंगम है, अण्डज है, श्वेदज है मानो ये चार प्रकार की सृष्टियाँ कहलाती है। इसकी तुम प्रतिष्ठा को जानना चाहते हो। तो मानो ये एक दूसरे में पिरोई हुई है। एक दूसरे में प्रतिष्ठित हो रही है। ये जो जगत्यां ब्रह्मणः लोका वायु सम्भवः मेरे प्यारे! उन्होंने कहा ये चारों प्रकार की सृष्टि है जब प्रभु ने इस संसार का निर्माण किया। तो मानो सबसे प्रथम स्थावर उसके पश्चात अण्डज और जंगम और श्वेदज चार प्रकार की सृष्टि मानो देखो, ये कहलाती है। चाहे तुम इस पृथ्वी मण्डल पर चले जाओ, चाहे तुम मंगल पर चले जाओ, चाहे बुद्ध में चले जाओ, चाहे मानो देखो, ओर भी लोक लोकान्तरों में चले जाओ ये चार प्रकार की सृष्टि तुम्हें दृष्टिपात आती रहेगी।

पृथ्वी में प्रतिष्ठा

तो मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने यह वर्णन किया तो उन्होंने कहा–प्रभु! हम इसे जानना चाहते हैं। ये कहाँ प्रतिष्ठित रहती है। ये कहाँ ओत–प्रोत हो जाती है। तो मुनिवरो! देखो, गाडीवान रेवक मुनि ने कहा–ये जो दृष्टिपात आने वाला जगत है। चारों प्रकार की जो सृष्टियाँ हैं ये पृथ्वी में ओत–प्रोत हो जाती है। मानो पृथ्वी ही इसकी प्रतिष्ठा है। इसमें गुरुत्व है, इसमें वृस्ता है इसमें वृणकेतु है नाना रूपों में मानो यह दृष्टिपात आती रहती है और यह सब मानो पृथ्वी में ओत–प्रोत हो जाती है।

आपो में प्रतिष्ठा

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने जब ये कहा तो हमने जान लिया भगवन्! और यह जो पृथ्वी है ये किस में प्रतिष्ठित रहती है? उन्होंने कहा–ये पृथ्वी मानो देखो, यह आपोमयी में ओतप्रोत हो जाती है। आपो में प्रतिष्ठित हो जाती है। आपो में ओत–प्रोत हो जाती है। मेरे प्यारे! देखो, आपो प्राण देने वाला है। आपो ही मुनिवरो! देखो, माता के गर्भस्थल में जब हम जैसे शिशु विद्यमान होते है तो यह आपो ही आसन बना हुआ है आपो ही मुनिवरो! देखो, ओढ़न बना हुआ है आपो ही पासे बने हुए हैं और इसी आपो को लेकर के यजमान अपनी यज्ञशाला में तीन आचमन करता है। मेरे प्यारे! देखो, वह आचमन करता है। वह ब्रह्माः कृतो मेरे प्यारे! देखो, माता के गर्भ में भी यजमान के समीप भी आपो, और मुनिवरो! देखो, चन्द्रमा के समीप भी आपो है। मेरे पुत्रो! देखो, एक दूसरे की आभा में परिणत हो रहा है।

आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेषता में, तुम्हे गम्भीरता में नही ले जा रहा हूँ। विचार केवल यह कि मानो देखो, यह आपो में ओत–प्रोत हो जाता है। आपो प्राण को देने वाला है। यह आसन बना हुआ है यहीं तो ओढ़न बनकर के बेटा! माता के गर्भ स्थल में देवता आते रहते है। देवता रक्षक बन जाते हैं। मेरे प्यारे! देखो ,सर्व देवता उसकी आभा में परिणत हो जाते है। मेरे पुत्रो! देखो, ऋषि ने कहा प्रभु! चलो यह भी हमने स्वीकार कर लिया। परन्तु देखो, यह आपो किसमें प्रतिष्ठित रहता है। यह आपो कहाँ रहता है?

अग्नि

मुनिवरो! देखो, उन्होंने कहा–यह आपो मानो देखो, अग्नि में प्रतिष्ठित हो जाता है। यह अग्नि मानो देखो, अपने में अग्नि कहलाती है। वो भी अग्नि है जो यज्ञशाला में यजमान के समीप मानो देखो, प्रदीप्त हो रही है। वह भी अग्नि है जो काष्ट में रहने वाली है। वह भी अग्नि है जो आपो में रहने वाली है। वह भी अग्नि है जो मानो देखो, सूर्य की ऊर्ज्वा में गमन करने वाली है। और वह भी अग्नि कहलाती है जो बेटा! देखो, वैज्ञानिको को गृह में, वैज्ञानिको की आभा में बेटा! अरबो, खरबों प्रकार की अग्नियाँ विद्यमान हो जाती है बेटा! वह भी अग्नि है जब एक परमाणु को विभाजित किया जाता है और विभाजन करके बेटा! उसमें तरंगों का प्रादुर्भाव होता है और एक–एक तरंग में बेटा! देखो, ब्रह्माण्ड दृष्टिपात आने लगता है। मेरे पुत्रो! देखो, अग्नि अपने में विचित्र और तेजोमयी कहलाती है। यही अग्नि देखो, बुद्धिमान के हृदय में ओत–प्रोत होकर के बेटा! ज्ञानरूपी अग्नि बनकर के रहती है। यही अग्नि माता के गर्भस्थल में अखण्ड बनकर के रहती है। इसमें बेटा! हम जैसे पुत्र मानो तपते रहते है और तपायमान होते रहते है। यही अग्नि है जो वनस्पतियों को तपायमान करके बेटा! परिपक्व बना देती है।

तो विचार विनिमय क्या बेटा! मैंने तो आज बड़े एक मानो देखो, अप्रतं ब्रह्माः देखो, एक मानो ब्रह्माण्ड में चला गया हूँ बड़ा विचित्र यह ब्रह्माण्ड है। बेटा मेरे प्यारे! देखो, अग्नि अपने में उष्ण बनाने वाली है। ये अग्नि के ही परमाणु है बेटा! जिसमें विद्यमान होकर के मुनिवरो! देखो, शब्द द्यौ में ओत–प्रोत हो जाता है। मानो देखो महावृत्तिका में ओत–प्रोत हो जाता है। मैंने तुम्हे कई काल में वर्णन करते हुए कहा था कि जब उद्यालक गोत्र में बेटा शिकामकेतु उद्यालक के यहाँ मुनिवरो देखो उनकी विज्ञानशाला में अग्नि के माध्यम से मानो देखो, जो उनके पितर, महापिता पड–पिता, पचासवें महापिता तक के बेटा! वो यंत्रो के द्वारा अपने पितरों का दर्शन करते रहते थे। मेरे पुत्रो! देखो, अप्रम ब्रह्माः यह अग्नि ही तो थी। मानो जिस अग्नि की धाराओं पर शब्द विद्यमान होकर के व्यापक बनकर के और एक स्थली पर शांत हो जाता।

विभिन्न लोकों में यान गमन

तो मेरे प्यारे! मैं विशेषता में वर्णन करने नहीं जा रहा हूँ। विचार केवल यह कि ऋषि ने कहा कि यह अग्नि ही तो मानो देखो, अभ्योदं प्रमाणम् मानो देखो, उस अग्नि की हमें पूजा करनी है। यही अग्नि वैज्ञानिकों को बेटा! यंत्रो में परिणत करा देती है लोक लोकान्तरों की यात्रा करा देती है। मेरी पुत्रो! देखो, मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन करते हुए कहा था मानो महर्षि भारद्वाज मुनि के यहाँ यंत्र में देखो, ब्रह्मचारी विद्यमान है। अपने यहाँ से, अपनी तरंगो से उड़ान उड़ते है। तो बेटा! देखो, पृथ्वी मण्डल से उड़ान उड़ता हैं, तो मंगल में जाता है। मंगल से उड़ान उड़ता है तो बेटा! वह वृत्तियों में, लोको में मेरे प्यारे! सबसे प्रथम चन्द्रमा में, चन्द्रमा से बुद्ध में, बुद्ध से शुक्र में, और शुक्र से मंगल में और मंगल से बेटा! देखो, व्रेतकेतु मण्डल में और व्रेतकेतु मण्डल से मुनिवरो! देखो, उड़ान उड़ता हुआ वह स्वाति नक्षत्र में और स्वाति से व्रेणकेतु में वायु वंजनत मण्डल में मेरे पुत्रो! देखो, मूल यह कि 72 लोकों का भ्रमण करते हुए यान ऋषि के आश्रम में पुनः प्रवेश कर रहा है।

तो मेरे प्यारे! देखो, ये विज्ञान की बड़ी विचित्र उड़ानें हैं आज मैं तुम्हें विज्ञान के क्षेत्र में नहीं ले जा रहा हूँ मैं उनकी वार्ता ही प्रकट कर रहा हूँ। केवल विचार–विनिमय यह मुनिवरो! देखो, जब ऋषि ने यह प्रश्न किया कि महाराज! यह तो हम आचार्यो के आश्रम में अध्ययन करते रहें है। परन्तु हम यह जानना चाहते है, हे प्रभु! देखो, यह अग्नि किसमें प्रतिष्ठित हो जाती है?

वायु में प्रतिष्ठा

उन्होंने कहा–ये जो अग्नि है यह वायु में प्रतिष्ठित हो जाती है। मानो वायु प्राण गति को देने वाला है। प्राणेश्वर कहलाता है। ब्रह्मणे वाचप्रह्म प्राणां ब्रह्मे वायुः सम्भवाः लोकाम् मेरे प्यारे! देखो, अग्नि वायु में प्रतिष्ठित हो जाती है। जहाँ वायु है, वहीं अग्नि है। मेरे पुत्रो! देखो, अपने में रत हो रही है। अपनी आभा में परिणत हो रही है अपने में ही गमन कर रही है। मेरे पुत्रो! देखो, ऋषि ने कहा–प्रभु! हम ये जानना चाहते है कि वायु की प्रतिष्ठा क्या है? उन्होंने कहा–अन्तरिक्ष है। इस अन्तरिक्ष में वायु गमन कर रहा है। मानो देखो, वैज्ञानिकों के द्वार पर जाते हैं तो तीन परमाणु प्राप्त होते है। और गति देने वाली वायु है परमाणुवाद को और जहाँ गतिवान हो रहा है उसे अंतरिक्ष कहते है।

तो मेरे प्यारे! देखो, उसमें रत होता हुआ ब्रह्मणे वासप्प्रवाहः लोकाम् वेद का आचार्य कहता है, ऋषि कहता है, वेद मन्त्र कहता है बेटा! देखो, उससे उड़ान उड़ता हुआ विज्ञान अपने में मानो देखो, सार्थकता को प्राप्त होता रहता है।

ब्रह्म की रात्रि

तो मेरे प्यारे! इसमें महर्षि प्रवाहण जी उपस्थित हुए और प्रवाहण ने कहा प्रभु! हम यह जानना चाहते हैं कि ये जो मानं ब्रह्मे महत् प्रह्मा देखो, ये जो अंतरिक्ष है ये कहाँ प्रतिष्ठित हो जाता है? उन्होंने–कहा यह महत्तत्वों में ओत–प्रोत हो जाता है। मानो देखो, महत्तत्व में यह शांत हो जाता हैं। उसे मुनिवरो! देखो, रात्रि कहते है। वह ब्रह्मा की रात्रि कहलाती है। जब वहाँ महत्तत्व में सर्वत्र ब्रह्माण्ड बेटा! अपनी एक स्थली में ओत–प्रोत होकर के और महत्तत्व में ओत–प्रोत हो जाता है। मेरे पुत्रो! देखो, ऋषि की बड़ी विचारधारा पवित्र रही है। मानो वो ध्रुवा से ऊर्ध्वा में और ऊर्ध्वा से ध्रुवा में जब उड़ान उड़ते है तो बेटा! उनकी विचारधारा और उनकी जो यौगिक उड़ानें हैं वो बड़ी विचित्र कहलाती है।

मेरे पुत्रो! देखो, सर्वत्र ऋषिवर, उनमें ब्रह्मवेत्ता, ब्रह्मजिज्ञासु और सब उपस्थित होकर के गाड़ीवान रेवक से बोले महाराज! आपने हमारे ब्रह्माण्ड का स्पष्टीकरण कर दिया है। अब हम आपसे एक प्रश्न करना ओर चाहते हैं कि भगवन्! यह जो महत्तत्व की आभा है यह किसमें ओत–प्रोत होती है जो ध्रुवा में गमन कर देती है।

विशेष विवेक

मेरे पुत्रो! देखो, यहाँ ऋषि अपने में कुछ समय मौन रहकर के बोले कि चन्द्रमा में। मुनिवरो! देखो, ध्रुवा से ऊर्ध्वा में, ऊर्ध्वा से ध्रुवा में और ध्रुवा से जो उड़ान उड़ी जाती है वो बड़ी विचित्र है। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा कि यह जो चन्द्रमा है मानो देखो, यह महत्तत्व की प्रतिभा कहलाती है। मेरे प्यारे! यह अमृत को देने वाला है। यही शून्यबिन्दु में प्रतिभा अपने में परिणत कराता रहता है। यही मेरे प्यारे! देखो, यौगिक आचार्यो के यहाँ चन्द्रमा को जो विजय कर लेते है। यौगिकजन जो चन्द्रमा को विजय कर लेते हैं उन्हें विशेष विवेक प्राप्त हो जाता है।

मेरे प्यारे! देखो, जब उन्होंने चन्द्रमा का वर्णन किया कि यह चन्द्रमा कान्ति का देने वाला है, निर्माणवर्धक है, यही मानो शीतलता देता है, यही वीरतव देता है। यही वीरागंणातव देता है। मेरे प्यारे! देखो, यही अमृत देकर के समुद्रों से और यही मुनिवरो! देखो, अमृत की वृष्टि करने वाला है। मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने ये वर्णन किया तो उन्होंने प्रश्न किया–कि महाराज! ये चन्द्रमा मानो देखो, चन्द्रमा किसमें प्रतिष्ठित हो जाता है।

ये जो सूर्य है ये ऊर्ज्वा के देने वाला है। मानो ये सूर्य अपने में अभ्योदय होने वाला है सूर्य को कहीं अदिति कहते है, कहीं उदयन कहते है, कहीं व्रक कहते है। बेटा! यदि इनकी व्याख्या करने लगे तो बेटा! समय की आवश्यकता है। विचार क्या कहीं इसे विष्णु कहते हैं कहीं मानो देखो, भास्कर कहते है। भिन्न–भिन्न रूपों से बेटा! इसे पुकारा जाता है। वर्णन किया जाता है। मानो देखो, यह चन्द्रमा सूर्य मण्डलों में ओत–प्रोत हो जाते हैं। ये सूर्य मण्डलं ब्रह्माः अक्रतं उन्होंने कहा–ये सूर्य मण्डल कहां ओत–प्रोत हो जाते हैं? उन्होंने कहा ये जो सूर्य मण्डल है यह मानो देखो, गन्धर्व लोक में परिणत हो जाते हैं। गन्धर्व के बेटा! बहुत से पर्यायवाची शब्द हैं गन्धर्व नाम बुद्धि का भी है और गन्धर्व नाम मानो देखो, मालाओं का अन्तिम मनका भी कहलाता है। जैसे हमारे यहाँ जब माला को धारण कराया जाता है तो बेटा! इस माला को तो मैं कल धारण कराऊँगा। आज तो केवल तुम्हे थे कि मानो देखो, में सम्भवः ब्रहे यह गन्धर्व मण्डल है ओर गन्धर्व मण्डल बेटा! देखो, उसमें यह सूर्य ओत–प्रोत हो जाता है। जिसका द्यौ से समन्वय रहता है द्यौ की आभा में रत रहने वाला है।

गन्धर्व की प्रतिष्ठा

मेरे पुत्रो! देखो, आगे ऋषि ने यह प्रश्न किया कि महाराज ये जो गन्धर्व है यह कहाँ ओत–प्रोत हो जाता है? उन्होंने कहा ये जो गन्धर्व है यह इन्द्रलोको में ओत–प्रोत हो जाता है। बेटा! इन्द्र, लोक को भी कहते है। इन्द्र परमात्मा को भी कहते है इन्द्र नाम राजा का भी है। इन्द्र सूर्य को भी कहते है, आत्मा का नाम भी इन्द्र है। बहुत से पर्यायवाची शब्द है बेटा! इन्द्र के। विद्युत का नाम भी इन्द्र कहा गया है। परन्तु वर्णन केवल यह है कि देखो, ये गन्धर्व इन्द्र लोकों में ओत–प्रोत हो जाते है। मेरे प्यारे! एक दूसरे में यह ब्रह्माण्ड सिमट रहा है। एक दूसरे में मानो दृष्टिपात कर रहा है। मेरे प्यारे! यौगिक जब ये दृष्टिपात करता है कि गन्धर्वः तो इन्द्र में चला गया है तो इन्द्र कहाँ चला गया है बेटा! तो वह कहता है कि इन्द्र किसमें प्रतिष्ठित हो जाता है। तो वेद का ऋषि कहता है कि ये जो इन्द्र है ये मानो देखो, प्रजापति में ओत–प्रोत हो जाता है। ये प्रजापतं ब्रह्माः व्रणं ब्रहे वाचन्नमं ब्रहे वर्धा अस्सुतं प्रजाः।

प्रजापति में प्रतिष्ठा

मेरे प्यारे! देखो, यह प्रजा में ओत–प्रोत हो जाता है। प्रजापति परमपिता परमात्मा को भी कहते हैं। बेटा! प्रजापति माता–पिता का नाम भी है। प्रजापति नाम आभालोक वर्चो में भी कहा गया है। परन्तु प्रजापति नाम प्राण को भी कहा है जिसका योगी अपने में निरोघ करता रहता है। प्राण को अपान में मिलाता रहता है। मेरे प्यारे! मन और प्राण को एकाग्र करता हुआ मानो देखो, वो प्रजापति बन जाता है। वह प्रजापति कहलाता तो मुनिवरो! देखो, यहाँ बहुत–सी विवेचनाएँ हैं।

आज मैं विशेषता में तुम्हें नही ले जाना चाहता हूँ विचार केवल यह कि ऋषि ने नमन होते हुए पुनः प्रश्न किया कि हे प्रभु! हम जानना चाहते हैं ये प्रजापति कहाँ ओत–प्रोत होते हैं? उन्होंने कहा–प्रजापति याग में प्रतिष्ठित हो जाते है। मेरे प्यारे! देखो, याग कहते हैं जितना भी सुकर्म है, संसार का बेटा! उस सर्वत्र का नाम एक याग कहा गया है। जो भी अपने कर्तव्य से सुगठिततता है परन्तु देखो, अग्नां ब्रह्मणे अब्रहा जो ज्ञान रूपी अग्नि में और बाह्य अग्नि में बेटा! जो यागिक बना हुआ है। वह मानो देखो, एक अपने में याग कर रहा है। विचारों में याग कर रहा है। योगी अपनी यौगिकता में याग कर रहा है। मेरे पुत्रो! देखो, याग में प्रतिष्ठित हो जाता है। ये प्रजापति याग में प्रतिष्ठित हो जाता है। याग में ही मुनिवरो! देखो, उसकी प्रतिष्ठा कहलाती है।

याग की प्रतिष्ठा

मेरे प्यारे! महर्षि प्रवाहण ने कहा–प्रभु! हम ये और जानना चाहते हैं कि याग किसमें प्रतिष्ठित रहता है। उन्होंने कहा याग दक्षिणा में ओत–प्रोत हो जाता है। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि कहता है कि दक्षिण उसे कहते हैं जो यजमान के हृदय में जितनी त्रुटियाँ है, क्रोधाग्नि है, किसी भी प्रकार का दोषारोपण है वह पुरोहित को प्रदान कर देता है मानो देखो, वो दक्षिणा कहलाती है। मानो देखो, वह यजमान अपनी यज्ञशाला में विद्यमान होकर के दक्षिणमयी देहि।

जैसे बेटा! तुम्हे मैंने कई कालों में वर्णन किया था जब मुनिवरो! देखो, माता कौशल्या ने जब ऋषि को दक्षिणा प्रदान की थी तो कौशल्या ने यही कहा था कि मैं राष्ट्र के अन्न को ग्रहण नहीं करूँगी। ये पापाचार से बिंधा हुआ अन्न होता है। मैं अपने गर्भ से एक महान पुत्र को जन्म देना चाहती हूँ। मेरे प्यारे! देखो, कौशल्या ने ये अपने पुरोहित को दक्षिणा प्रदान कर दी।

दक्षिणा

इसी प्रकार बेटा! देखो, दक्षिणा का अभिप्राय, अपनी त्रुटियों को त्यागना। बुद्धिमान को परिणत करना और उन ऋषियों की आज्ञा के ऊपर अपने जीवन को ले जाना मेरे प्यारे! देखो, ये दक्षिणा कहलाती है।

मुनिवरो! देखो, ऋषि ने कहा भगवन्! यह दक्षिणा कहाँ प्रतिष्ठित रहती है? उन्होंने कहा यह जो दक्षिणा है यह मानो देखो, श्रृद्धा में रहती है। इसीलिए श्रृद्धामयी देहि का जो जन्म होता है वह मानव के हृदय से होता है। मेरे प्यारे! देखो, हृदय से श्रृद्धां ब्रह्मण ब्रह्मा कृतो मेरे पुत्रो! देखो, वह ओर श्रृद्धा प्रदान कर रहा है हृदय से कर रहा है। हृदय से ही मुनिवरो! देखो, उदगारों का जन्म होता है और वह यौगिक वाद भी मुनिवरो! देखो, हृदय में प्रतिष्ठित रहता है। जैसे मुनिवरो! देखो, मानव की प्रत्येक इंद्रियों का जो विषय है वो सर्वत्र मानो हृदय में प्रतिष्ठित रहता है और हृदय रूपी यज्ञशाला में उसका साकल्य बनाकर के बेटा! रूप, रस गंध और स्पर्श इत्यादि पाँच ज्ञानेन्द्रियों का जो मानो देखो, विषय है उनका योगी साकल्य बनाता है और

साकल्य, चरू बनाकर के बेटा! हृदय रूपी जो यज्ञशाला में अग्नि प्रदीप्त हो रही जब वो उसमें आहुति देता है, स्वाहा कह देता है। तो मेरे प्यारे! देखो, वो यौगिक याग कर रहा है। मेरे प्यारे! देखो, विचार अमृतं ब्रह्माः लोकां विश्वस्ततं ब्रह्मे।

मुक्ति

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि कहता है आगे प्रश्न मत कर देना, अन्यथा तुम्हारा मस्तिष्क नीचे गिर जायेगा। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने कहा—ब्रह्मणे देवाः क्योंकि इस हृदय का मिलान परमात्मा के हृदय से होता है और जब यह हृदय और परमात्मा का हृदय एक होता है तो यौगिक आचार्यो की मुक्ति हो जाती है। तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने जब यह वाक् कहा तो मुनिवरो! देखो ,ऋषि के चरणों में ओत—प्रोत हो गए, ब्रह्मवेत्ताओं ने कहा—धन्य है प्रभु! जिज्ञासुओं ने कहा—धन्य है प्रभु! आपने हमें मानो देखो, ध्रुवा से ऊर्ध्वा में, ऊर्ध्वा से ध्रुवा में पहुँचाया है आपको धन्य है भगवन्! आपके अध्ययन को धन्यवाद है।

तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि—मुनियों का यह विचार आज मैं बेटा! तुम्हें बहुत दूरी ले गया। विचार तो इसमें कितने मानो उत्पन्न होते रहते है, यह तो भयंकर वन है। मुझे तुमने भयंकर वन में पहुँचा दिया। तो विचार—विनिमय क्या मुनिवरो! देखो, यौगिक बनना है तो मुनिवरो देखो प्रत्येक इन्द्रियों के विषयों का साकल्य बनाना होगा और साकल्य बनाकर, के चरू बना कर के याग करना होगा और जो भौतिक याग में परिणत होना है तो मुनिवरो! देखो, अपनी त्रुटियों को त्यागना होगा। यदि इस संसार को जानना है, ये जो परमात्मा का मानो देखो, यह ब्रह्माण्ड रूपी जो यज्ञशाला है जो एक दूसरे में ओत—प्रोत हो रहा है। एक दूसरे में प्रतिष्ठित हो रहा है। मेरे प्यारे! इसको तब तक नही जानोगे जब तक विवेक नहीं होगा और जब तक विवेक नहीं होगा तो मुनिवरो! देखो, यौगिक भी नहीं बन पाओगे।

ये है बेटा! आज का वाक्, आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय हमारा ये कि हम परमपिता परमात्मा की महिमा को जानते हुए, ऊँची—ऊँची उड़ानें उड़ते चले जाये। मेरे प्यारे! देखो, माता वह कहलाती है जो अपने गर्भ की आत्मा से वार्ता प्रकट कर लेती है। प्राण को जानना बहुत अनिवार्य है। बेटा! प्राण के ऊपर बहुत सी पोथियाँ बद्ध की जा सकती है बेटा! इसका वो अखण्ड ज्ञान है। उस ज्ञान की कोई सीमा नहीं है। परन्तु देखो, विचार ये कि हम परमपिता परमात्मा के राष्ट्र में आएँ है, हम निरभिमानी रहें, मानो देखो, अपने को निरभिमानी बना करके क्योंकि परमपिता परमात्मा निरभिमानी है इसलिए उसके समीप हमें जाना है। ये हे बेटा! आज का वाक्, अब मुझे समय मिलेगा तो मैं तुम्हें शेष चचाएँ कल प्रकट करूँगा।

मेरे प्यारे! देखो, वह परमात्मा का हृदय और परमात्मा के हृदय से मानव का हृदय, योगी का हृदय और योगी के हृदय से श्रद्धा है और श्रद्धा से दक्षिणा, दक्षिणा से याग, याग से प्रजापति और प्रजापति से, इन्द्र इन्द्र से गन्धर्व और गन्धर्व से सूर्य, और सूर्य से चन्द्रमा मुनिवरो! देखो, यह जो ध्रुवा से अप्रातामं मानो देखो ध्रुवा है और एक मानो देखो, ध्रुवा से ऊर्ध्वा में ऊर्ध्वा में क्या मुनिवरो! देखो, यह जगत, जो दृष्टिपात आ रहा है। ये पृथ्वी में और पृथ्वी मुनिवरो! देखो, आपो में, आपो अग्नि में, अग्नि मानो देखो, वायु में और वायु अन्तरिक्ष में और अन्तरिक्ष महत्तत्व में, ये है बेटा! आज का वाक्, अब समय मिलेगा तो मैं तुम्हें शेष चर्चाएँ कल प्रकट करूँगा।

ओ३म् देवाः आभ्यां रथं मानः वाचा त्रिवर्णाः अपाः

द्यौ गामी चित्र दर्शन

20.1.89
खेड़ी, मेरठ

जीते रहो,

देखो, मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भाँति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन—पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतो से ही, उस मनोहर वेद—वाणी का प्रसारण होता रहता है। जिस पवित्र वेद—वाणी में, उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी है और वे पुरोहित है मानो वो पराविद्या को प्रदान करने वाले हैं। इसलिए हम इस परमपिता परमात्मा की महिमा अथवा उसकी महती का वर्णन करते चले जाये और अपने आंतरिक जगत में, उस परमपिता परमात्मा की महती और अनुपमता को धारण करते चले जाये। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा हमारे देवत्व है मानो वे सदैव सर्वत्रता में विद्यमान रहते है। कोई स्थली ऐसी नही है, जहाँ वे परमपिता परमात्मा न हो, वे सर्वत्र विद्यमान है।

यज्ञोमयी स्वरूप परमात्मा

इसलिए हम उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाते हुए, इस संसार सागर से पार हो जाये और उसकी अनुपम जो ये अनुवृत्तियों में जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है। मानो उसके ऊपर हम चिंतन और मनन करते चले जाये क्योंकि वह हमारा देव है, देवत्व है, पुरोहित है, पराविद्या में रत रहने वाला है और वह यज्ञोमयी स्वरूप है। मानो याग उसका आयतन है, उसका गृह है, और उसका सदन है। और वह उसी में निहित हो रहा है। इसीलिए हम परमपिता परमात्मा को यज्ञोमयी स्वरूप स्वीकार करते रहते है और अपने में मानो अपनेपन की आभा में सदैव रत रहते है।

परन्तु आज हमें कहीं से प्रेरणा प्राप्त हो रही है। क्योंकि ये जो परमात्मा का अनुपम जगत है यह प्रेरणा का स्रोत है और मानो प्रेरणा प्राप्त करता रहता है और क्रियाओं में रत रहता है। इसलिए हम उस परमपिता परमात्मा को अपना प्रेरक स्वीकार करते हुए, मानो यज्ञोमयी स्वरूप की विवेचना और यज्ञोमयी आभा में रत रहने के लिए हम तत्पर है। हमारे ऋषि—मुनियों ने बेटा! वेद के मन्त्रों को जानते हुए, उन्होंने कोई ऐसा तथ्य नहीं त्यागा है जो मानो रहस्यों का उदघाटन करने वाला हो। नाना प्रकार के रहस्यतम वाक्यों को उन्होंने उदघृत किया है। इसीलिए आज मैं तुम्हें बेटा! एक ऋषि के आसन पर ले जाना चाहता हूँ, जहाँ ऋषि मुनि बेटा! एक—एक वेद मन्त्र के ऊपर प्रायः अन्वेषण करते रहें है और ऊँची—ऊँची उड़ाने उड़ते रहे है। आज हम तुम्हें उन उड़ानों में ले जाना चाहते है।

मेरे प्यारे! मुझे वो काल स्मरण आ रहा है जिस काल में, देखो, ऋषि मुनि अपनी स्थलियों में, न्यौदा में मन्त्रों का उदगीत गा रहे है और वेद मन्त्रो का उदगीत गाते हुए मानो उसमें जो रहस्यतम और गम्भीरतम और यौगिकता है उसका वे साकार रूप बनाते रहे हैं। आज मुनिवरो! देखो, उस साकार रूप के लिए, हमारे यहाँ भिन्न—भिन्न प्रकार की विवेचनाएँ और भिन्न—भिन्न प्रकार की धाराओं का उद्गीत गाया गया है। तो आओ मेरे प्यारे! मैं तुम्हें उस आसन पर ले जाना चाहता जहाँ बेटा! देखो, महर्षि वैशम्पायन बड़े महान और याग में परिणत करने वाले, नाना प्रकार के यागों को उद्धृत करने वाले देखो, महर्षि वैशम्पायन थे। बेटा! वो एक समय महाराजा अश्वपति के यहाँ वृष्टि याग कराते हुए मुनिवरो! देखो, वह अपने आसन पर विद्यमान थे। भयंकर वनों में बेटा! ऋषि का आसन है मनन और चिन्तन करने की मानो उनमें बड़ी क्षमता रहती है।

देवताओं की वाणी

तो मेरे प्यारे! देखो, एक समय वे न्यौदा में मन्त्रो का अध्ययन करने लगे। सांयकाल का समय था। परन्तु उन वेद मन्त्रो में मानो कुछ वेद मन्त्र आ रहे थे और वह वेद मन्त्र यह कह रहे थे चित्रं रथं ब्रह्माः व्रहे सम्भव ब्रह्माणं बह्ने संधनं ब्रीहिः यजमानश्चतं रथं ब्रह्माः यज्ञशालां प्रति देवाः मेरे प्यारे! देखो, वेद मन्त्र का उद्‌गीत गाते हुए, ऋषि ने विचार कि यह वेद मन्त्र तो बड़ी उद्‌गीतता का वर्णन कर रहा है। मानो यह तो वेद मन्त्र कुछ कह रहा है। मेरे प्यारे! देखो, इसी चिंतन में, वे निद्रा की गोद में चले गए। जब चले गए तो बेटा! देखो, मध्य रात्रि हुई तो वे जागरूक हो गए।और जागरूक होकर के पुनः उन मन्त्रों में उदगीत गाने लगे। और वेद मन्त्र ये कह रहा था कि यजमान का रथ बनकर के द्यौ–लोक में जाता है। ये मानो रथ में विद्यमान होने वाले उद्‌गाता, अध्वर्यु, ऋत्विज्ञ और मुनिवरो! देखो, यजमान पुरोहित मानो देखो, उनका रथ बन करके द्यौ–लोक में जा रहा है। मेरे प्यारे! देखो, जाता रहा है। ऐसा वेद मन्त्र कहता है। परन्तु वैशम्पायन ऋषि महाराज ये विचारने लगे कि वेद मन्त्र मिथ्या तो उच्चारण करता नहीं क्योंकि ये तो देवताओं की वाणी है। परमपिता परमात्मा का अनुपम विज्ञानमयी है ये मानो देखो ,मिथ्या उद्‌गीत नही गा रहा है तो इसीलिए वे मनन करने लगे। जब मनन करने लगे तो बेटा! सूर्योदय हो गया। अपने आसन को नहीं त्याग रहे थे। अपने में वो निमटारा नहीं कर पा रहे थे क्योंकि कोई वस्तु मानव को दर्शनो से घटित हो जाती है। परन्तु वो क्रियाकलापों में लाना चाहता है तो वह क्रियाकलापों में नहीं आ पा रही है इस प्रकार मुनिवरो! देखो, ऋषि अपने में विचारने लगे कि मैं यह निर्णय तो कर लेता हूँ परन्तु देखो, यह विचार में नही आ रहा है कि क्रियाओं में कैसे लाया जाये।

तो मेरे प्यारे! देखो, निकटतम् आश्रम महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज का था। उन्होंने अपने ब्रह्मचारी से कहा–कि जाओ, ऋषिवर के आश्रम में जाओ और ऋषि अपने आसन से पृथक् नही हुए है। इसके मूल में क्या कारण है। तो मुनिवरो! देखो, वे वहाँ ब्रह्मणं व्रहे ब्रह्मचारी ने वहाँ से गमन किया और वह आचार्य के आसन में आए तो मानो देखो, वैशम्पायन अपने चिंतन में लगे हुए है। मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मचारी ऋषि के आश्रम में पहुँचे और विभाण्डक जी से कहा–महाराज! ऋषिवर तो किसी गंभीर मुद्रा में मुद्रित हो रहे हैं और गम्भीर मुद्रा में अपने को ले गए है। मेरे प्यारे! महर्षि विभाण्डक मुनि ने विचारा कि कौन सी गंभीर मुद्रा है।

तो मेरे प्यारे! देखो, वहाँ से भ्रमण करते हुए वह ऋषि के द्वार पर पहुँचे और ऋषि वैशम्पायन से कहा–प्रभु! आज अपने आसन को नहीं त्याग रहे हो, इसका क्या करण है? उन्होंने कहा–प्रभु! मैं प्रातःकाल, साँयकाल से ही मानो इन वेद मन्त्रों में लगा हुआ हूँ, वेद मन्त्र कह रहे है उद्‌गीतां ब्रह्मणाः चित्रं रथां ब्रह्मे वायुरथं प्रवाहा यजमानं प्रह्वे देवो दिव्यां ब्रह्मे द्यौ–लोकाः मानो वेद मन्त्र अपने स्वरूप में जो अपना गान गा रहे है हे प्रभु! मेरे विचार में नहीं आ रहा है। मानो देखो, यजमान का रथ कैसे जाता है द्यौ–लोक में? मैं उस रथ को नेत्रों से दृष्टिपात करना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! दिव्यता से भी दृष्टिपात कर सकता हूँ।

द्यौ–लोक का रथ

तो मुनिवरो! देखो, ऋषि भी इसी विचार में मग्न हो गए और वह बोले देखो, ये जो अग्नि है, इन अग्नि की धाराओं पर विद्यमान होने वाला जो शब्द है और शब्द के साथ में उसका जो क्रियाकलाप है। मानो देखो, वह जो अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके द्यौ लोक में द्यौ से व्राःकृत लोको में वे शब्द मानो चित्र और आकार के सहित स्थित हो रहा है। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने यह स्वीकार कर लिया। परन्तु साकार रूप में कैसे लाया जाये, उस साकार रूप को जानना चाहिए।

मेरे पुत्रो! देखो, इसी विचार में मग्न हो गए। मग्न होते कहीं से बेटा! देखो पारेत्तर ऋषि महाराज की अध्यक्षता में बेटा! ऋषि मुनियों का एक समूह भ्रमण करते हुए बेटा! वैशम्पायन के आश्रम में आ पहुँचा। उन्होंने कहा–आइए भगवन्! वे विराजमान हो गए। मेरे प्यारे! विचार–विनिमय में वो ये करने लगे कि मेरा रथ कैसे द्यौ–लोक में जाता है। कैसे यज्ञशाला का रथ बनता है।

तो मुनिवरो! देखो, इसी विचार में मग्न होकर के जब चिन्तन में लगे तो मुनिवरो! देखो, वृत्तिका मुनि बोले कि हे प्रभु! मेरी इच्छा यह है कि तुम यहाँ इसके साकार रूप को नहीं बना सकोगे। किसी वैज्ञानिक के गृह में पहुँचो या मानो देखो, किसी ऋषि मुनि की आभा में परिणत हो जाओ और या याग का आयोजन किया जाये। वहाँ देखो, यंत्रो में उसे दृष्टिपात किया जाये। वृत्तिका मुनि ने ये कहा तो मेरे प्यारे! देखो, यह विचार सबके हृदयों में समाहित हो गया और समाहित होकर के उन्होंने यह कहा, चलो भई, आज तो देखो, अयोध्या में गमन करते है और अयोध्या में मुनिवरो! देखो, राम के यहाँ एक याग का आयोजन होना चाहिए और उसको जानना चाहिए।

मेरे पुत्रो! देखो ये विचार सबके हृदय में हृदयग्राही हो गया। तो वहाँ से मुनिवरो! देखो, ऋषि मुनियों ने महर्षि वैशम्पायन की अध्यक्षता वाला समाज बेटा! वहाँ से गमन करता है और भ्रमण करते हुए देखो वह रात्रि समय, वह सोम वृत्तिका मुनि के आश्रम में बेटा! सांयकाल को उनका वास हुआ और चर्चाएँ हुई मुनिवरो! देखो, चर्चाओं के साथ ऋषि ने सबका स्वागत किया, अतिथि किया। हमारे यहाँ अतिथि सेवा बड़ी विशिष्ठ मानी गई है। क्योंकि अतिथियों की सेवा करना हमारा कर्तव्य है। अतिथि कौन होता है बेटा! इस सम्बन्ध में बहुत सी चर्चाएँ हुई है। अतिथि वह होता है जो किसी गृह में प्रवेश करता हुआ, ऋषि ब्रह्मवेता बेटा! उनके आश्रम में ग्रहण करता है और वह अपना उदगीत गाता रहता है।

राष्ट्र की पवित्रता के लिए याग

तो मेरे प्यारे! देखो, यह वाक् उनके हृदय ग्रहा सम्भव उन्होंने अतिथि किया और कन्दमूल इत्यादियों से उनका स्वागत किया। मेरे प्यारे! देखो, वहां से प्रातःकालीन होते ही, उन्होंने भ्रमण किया। और भ्रमण करते मुनिवरो! देखो अयोध्या में उनका वास हुआ। जब वे अयोध्या में मुनिवरो! देखो, प्रवेश हो गए तो राम के यहाँ प्रातःकालीन बेटा! देखो, राम देवयाग में परिणत हो जाते, अपनी यज्ञशाला में और यज्ञशाला में याग तो उनका सम्पन्न हो गया था। परन्तु राम की उपदेश मंजरी प्रारम्भ हो रही थी। एक पंक्ति में बेटा! राष्ट्रवेत्ता विद्यमान है, एक पक्ति में बेटा! ब्रह्मवर्चोसि विद्यमान है और मुनिवरो! देखो, आदि अमृतम् देखो जो विशिष्ठ पांडितव को धारण करने वाले, वे सब विद्यमान है मेरे प्यारे! देखो, ऋषियों ने जब वहाँ यज्ञशाला में गमन किया तो बेटा! वहाँ ब्रह्मवेत्ताओ का आसन भिन्न है, ब्रह्मवर्चोसि का आसन भिन्न है। मेरे प्यारे! ब्रह्मचारियों का आसन भिन्न है। अपने–अपने आसनो पर विद्यमान हो गए।

विद्यमान हो जाने के पश्चात् राम का उपदेश चल रहा है और राम अपना उद्‌गीत गा रहे है। अपने विचारों का उदय उद्‌घाटन कर रहे है। और ये उच्चारण कर रहे हैं कि हे राष्ट्रवेताओं! आज मानो देखो, हमने अभी–अभी देवयाग किया है और देवयाग का अभिप्राय यह है कि हम देवताओं का पूजन कर रहे हैं और देवताओं के पूजन का अभिप्राय ये है कि हम जड़ और चैतन्य सब देवताओं के आह्वान् में लगे हुए है। जिससे हमारा राष्ट्र हमारा मानवत्व मानो देखो, पवित्र बन जाये और हम अपने में अपनेपन का दर्शन करने लगे।

मेरे प्यारे! राम का उपदेश चल रहा था कि देखो, राजा का राष्ट्र तब पवित्र बनता है जबकि राजा के राष्ट्र में मानो देखो, एक घोषणा हो याग इत्यादियों की घोषणा होनी चाहिए। राजा के प्रत्येक गृह में, राष्ट्र में मानो सुगन्धि होनी चाहिए सुगन्धियाँ दो प्रकार की होती है। बेटा! एक विचारों की सुगन्धि और एक साकल्य की सुगन्धि। तो विचार और साकल्य की सुगन्धि जब एक ही समान बन जाती है तो मानो देखो, परमाणुवाद, तरंगवाद राजा के

राष्ट्र में मुनिवरो! देखो, पवित्र हो जाता है। तो राम का यह उपदेश चल रहा था हे राष्ट्रवेताओं! मेरी इच्छा यह है कि तुम मानो देखो, हमारे इस राष्ट्र में देखो, प्रजा के सुखार्थ के लिए प्रत्येक गृह में यह घोषणा करो कि याग होना चाहिए।

परमात्मा का अनुपम ज्ञान

मेरे प्यारे! देखो, भगवान् राम के यहाँ प्रातःकालीन देखो, राष्ट्र की घोषणा की गई और यह कहा गया कि राष्ट्र में मानो देखो, बुद्धिमान पुरुष होने चाहिए। जितने भी राजा के राष्ट्र में विवेकी पुरुष होते हैं और मानो देखो, जितने भी महापुरुष होते है वेद का उद्‌गीत गाने वाले मानो देखो, शंख ध्वनि वाले गान गाने वाले जितने भी पांडितव होते है उतना ही राष्ट्र पवित्र बना करता है। इसीलिए राष्ट्र को पवित्र बनाने के लिए, राम ने ये घोषणा कराई कि राजा के राष्ट्र में, हमारे इस अयोध्या राष्ट्र में मानो देखो, प्रत्येक देवत्व अपने में याज्ञिक बन जाये।

मेरे प्यारे! कोई पितर याग कर रहा है कोई मानो देखो, अपने में पितरो में लगा हुआ है। कोई स्वाध्याय कर रहा है, कोई ऋषि मुनियों के विचारो का अपने में अध्ययन कर रहा है। मेरे प्यारे! देखो, वह अपने में अपनेपन का भान कर रहा है। योगी होने चाहिए क्योंकि योगी देखो, प्राण सत्ता को जानने वाले, राजा के राष्ट्र में जितने योगी होंगे उतना ही मानो देखो, जो परमात्मा का दिया हुआ अनुपम ज्ञान है वह ज्ञान प्रत्येक मानव के हृदय में समाहित हो जायेगा

तो मेरे प्यारे! देखो, यह उपदेश चल रहा था, विचार–विनिमय हो रहा था। मेरे पुत्रो! देखो, उनका उपदेश यहाँ आकर के सम्पन्न हो गया कि हमारे राष्ट्र में प्रत्येक मानव अपने कर्तव्य का पालन करने वाला हो और कर्तव्य वही कर सकता है जब राजा के राष्ट्र में राजा स्वयं अपने कर्तव्य का पालन करेगा। तो प्रजा स्वयं कर्तव्यवाद में परिणत हो जायेगी। मेरे प्यारे! देखो, ऐसा ऋषियों ने वर्णन किया है, ऐसा ऋषियों ने अपना उद्‌गीत गाया। परन्तु देखो, राम उस समय देखो, ऋषि अप्रताम् ऋषियों का उद्‌गीत गाने वाले, उन्होंने कहा है कि हमारा राष्ट्र मानो पवित्रता की वेदी पर रहना चाहिए। राम ने बेटा! अपनी उपदेश मंजरी सम्पन्न की और यह सम्पन्न करके कि हमारे राष्ट्र में प्रत्येक मानव अपने कर्तव्य का पालन करने वाला हो।

मेरे प्यारे! मानो देखो, जब राम का उपदेश समाप्त हुआ तो उनकी दृष्टि मानो ऋषि–मुनियों पर जा पहुँची। बेटा! बड़े हर्ष ध्वनित होते हुए वे ऋषियों के समीप पहुँचे और राम ने कहा–प्रभु! ये मेरा कैसा सौभाग्य है, हमारी अयोध्या का कैसा सौभाग्य है, भगवन्! जो ब्रह्मवेत्ताओं का आगमन मानो देखो, इस आसन पर यहाँ विराजे हो। भगवन्! मैं नहीं जान पाया हूँ कि इसके मूल में क्या है? भगवन्! मैं तो सेवक हूँ मुझे आज्ञा देते तो प्रभु मैं अपने वाहनों में तुम्हारा आगमन अयोध्या में होता। हे प्रभु! इसका क्या कारण है जो बिना सूचना के ब्रह्मवेत्ताओं का आगमन हुआ है? मेरे प्यारे! देखो, महर्षि वैशम्पायन बोले कि हे भगवन् हे राम! देखो, हम तुम्हारे राष्ट्र में इसलिए आए है–कि हम मानो देखो, इस राष्ट्र में एक याग का आयोजन करना चाहते है। उन्होंने कहा–बहुत प्रियतम! प्रभु! मुझे आज्ञा दे देते, सूचना दे देते, तो मैं मानो तुम्हारे सर्वत्र साकल्य को एकत्रित कर देता। प्रभु! ये मेरा बड़ा सौभाग्य है कि आप याग में परिणत होना चाहते है। प्रभु! ये तो मेरे इस नगर और राष्ट्र की मानो देखो, बड़ी सौभाग्यता कहलाती है।

मेरे प्यारे! देखो, राम के हर्ष की कोई सीमा न रही। मानो बारी–बारी सर्वत्र विद्याताओं ने उनके चरणों को स्पर्श किया। चरणों को स्पर्श करके बेटा! देखो, आज्ञा दी गई जाओ, ऋषि मुनियों को उनके कक्षों में पहुँचाओ। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि मुनि अपने कक्षों में जा पहुँचे। मानो ब्रह्मवेत्ताओं के कक्ष भिन्न है, ब्रह्मचारियों के भिन्न है और ब्रह्मवर्चोसि के भिन्न कहलाए। मेरे प्यारे! देखो, यागां ब्रह्मणाः सब कक्षों में विद्यमान हो गए।

ब्रह्मपुरी

तो मेरे प्यारे! राम ने शिल्पकारों को आज्ञा दी कि यज्ञशाला का निर्माण किया जाये। बेटा! मुझे जब वो काल स्मरण आता है तो हृदय गद्–गद् हो जाता है। मैं आज यह अनुभव कर रहा हूँ मानो जैसे हम राम की उसी यज्ञशाला में विद्यमान हो बेटा! यज्ञशाला तो ब्रह्मपुरी कहलाती है। मेरे पुत्रो! देखो, यज्ञशाला का निर्माण हो गया, शिल्पकारों ने यज्ञशाला का निर्माण किया। मेरे प्यारे! देखो, नाना वृत्तं साकल्य एकत्रित किया गया। चरू एकत्रित हो गया। अग्नि का भोज एकत्रित हो गया। मेरे प्यारे! देखो, जब साकल्य एकत्रित हो गया। श्रद्धामयी आभा उत्पन्न हो गई मानो श्रद्धा की वेदी जब जागरूक हो जाती है। तो बेटा! याग में एक प्रतिवृत्तियाँ उत्पन्न हो जाती है। तो मेरे प्यारे! देखो, वहाँ श्रद्धा की ज्योति जागरूक हो गई।

मेरे पुत्रो! देखो, यागं अमृतम् जब यज्ञशाला मानो देखो, अपने में सजातीय हो गई मानों ऐसा प्रतीत होने लगा जैसे ये ब्रह्मपुरी है। ब्रह्मादि विद्यमान हैं। मेरे प्यारे! देखो, राम ने ऋषि मुनियों के समीप जाकर के कहा–प्रभु! आइए, आपकी यज्ञशाला का निर्माण हो गया। यज्ञशाला में चरू एकत्रित हो गया है। आइए, भगवन्! विराजिए। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि बड़ी हर्ष ध्वनि करते हुए देखो यज्ञशाला में पहुँचे। राम ने उनका निर्वाचन किया। मेरे प्यारे! देखो, महर्षि वैशम्पायन को उस याग का ब्रह्मा नियुक्ति किया गया। महर्षि विभाण्डक उस याग के बेटा! उद्‌गाता बने। महर्षि व्रेति मुनि महाराज देखो, अध्वर्यु बने और मुनिवरो! देखो, वशिष्ठ इत्यादि पुरोहित बने।

महर्षि वाल्मीकि के आश्रम में शिक्षा

मेरे प्यारे! देखो, सब ऋषि मुनियों का जब निर्वाचन हो गया। अपनी–अपनी स्थली पर जब विद्यमान हो गए तो मेरे प्यारे! देखो, राम ने सब ऋषि–मुनियों को निमंत्रित किया गया था, जिसमें महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज, महर्षि वाल्मीकि और भी सर्वत्र ऋषि––मुनि विद्यमान हुए। मेरे प्यारे! देखो, जब याग प्रारम्भ हुआ तो मुनिवरो! देखो, महर्षि विश्वामित्र भी विद्यमान हुए। अब क्योंकि विश्वामित्र तो मेरे प्यारे! उनके धनुर्याग के आचार्य कहलाते थे, गुरु कहलाते थे और देखो, महर्षि वाल्मीकि मेरे प्यारे! आयुर्वेद के महा पांडितव को धारण करने वाले थे। मेरे प्यारे! मुझे स्मरण है मैंने कई कालों में तुम्हें वर्णन कराया कि जब देखो, अयोध्या में कोई भी संतानोपार्जन का क्रियावृत्त होता तो बेटा! देखो महर्षि वाल्मीकि आश्रमों में बेटा! सन्तानों का जन्म होता और उनमें बाल्य काल की अस्त्रों, शस्त्रों की शिक्षा प्रदान की जाती है।

तो आओ मेरे प्यारे! मैं इस क्षेत्र में जाना नहीं चाहता हूँ विचार केवल यह कि यज्ञशाला में बेटा! सब विद्यमान हो गए। मेरे प्यारे! देखो, महर्षि भारद्वाज, ब्रह्मचारी सुकेता, ब्रह्मचारी कवन्धी, ब्रह्मचारिणी शबरी, महर्षि पनपेतु, ब्रह्मचारी यज्ञदत्ता, मेरे प्यारे! सर्वत्र जो विज्ञानवेत्ता थे वे अपने वाहन में विद्यमान होकर के बेटा! अपने आसन से गमन कर गये उस समय राम ने जब याग का प्रारम्भ किया तो बेटा! याग की अग्नि होत्र, जब अग्नि प्रचण्ड हो गई, मानो अग्न्याधान हो गया। तो मेरे प्यारे! देखो, वही वेद के मंत्र न्यौदा में उच्चारण करने लगे चित्रं वृभवरप्रवाह देवं ब्रहे वाचन्नमं ब्रह्मा अक्रधा खण्डनं व्रहे व्रतं द्यौ–लोकां अह्वो वाचन्नमः यजमानं रथः मेरे प्यारे! देखो, वही वेदमंत्र उद्‌गीत रूप में गाने लगे। जब वेदमन्त्र गाया जाने लगा। तो मेरे प्यारे। देखो, एक भव्यता प्राप्त हो गई। राम ने कहा–आचार्यो से हे आचार्यजनों! मेरी एक प्रार्थना है कि भगवन्! मैं यह जानना चाहता हूँ कि ये जो वेदमंत्र जो कह रहा है। वो क्या है? वेदमंत्र कहता है कि यजमान का रथ बन करके द्यौ–लोक में जाता है और मैं वह द्यौ–लोक वाले रथ को दृष्टिपात करना चाहता हूँ।

अग्नि की धाराओं पर शब्द

मेरे प्यारे! देखो, चित्रं ब्रहे अग्नाः क्योंकि अग्नि की धाराओं पर शब्द विद्यमान होकर के द्यौ–लोक में जाता है? और वह द्यौ–लोक में चित्रों के सहित जाता है और वह द्यौ–लोक से ही मानो देखो, इस यज्ञशाला का रथ भी अग्नि की धाराओं पर विद्यमान होकर के द्यौ–लोक में जाता है। राम ने कहा था कि ये तो मैं जानता हूँ। महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज माता अरून्धती के समीप विद्यमान हो करके बहुत सी विद्याओं का अध्ययन किया है। परन्तु मैं इसको साक्षात्कार जानना चाहता हूँ मेरे प्यारे! देखो, इसी विचार में कि अब कौन साक्षात्कार करे।

मेरे प्यारे! देखो जब ये याग शांत हो गया तो बेटा! देखो, इतने में महर्षि भारद्वाज अपनी ब्रह्मचारिणी शबरी और देखो, ब्रह्मचारियों के सहित अपने वाहन में विद्यमान होकर के बेटा! राम की यज्ञशाला में विराजमान हो गये। राम बड़े प्रसन्न हुए, उन्होंने कहा–धन्य है, मेरा ये बड़ा सौभाग्य है। उन्होंने कहा आइये, भगवन्! मेरे प्यारे! भारद्वाज मुनि ने कहा–राम! तुमने याग का प्रारम्भ क्यों नहीं किया? उन्होंने कहा–प्रभु! याग का प्रारम्भ करके मैं उसमें शांत हो गया और मैं वेद के मत्रों के ऊपर जो उसमें गम्भीर उद्गीत गाने वाला वेद मन्त्र है मैं उसका साकार रूप बनाना चाहता हूँ। उन्होंने कहा–बहुत प्रियतम, क्या चाहते हो? मेरे प्यारे! देखो, राम ने कहा कि वेद मन्त्र कहता है रथं ब्रहा रथं चित्रो ब्रहे नाना मन्त्र इस प्रकार के न्यौदा में है जो यह कहते है कि यजमान का रथ बनकर के द्यौ–लोक में जाता है। मैं उस द्यौ–लोक वाले रथ को दृष्टिपात करना चाहता हूँ।

मेरे पुत्रो! देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि बोले–हे राम! तुम ब्रह्मवेत्ताओं का अपमान तो नही कर रहे हो। राम बोले–प्रभु! मेरे में इतनी शक्ति कहाँ है, हे प्रभु! मैं तो मानो उनके चरणों की रज को अपने मस्तिष्क में धारण करने वाला हूँ। हे प्रभु! मैं अपमान नहीं परन्तु ये ब्रह्मवेत्ता ही तो ऐसे वाक्यों का उद्घाटन करते है। उद्गीत गाते हैं मैं इन्हीं से जानना चाहता हूँ।

रथ का साकार दर्शन

मेरे प्यारे! देखो, साकार रूप में जानना चाहता हूँ। महर्षि भारद्वाज मुनि ने कहा–बहुत प्रियतम, जिज्ञासा के लिए हमारे यहाँ बहुत साकल्य है। उन्होंने ब्रह्मचारिणी शबरी और ब्रह्मचारी सुकेता से कहा जाओ, मानो देखो, आश्रम से चित्रावलियों को लाया जाये। मेरे प्यारे! देखो महर्षि भारद्वाज ने जैसे आज्ञा दी उन्होंने बेटा! देखो, वहाँ से अपने वाहन में गमन किया और भ्रमण करते हुए कजली वनों में जा करके उन्होंने बेटा! देखो, नाना चित्रावलियों को लेकर अयोध्या में पुनः वास किया। महर्षि भारद्वाज ने कहा–हे राम! तुम याग का प्रारम्भ करो।

मेरे प्यारे! जैसे ही राम ने याग का प्रारम्भ किया। तो मेरे प्यारे! देखो, भारद्वाज मुनि महाराज ने नाना प्रकार की चित्रावलियाँ स्थित कर दी और उन चित्रावलियों में मानो जैसे यजमान होता उद्गाता जन देखो, जैसे ही स्वाहा उच्चारण करते थे और स्वाहा का जो शब्द था वो अग्नि की धाराओं पर विद्यमान होकर के बेटा! द्यौ–लोक में प्रवेश कर रहा था। तो मुनिवरो! देखो, वह जो यंत्र था उसमें यज्ञशाला का चित्र बनकर के बेटा! द्यौ–लोक को जाता हुआ दृष्टिपात आने लगा। उन्होंने कहा हे राम! यह दृष्टिपात करो। देखो, यह तुम्हारा शब्द, तुम्हारी यज्ञशाला का आकार बन करके रथ बन करके द्यौ–लोक को जा रहा है। यंत्रों में दृष्टिपात करो।

रक्त बिन्दु में मानव चित्र

मेरे प्यारे! देखो, राम बड़े प्रसन्न हुए। महर्षि वैशम्पायन के हर्ष की कोई सीमा न रही और विभाण्डक मुनि महाराज मन ही मन में मग्न हो रहे थे। मेरे प्यारे!! देखो, भारद्वाज मुनि महाराज ने कहा राम! तुम याग प्रारम्भ करते रहो और याग का उद्गीत गाते हुए इसमें चित्रों का दर्शन करते रहो। मेरे प्यारे! देखो, जो शब्द दर्शनों से, वेद मन्त्रों से और हृदय से गुथा हुआ होता है बेटा! वो द्यौ–लोक में जाता है, वह चित्र के सहित जाता है। मेरे प्यारे! देखो, अन्तरिक्ष में वो गमन करता रहता है। मुनिवरो! देखो, याग प्रारम्भ होता रहा। महर्षि भारद्वाज मुनि बोले हे राम! हमारे यहाँ देखो, ऐसी–ऐसी चित्रावलियाँ विद्यमान है कि रक्त के बिन्दु से मानव का चित्र दृष्टिपात आता रहता है। मानो देखो, माता के गर्भ स्थल में जिस बिन्दु से, मानो देखो, वह शिशु प्रवेश होता है उस बिन्दु में मानो देखो, उसका आकार पूर्व ही दृष्टिपात आता रहा है। मैंने यंत्रों में सर्वत्र देखो, इसका उद्गीत गाया है, अनुसंधान किया है और हमारे यहाँ नाना ब्रह्मचारी अपने में अध्ययन करते रहते है। हे राम! तुम्हे ये प्रतीत है कि ये वही शबरी है जिन्होंने, जब तुम रावण से युद्ध करने देखो, रावण को विजय करने गए थे तो जितना राष्ट्र का मानो देखो, अस्त्रों शस्त्रों का कोष था वह हमारे आश्रम में शबरी ने प्रदान किया था। मेरे प्यारे! देखो, यह वाक् सुनकर राम बड़े नत् मस्तिष्क हो गए। उन्होंने कहा हे प्रभु! मैं जानता हूँ मानो देखो, ये सर्वत्र मुझे स्मरण है।

मेरे प्यारे! मुझे स्मरण आता रहता है। राम ने जब ये अमृतं ब्रह्मा महर्षि भारद्वाज ने ये कहा यज्ञ प्रारम्भं कृताः मेरे प्यारे! देखो, याग प्रारम्भ रहा। ऐसा मुझे स्मरण है बेटा! छः माह तक वह याग चलता रहा। चित्रों का दर्शन करते रहे। द्यौ–लोक में जाते हुए बेटा! देखा, यज्ञशाला का आकार दृष्टिपात आता रहा। तो मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मणेः छः माह के पश्चात् बेटा! वह याग सम्पन्न हुआ। और याग सम्पन्न हो जाने के पश्चात् राम ने बड़ी प्रसन्नता से बेटा! सब ब्रह्मवेत्ताओं को अपनी मानो देखो, त्रुटियाँ प्रदान की और राष्ट्र के लिए उन्होंने कुछ उद्गीत गाए। परन्तु देखो, उनकी आज्ञा का पालन किया। तो मेरे प्यारे! देखो, गौ इत्यादि मुद्राएँ देकर के राम ने बेटा! सब ब्रह्मवेत्ताओं को कहा–हे प्रभु! मेरे से कोई त्रुटि हो गई हो, तो क्षमा का पात्र हूँ। मेरे प्यारे! देखो, क्षमा चाहता रहता हूँ। मेरे पुत्रो। देखो, राम के यहाँ ऐसे यागों का आयोजन हुआ। परन्तु देखो, यहाँ ऋषि मुनियों की बड़ी विचित्रता रही है। मैं ये उद्गीत गा रहा था बेटा! देखो, याग के सम्बन्ध में बड़ा अनुसंधान किया है ऋषि मुनियों ने और उसके ऊपर बड़ा अन्वेषण किया है। इसीलिए हमें ऋषि–मुनियों के उन विचारों को मुनिवरो! देखो, अपने में धारण करना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो जिस क्रिया को लाने या वेद मन्त्रों में जो भी विश्ववस्तता आई है वह सर्वत्र मानो देखो, ऋषि–मुनियों ने उस के ऊपर अन्वेषण किया, अनुसंधान किया है तो इसलिए मानव को अनुसंधान करना चाहिए।

तो मेरे प्यारे! देखो, आज का विचार ऋषि–मुनि अपने–अपने कक्षों में, राम का याग सम्पन्न हो गया और राम ने कहा कि हमारे यहाँ, इस प्रकार के याग होते रहें। जिस से हमारा राष्ट्र उन्नत होता रहे। ये संर्वांगी याग कहलाता है हमारे यहाँ संर्वांगी याग भी होता है। एक वाजपेयी याग होता है, एक अग्निष्टोम याग होता है, अश्वमेघ याग होता है, अजामेघ याग होता है, कन्या याग होता है, देवयाग होता है, और भी नाना प्रकार के यागों का जैसे ब्रह्मयाग, रूद्रयाग, और जैसे हमारे यहां विष्णु याग का वर्णन किया जाता है।

तो मेरे प्यारे! ये भिन्न–भिन्न प्रकार के याग हैं। वाजपेयी, अग्निष्टोम याग के सम्बन्ध में तो बेटा! मैं समय–समय पर तुम्हें चर्चा करता रहता हूँ। ये संर्वांगी यागों की चर्चाएँ है। जिसमें मानो देखो, यजमान जब अपने हृदय से, अपनी श्रृद्धा से मानो देखो, उसका उद्गीत गाता है तो वह याग कर्म करता है। तो बेटा! देखो, उसकी वृत्तियाँ, उसकी तरंगें वेद मन्त्रों के साथ मुनिवरो! देखो, द्यौ–लोक में भ्रमण करती है। और वायुमण्डल में जो दूषितपना होता है। मानो देखो, उसका विचारों से विशेष सम्बन्ध होता है विचारो से वो नष्ट हो जाते हैं। तो मेरे प्यारे! वेद मन्त्र यह कहता है कि वेद मन्त्र के साथ में उद्गीत हो, वेद मन्त्रों के साथ में हृदय हो, वाणी हो, प्रत्येक ज्ञानेन्द्रियों से जो मानो देखो, वह उसके सहित होने चाहिए। जब यजमान याग करता है तो बेटा! वह द्यौ–लोक में प्रवेश करता है।

तो मुनिवरो! देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने अपने यंत्रों के सहित अपने आश्रम को पदार्पण किया। मेरे प्यारे! देखो, अपनी–अपनी आभा में परिणत हो गए। अब मेरे प्यारे महानन्द जी दो शब्द उच्चारण करेंगे।

पूज्य महानन्द जी

ओ३म् रथं ब्रह्मणाः वायु रथं व्रबू सर्व मन्थाः

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! अथवा मेरे भद्र ऋषि मण्डल! अभी–अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव एक साहित्यिक चर्चा का उद्घाटन कर रहे थे अथवा उसका उद्गीत गा रहे थे। राम की चर्चा कर रहे थे। ये हमारा बड़ा सौभाग्य रहा है, कि राष्ट्रों की चर्चा करने वाले अपने में राष्ट्रवाद का उद्गीत गाते रहते है। आज मानो देखो, याग का प्रसंग, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने अपने तक नहीं मानो वायुमण्डल और मानवत्व तक पहुँचाने का प्रयास किया। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! हमारी जो ये वाणी है ये उस स्थली पर जहाँ एक याग का आयोजन हुआ और मेरा अन्तरात्मा बड़ा प्रसन्न रहता है। हमारे यहाँ ये जो वर्तमान का काल चल रहा है ये प्रभु! मैंने कई काल में वर्णन किया है कि ये काल तो कोई विशेषता में नहीं है। परन्तु उसके साथ–साथ ये भी हमारा जो यज्ञं ब्रह्माः मेरा जो अन्तर्हृदय है वो यजमान के साथ रहता है। हे मंगलं व्रहे सम्भवः हे यजमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। मेरी यह कामना रहती है, मेरा यह अन्तर्हृदय कहता रहता है।

परन्तु जहाँ यह रहा कि राष्ट्रवाद की चर्चाएँ, आधुनिक काल का जो राष्ट्र–विचारवेत्ता है। परन्तु वह तो अन्धकार की आभा में परिणत हो रहे हैं। राम की उद्घोषणा कर रहे हैं परन्तु राम के जो क्रियाकलाप है उससे बहुत दूरी चले गए। जब मैं यह विचारता रहता हूँ, कि राम का प्रातः काल का जीवन, उष्णता ब्रह्मपानम् पान करना था परन्तु आधुनिक काल के राष्ट्रवेत्ता, ऐसे है जो मानो नाना प्रकार के प्राणियों का रस पान करके अपने आसन को त्यागते हैं। ऐसा मानो देखो, आधुनिक काल का राष्ट्र गमन कर रहा है और जहाँ मैंने बहुत पुरातन काल में कहा था पूज्यवाद गुरुदेव से ये प्रार्थना की, हे प्रभु! ये राष्ट्र, समाज कैसे उद्धृत हो रहा है।

क्रान्ति का विचार

तो पूज्यपाद गुरुदेव ने यह कहा था क्रांतं प्रहे सम्भवाः ये तो क्रांति का मानो विचार है। तो इसलिए मैं यह कहता रहता हूँ कि वो समय दूरी नही है, जब यहाँ क्रांति का एक मानो रक्त भरी क्रांति का एक समूह उत्पन्न होने वाला है। और वह समय हो रहा है जैसे अग्नि में धूम गमन कर रहा है। ऐसे तो धूम गमन कर चुका है, कर रहा है। परन्तु देखो, एक मानव, मानव का नरसंहार कर रहा है। इसके मूल में यह है कि राष्ट्र को चाहिए, मैंने कई काल में कहा है कि राजा ऐसा है जो रूढ़ियों को भी धर्म कह रहा है। धर्म का देखो, यह कहता है कि धर्म नहीं रहना चाहिए। हम धर्म निरपेक्ष कहलाते है। अरे, भोले राजा! अरे भोले राष्ट्रवेत्ताओं! जब तुम्हारे राष्ट्र से धर्म चला गया है तो मानो रह ही क्या गया है। तो तुम पालन किसका कर पाओगे? जब मैं ये विचार लाता हूँ क्योंकि राष्ट्र का यह कर्तव्य है कि राजा ब्रह्मवेत्ता होना चाहिए। राष्ट्र में नाना प्रकार की रूढ़ि नही रहनी चाहिए। यदि ईश्वर के नाम पर नाना प्रकार की रूढ़ियाँ रहती है और रूढ़ियों का साम्राज्य हो गया है। तो राजा का राष्ट्र आज नही, कल हो अवश्य देखो, रक्त भरी क्रांति का संचार होता रहेगा। मानो देखो, यह जो रूढ़ियाँ होती है ईश्वर के नाम पर, ये रूढ़ि नही देखो, राष्ट्र की प्रतिभा को नष्ट करने वाली होती है।

सतयुग की रूढ़ियाँ

एक समय मानो देखो, सतोयुग के काल में भी भिन्न–भिन्न प्रकार की रूढियाँ पनपी थी, तो विनाश हो गया था। रावण के काल में भी भिन्न–भिन्न प्रकार की रूढ़ियाँ और सम्प्रदायों का जन्म हुआ था उसी काल में देखो, रावण का नरसंहार हो गया था। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव तो मुझे नाना प्रकार के वाक् वर्णन कराते रहते है। परन्तु देखो, विचार आ रहा है सम्भवः ब्रह्मणाः देवातमं व्रहे वृतम ।

पूज्यपाद गुरुदेव को मैं ये अपने वाक् निर्णय देता रहता हूँ। हे प्रभु! आज का मानव ऐसा बन गया है न तो उसका धर्म, न उसमें मानवता रही है। केवल देखो, द्रव्य सुरा और सुन्दरी में परिणत होता जा रहा है। विचार आता रहता है जब मैं इन वाक्यों मूल में, राष्ट्र ही मानो देखो, ऐसा है। राजा अपने राष्ट्र में शांति नही चाहता, वह अपने हृदय से शांति नहीं चाहता है। यदि राजा अपने हृदय से शांति चाहे, तो स्वयं अपने राष्ट्र में सम होकर के देखो, अपने राष्ट्र में परिणत हो सकता है और वह अपनी प्रजा को शांत कर सकता है। मानो देखो, नाना प्रकार की रूढ़ियाँ जब तक रहेंगी व्यक्तिगत, ईश्वरवाद की पूजा होती रहेंगी तो मानो देखो, ये रूढ़िवाद पनपता रहेगा, रक्त भरी क्रांति को कोई भी इस संसार में शांत नही कर सकेगा।

मानव दर्शन का ह्रास

तो मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह वर्णन कराया हे प्रभु! देखो, यदि राजा अपने राष्ट्र को उन्नत बनाना चाहता है तो वह ब्रह्मवेत्ता हो, वेद का अध्ययन करने वाला हो, ब्रह्म का चिन्तन करने वाला है। और ब्रह्मवेत्ता उसके राष्ट्र में होने चाहिए और वे मानो देखो, भिन्न–भिन्न रूढ़ियों के आचार्यो की एक सभा होना चाहिए और सभा में शास्त्रार्थ और विचार विनिमय होना चाहिए और जो मानो दर्शन से और विज्ञान से जो मानवीयता मानो दर्शन में स्थित हो जाये उसी का नाम मानो धर्म कहलाता है और उसको अपना लेना चाहिए, ये राष्ट्र का कर्तव्य है। उसे अपनावे और मानो देखो, भिन्न–भिन्न प्रकार की रूढ़ियों को समाप्त करने वाला बने है। तो ऐसा राजा मानो देखो, अपने राष्ट्र को उन्नत बना सकता है। यहाँ नाना प्रकार की रूढ़ियाँ जब से देखो, पनपी है मानव दर्शन का ह्रास होता जा रहा है। मानव दर्शन अपने से दूरी होता जा रहा है। अरे राजन्! देखो, यह धर्म तो मानव की पाँच ज्ञानेन्द्रियों में समाहित हो रहा है। मानो देखो, सुदृष्टिपान करने वाला, पूजा का पात्र है। सुवाक् ग्रहण करने वाला पूजा का पात्र है। मेरे प्यारे! सुगन्ध को लेने वाला सुगन्धि में रत रहने वाला है। त्वचा से प्रीति करने वाला स्तुति प्रमाणाः मानो देखो, ये सब पाँच इन्द्रियों के धर्म हैं। जो वाणी से सत्य उद्गीत गाता रहता है तो यह वाणी का धर्म है। तो धर्म को अपनाकर के मानो देखो, एकोकी मानो अपने में मानवीयता में रहना चाहिए। मानवता उसके द्वारा होनी चाहिए और वह अपने में अपनेपन का भान करते हुए मानं ब्रह्मणाः लोकाम् वह ब्रह्म का चिंतन करने वाला और याग, धर्म और मानवीयता को अपनाने वाला हो। ऐसा मानो देखो, मैं उद्गीत गाता रहता हूँ।

हे मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मेरा अन्तरात्मा पुनः मानो देखो, यजमान के साथ रहता है, हे यजमान! तेरे ब्रह्मणम् तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे और ऐसे ही तेरे द्रव्यों का सदुपयोग होता रहे। ऐसा मेरा सदैव विचार रहता है। मैं अपने विचारों को विराम दे रहा हूँ और विचार केवल यह कि राष्ट्र ऊँचा बने रूढ़िवाद समाप्त हो ज्ञान का उदय होना चाहिए। ऐसा हमारा सदैव विचार रहता है मेरे पूज्यपाद गुरुदेव का तो विचार बड़ा अनूठा है वह तो दर्शनों में गूथे हुए रहते हैं। उनकी कोई चर्चा मैं प्रगट करना नही चाहता हूँ ये आज का विचार अब अपने विचारों को विराम।

मेरे प्यारे ऋषिवर! अभी–अभी मेरे प्यारे महानन्द जी ने अपने दो शब्द उच्चारण किए। इनके शब्दों में कितनी मार्मिकता है, कितनी राष्ट्र के और मानवता के प्रति कितनी दाह है, विडम्बना है। उसी विडम्बना के विचारों को मेरे पुत्र महानन्द जी ने अभी–अभी वर्णन किया और उन्होंने एक बड़ी विशिष्ट वार्ता प्रकट की कि राष्ट्र में ब्रह्मवेत्ता राजा होना चाहिए और राजा के राष्ट्र में ईश्वर के नाम पर रूढ़ि नहीं रहनी चाहिए। रूढ़ियों में अज्ञान होता है और

अज्ञान में दर्शन का अभाव होता है। और दर्शन के अभाव से देखो, राष्ट्र में रूढ़ि अपने में अधूरेपन में रहकर के वह अपनी एक दाह में और अज्ञानता में परिणत रहती है। तो राजा को चाहिए कि वह ब्रह्मवेत्ता ब्रह्म का अध्ययन करने वाला हो, वेद मन्त्रों का उद्‌गीत गाने वाला हो और वह अपने राष्ट्र में रूढ़ियों को समाप्त करने का उसका विचार बड़ा पवित्र, भद्र मानवीयता से गुथे विचार हो। आज का विचार समाप्त, अब वेदों का पठन–पाठन।

ओ३म् देवाः आम्यां रथं आपाः रेवं गताः आम्यामनः रेवं भद्राः

धर्म का स्वरूप

26.1.89
251, दिल्ली गेट, दिल्ली

जीते रहो,

देखो, मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भाँति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुण गान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा। आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन–पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेद–वाणी का प्रसारण होता रहता है। जिस पवित्र वेद–वाणी में परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है क्योंकि वे परमपिता परमात्मा महिमावादी है और वे मानो अनन्तमयी माने गए है। उनका ज्ञान और विज्ञान भी अनन्तमयी माना गया है।

हम उस परमपिता परमात्मा की महती और उसको अपना पुरोहित स्वीकार करें। क्योंकि वह पराविद्या को प्रदान करने वाले हैं। पराविद्या में मानो वो रत रहते हैं वे परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप है। मानो याग उसका आयतन है, उसका गृह है, उसका सदन है। जहाँ उस परमपिता परमात्मा की महती और अनन्तता के ऊपर विचार–विनिमय करते रहें और अपने को उसमें समर्पित करते हुए मानो उसको अपना सखा और महानतम स्वीकार करते हुए उसकी महिमा का गुणगान गाना चाहिए। क्योंकि वह अनन्त वृत्तियों में रत रहने वाले हैं। हमारे अन्तर्हृदय में मानो उसका वास रहता है। तो हमें अपने हृदय में उस हृदयग्राही परमपिता परमात्मा को पान करना चाहिए। उसको दृष्टिपात करते हुए इस सागर से पार होने का प्रयास करते रहें।

कर्तव्यवाद

तो आओ मेरे प्यारे! आज का हमारा वेद मन्त्र उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गा रहा है। अथवा उसके यज्ञोमयी स्वरूप का जो वर्णन है। वो हमारे यहाँ कृतियों में रत रहने वाला है। तो आओ, मेरे प्यारे! हमारे यहाँ याग के ऊपर ऋषि–मुनि परम्परागतों से अन्वेषण और अनुसंधान करते रहे हैं और यह विचारते रहें है कि ये जो परमपिता परमात्मा का अनुपम जगत हैं यह एक प्रकार की यज्ञशाला है और हम सर्वत्र प्राणी मात्र उस यज्ञशाला में विद्यमान है और अपना–अपना अनूठा क्रियाकलाप कर रहे हैं। और उस यज्ञशाला में यज्ञन कर रहें हैं। क्योंकि अपने कर्तव्यवाद की महती में जब मानव रत हो जाता है तो परमपिता परमात्मा के जगत में ये स्वीकार करता है कि मैं अपने प्रभु के जगत में हूँ जगत् ही ये मानो एक प्रकार की यज्ञशाला है। यहाँ प्रत्येक मानव अपने क्रियाओं में रत रहता हुआ मानो याग में परिणत रहता है। तो याग मुनिवरो! देखो, इसका आयतन और गृह मानो उसी में वो सर्वत्रता में बेटा! अपने में रत हो रहा है। इसीलिए मानव को ये स्वीकार करना है। कि हम सब प्रभु के गर्भ में, जिस प्रकार माता के गर्भ स्थल में हम जैसे शिशु पनपते रहते हैं और माता उसका लालन पालन करती रहती है और परमपिता परमात्मा उसका निर्माण करता रहता है। जैसे परमपिता परमात्मा ने ये यज्ञशाला का, ब्रह्माण्ड का निर्माण किया, इसी प्रकार माता के गर्भस्थल में निर्माणवेत्ता निर्माण कर रहा है, और यह मानो शरीर रूपी यज्ञशाला का निर्माण कर रहा है जिसमें मुनिवरो! देखो, सप्त होता विद्यमान है और नौ द्वारों की ये मानो यज्ञशाला है जहाँ मुनिवरो! देखो, विराजमान होकर के मानव याग कर रहा है। माता याग कर रही है। ये मानवीय अपनी आभा में रत हो रहा है।

मेरे प्यारे! देखो, हमारे यहाँ नाना प्रकार के याग परम्परागतों से ही माने गए हैं। जैसे हमारे यहाँ अश्वमेघ याग है, कन्या याग का वर्णन आता रहता है मेरे प्यारे! देखो, यागां रूद्र भाग प्रमाणं देवाः मेरे पुत्रो! देखो, जैसे कन्या याग का वर्णन आता रहा है। हमारे यहाँ वाजपेयी याग और अग्निष्टोम यागों का प्रायः वर्णन आता रहता है और उन में नाना प्रकार की आभाएँ निहित रहती हैं।

पितर

मेरे पुत्रों! देखो, हमारे यहाँ कन्या याग का वर्णन महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने वर्णन किया है उन्होंने कहा है कि सबसे प्रथम मानो देखो, कन्या देवां ब्रह्मणो देवत्यां ब्रहे वह द्यौ–लोक में रहती है। द्यौ–लोक में बेटा! उसकी देवता रक्षा करते हैं। वह देवत्व को प्राप्त हो जाती है। परन्तु जब वह मानो देखो, देवयाग से, देवताओं के लोक से प्रवृत्त होती है तो मानो वह पितरलोक को प्राप्त हो जाती है। पितरजन मेरे प्यारे! कौन होते हैं? हमारे यहाँ पितरों की बड़ी विचित्र विवेचना है। मानो पितर हमारे देवताओं को कहते हैं। पितर हमारे यहाँ जो विद्या का अध्ययन कराता है वो भी पितर जन कहलाते हैं और पितर मुनिवरो! देखो, सूर्य, चन्द्रमा मेरे पुत्रो! देखो, आपोमयी अग्नि और पृथ्वी यह सब हमारे पितर कहलाते हैं।

परन्तु दो प्रकार के पितर कहलाते हैं एक जड़वत है, तो एक चैतन्यवत् है। मेरे प्यारे! देखो, चेतना में माता है, पितरजन है आचार्य जन है ये सब हमारे पितर कहलाते है। जैसे बेटा! सूर्य ऊर्ज्वा देता है। वह भी पितर है और पितर नाम मानो देखो, परमपिता परमात्मा को भी कहा गया है। और पितर नाम चन्द्रमा का भी है जो हमें देखो, अमृत देता है और अमृत को पान करके मुनिवरो! देखो, वह हमारे पितर जन हैं। पितरों में मुनिवरो! देखो, यह आपो, यह पृथ्वी भी आती है। ये पृथ्वी हमें नाना प्रकार का गुरुत्व देती है आभा परिणत करती रहती है। मेरे प्यारे! देखो, ये पृथ्वी को, वेद के आचार्यो ने बेटा! वसुन्धरा कहा है। यह वसुन्धरा है, ममत्वा है, पितर है, ये नाना प्रकार के मानो देखो, खनिज और खाद्य पदार्थो को प्रदान करती रहती है नाना प्रकार के परमाणु एक दूसरे में रत होते रहते हैं।

तो मुनिवरो! देखो, ये पृथ्वी हमारी पितर कहलाती है। आपोमयी ज्योति जो मेरे पुत्रो! देखो, आपोमयी ज्योति जो पितर है, ये आपो है, ये जल है। जल को ही आपो कहते है। मेरे प्यारे! जब माता के गर्भ स्थल में शिशु विद्यमान होता है या हम जैसे पुत्र विद्यमान होते है तो बेटा! देखो, यह जल, आपो ही उसका ओढ़न है आपो ही मुनिवरो! देखो, उसका आसन है। आपो ही पासें बने हुए हैं। मेरा प्रभु कितना विज्ञानवेत्ता है। माता को प्रतीत नहीं हो रहा है। मानो देखो, कौन आसन बना हुआ है। बेटा! वह आपोमयी ज्योति कहलाने वाला है और वह ज्योति लिंगोमयी ज्योति व्रताः है।

तीन आचमन

तो मुनिवरो! देखो, हम उस आपो को अपने में धारण करें। वह अमृत है। मुनिवरो! देखो, यजमान अपनी यज्ञशाला में तीन आचमन करता है एक ओढ़न का, एक आसन का, दूसरा मानो पासो का। ये तीन आचमन भी इसीलिए किए जाते हैं। तीन आचमनो का भी कुछ रहस्यतम है। जैसे आधिदैविक, आधिभौतिक और आध्यात्मिक मुनिवरो! देखो, यह सर्वत्र उसमें विद्यमान रहता है। तो मुनिवरो! देखो, आपो ही हमारा जीवन, आपो ही देवता कहलाया गया है बेटा! अग्नि हमें उष्णता दे रही है। मानो देखो अग्नि उष्ण बनाती है जितना तप माता के गर्भ में चाहिए हमें, उतना वह आपो अब्रतम् मानो यह अग्नि प्रदान करती रहती है। हे अग्ने! तू मानो देखो, काष्ठों में गमन कर रही है। हे अग्नि! तू मानो द्यौ से प्रकाश लेकर के, द्यौ में रमण करती रहती है। हे अग्नि! तू मानो अखण्ड रहने वाली है जो मानो माता के गर्भस्थल में पनपती रहती है और माता मानो उसी से धारयामि, धारण करने की शक्ति, उसी में विद्यमान होती है। वही अग्नि बेटा! काष्ठों में, वही यजमान की यज्ञशाला में विद्यमान रहती है। मेरे प्यारे! देखो, वह ऊर्ध्वा में गमन करने वाली है। मेरे पुत्रो! देखो, वही अग्नि आपो ऊष्ण बनाने वाली है ये ऊष्ण कहलाती है मानो देखो, अग्नि जब प्रदीप्त हो जाती है। तो मानो अपने में प्रदीप्त होकर के जीवन की आभा में परिणत हो जाती है। यह अग्नि हमारी देवता है।

प्राण की प्रतिष्ठा

मेरे प्यारे! देखो, आपं ब्रह्माः आपो अब्रतं अग्निः बेटा! देखो, अग्नि वहाँ रहती है जहाँ वायु होता है। वायु गमन कर रहा है वायु बेटा! देखो, गमन करके प्राण सत्ता प्रदान कर रहा है। ये प्राणस्वे अमृतं ब्रह्माः ये प्राणेश्वर हमारे हृदयों में मानो विद्यमान रहता है यही प्राण बेटा! ब्रह्माण्ड को अपने में धारण किए रहता है ये मानो देखो, माता के गर्भ स्थल में प्राण की स्थापना, प्राण की प्रतिष्ठा हो जाती है। ये मानो प्राण–प्रतिष्ठा को पाकर के बेटा! अपने जीवन को संचालित कर रहा है। यही प्राण है बेटा! प्राण, अपान, उदान, समान और व्यान मुनिवरो! देखो, यह पांच प्राण कहलाते है। पांच उपप्राण है। प्राणं ब्रहे बेटा! नाद, देवदत्त, धनंजय, कुरु, कृकल ये मानो देखो, ये दस प्राण कहलाते हैं। देखो ,दस प्राणों में ये ब्रह्माण्ड अपने में मानो स्थित हो रहा है। मानव का शरीर भी दस प्राणों की आभा में निहित हो रहा है।

संसार रूपी यज्ञशाला

मेरे पुत्रो! देखो, कैसा मेरे प्यारे प्रभु की रचना है। हे रचनाकार! तू रचना में रत करने वाला है, तू महान है। तो मेरे प्यारे! देखो यह अभ्य ब्रह्माः कृते देवा श्वंजनमं मुनिवरो! देखो, यह परमात्मा का रचाया हुआ जगत है। जो एक प्रकार की यज्ञशाला के रूप में विद्यमान है। यहाँ याग हो रहा है। प्राणों को जानना भी याग है। प्राणेश्वर की आभा में रत रहना भी एक याग है। तो बेटा! देखो, उस याग में परिणत रहने वाला मानव अपने में मानवीयता को धारण करता हुआ, इस सागर से पार हो जाता है। तो परमपिता परमात्मा ने मानव शरीर की जो रचना की है ये बेटा! यज्ञशाला है। इसमें याग हो रहा है। माता अपने गर्भ स्थल में याग कर रही है, शिक्षा दे रही है। ओजस् बना रही है मानो बेटा! एक देखो, इस विज्ञानवेत्ता विज्ञानमयी, अमृतमयी बेटा! देखो, इस युगील लोक को जान रहा है। मानो देखो, पंच महाभूतों को जानकर के, वो नाना प्रकार का देखो, याज्ञिक बना हुआ है और विज्ञानवेत्ता बना हुआ है। वही जब इनको आन्तरिक जगत में ले जाता है तो बेटा! आन्तरिक जगत में भी याग हो रहा है।

आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा तुम्हें प्रकट करने नहीं आया हूँ। मैं व्याख्याता नहीं हूँ। केवल विचार देने के लिए आता हूँ कि हमारा जीवन एक प्रकार की यज्ञशाला के रूप में विद्यमान है। ये ब्रह्माण्ड परमात्मा का रचाया हुआ एक यज्ञशाला है। इसमें बेटा! एक दूसरा प्राणी, एक दूसरा लोक, एक दूसरे में पिरोया हुआ है। एक दूसरे की, दूसरे में माला बनी हुई है। बेटा! माला को धारण करने वाला मुनिवरो! वैज्ञानिक कहलाता है यौगिक कहलाता है। उसमें रूढ़ियों नहीं होती।

मुनिवरो! देखो, संसार में दो प्रकार के विचार होते है। एक यौगिक होता है, एक रूढ़ि होता है। बेटा! रूढ़िवाद में मानो देखो, रूढ़ियाँ व्रत कहलाता है। और यौगिकवाद में संसार एक सूत्र में पिरोया जाता है। तो मेरे प्यारे! यहाँ नाना प्रकार की माला को धारण करने वाला मानव, अपने में रत हो जाता है।

आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा तुम्हें प्रकट करने नहीं आया हूँ आज मानो देखो, ब्रह्मणं व्रहे देखो, उच्चारण करने का अभिप्राय यह कि हम याज्ञिक बनें। याग में अपने को ले जाये। यौगिकवाद में ले जाये, संकीर्णवाद हमारे से दूरी हो जाये। आओ मेरे प्यारे! आज का विचार अब मेरे प्यारे महानन्द जी दो शब्द उच्चारण करेंगे।

पूज्य महानन्द जी

ओ३म् यमाः रथश्चं देवाः हिरण्यश्च रथं ब्रह्मणः

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मेरे भद्र ऋषि मण्डल! अभी–अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव गागर में सागर की कल्पना कर रहे थे और यह इनका विचार सदैव आभा में बना रहता है। पूज्यपाद गुरुदेव की एक ही उत्कट इच्छा होती है, कि एक सूक्ष्म से वाक् में ब्रह्माण्ड को उत्पन्न कर दिया जाये। परन्तु ऐसा विचार प्रायः एक–एक वेद मन्त्रों में ही वाक् उच्चारण करना है। जहाँ हमारी वाणी जा रही है वहाँ एक याग का मानो देखो, उद्गीत हुआ और याग सम्पन्न हुआ। याग में, मेरा अन्तर्हृदय यजमान के साथ रहता है और मेरा अन्तरात्मा यही कहता है यजमान! तेरे जीवन का, सौभाग्य अखण्ड बना रहे। सदैव तेरे गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता रहे। क्योंकि ये जो आधुनिक काल चल रहा है। मैं इस काल को पूर्व से ही वाम मार्ग का काल कहता हूँ और वाम मार्ग उसे कहते जो उलटे मार्ग पर गमन करता है। जिस समाज में, जिस राष्ट्र में देखो, जहाँ जहाँ आहार और व्यवहार और क्रियाकलापों का परिवर्तन हो जाता है और द्रव्यवाद में सर्वत्र संसार उसमें निहित होता रहता है। तो मैं कहता हूँ हे यजमान! तेरे द्रव्य का सदैव सदुपयोग होता रहे और मानो देखो, देवयज्ञ सदैव, जो ऋषि–मुनियों की परम्परा है ऋषि मुनियों का जो क्रिया कलाप है उसे अपने में धारण करता रहे।

धर्म का दर्शन

मैं विशिष्ट चर्चाओं में जाना नहीं चाहता हूँ। क्योंकि ये विचार मेरे पूज्यपाद गुरुदेव सदैव देते रहते हैं। इन्होंने अभी–अभी देखो, इससे पूर्व कालों में ये चर्चाएँ की है कि पातालपुरी में एक क्रांति आई थी। उस क्रांति में देखो, जहाँ नाग संप्रदाय था और नाग सम्प्रदाय में देखो, उस भाग्यव्रर्तम महाराजा सगर के काल में मानो देखो, वो समाज आया। ये समाज जब पांडुओं ने अपने राष्ट्र में एक क्रांति की पाण्डु राजा बने। तो उनके काल में भी देखो, सम्प्रदाय इस राष्ट्र में आ पहुँचे। और मानो देखो, नाग सम्प्रदाय, वो नाग नहीं वो मानव था परन्तु नाग एक सम्प्रदाय था और वह सम्प्रदाय आकर के देखो, हम सब में रमण कर गया। उनका विचार, उनकें क्रियाकलाप सब उसी में रत हो गया। परन्तु देखो, ये आधुनिक काल चल रहा है। यह ऐसा विचित्र, इसमें ऐसी निष्क्रियता आई है कि देखो, अपने में मिलान करने की प्रवृत्ति सूक्ष्मतम रह गई है। परन्तु देखो, मानव–मानव को नष्ट कर रहा है और मानो उसमें शांत दृष्टिपात कर रहा है।

ये राष्ट्रवाद की मानो हीनता मानी जाती है मानो देखो, किसलिए होता है? समाज को कर्तव्यवाद में लाने के लिए और कर्तव्य का नाम ही मानो देखो, धर्म माना गया है। मानो धर्म किसी रूढ़िवाद को नहीं कहते। आज का मानव, आज का राष्ट्र कहता है नाना धर्म है। हे राजन्! तू नाना धर्म क्यों कह रहा है? हे राष्ट्रवेत्ताओ! तुम्हारा तो कर्तव्य, धर्म तो एक ही होता है। धर्म तो मानो मानवीयता में समाहित रहता है। धर्म रूढ़ियों में नहीं होता। इसलिए नाना प्रकार की रूढ़ियों का नाम धर्म नहीं कहा जाता, धर्म कहते है जो मानव की इंद्रियों से मानो जिसकी उपलब्धि होती है।

इन्द्रियों की पवित्रता

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे वर्णन कराया, बहुत समय पूर्व कि मानव के नेत्र जब सुदृष्टि पान करते हैं तो मानव का अन्तर्हृदय धर्म में परिणत हो जाता है। मानव के श्रोत्र जब शुद्ध, पवित्र शब्दों को ग्रहण करते है तो मानो उसके श्रोत्र पवित्र होते है। और जब घ्राण में सुगन्धि आती है तो वो सुगन्ध कहीं विचारों शब्दों की सुगन्धि है तो कहीं मानो देखो, पदार्थो की सुगन्धि है और जब सुगन्धि विचारों शब्दों की, दोनों का प्रादुर्भाव हो जाता है तो मानो देखो, अब्रहे व्रतम् देखो, वह सुगन्ध, घ्राण को ग्रहण करने लगती है। घ्राण इन्द्रियाँ पवित्र बन जाती है। वाणी से सदैव सत्य उच्चारण कीजिए। मानव दर्शन को उद्गीत रूप में गाइए। जब गाते रहोगे, तो देखो, जैसे स्नेह है, प्रीति है ये सब एक धर्ममयी कृत माना गया है। धर्म मानो देखो, इंन्द्रियों में सर्वत्र समाहित हो रहा है और इंन्द्रियों से जो विपरीत है जो इंन्द्रियों में कुदृष्टि, कुविचार, कुशब्द आते हैं वही मानो देखो, उस राष्ट्रवाद को अपवित्र बना देते हैं। और मानव के शरीर को अपवित्र बना करके वह अधर्म बन जाता है। धर्म वही है। जो मानो कर्तव्यवाद, इंन्द्रियों से सूदृष्टि पान करता रहता है।

एकोकी धर्म

तो मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने यह बहुत पुरातन काल में वर्णन कराया, पुरातन काल में देखो, राष्ट्र जब अपने में राष्ट्रवाद की चर्चा करता रहा है तो सबसे प्रथम इंन्द्रियों के ऊपर उन्हें बल दिया है और ये बल दिया कि इंन्द्रियों को पवित्र बनाओ। जिससे प्रत्येक मानव की इन्द्रियों का भाव जब पवित्र हो जाता है तो मानव का जीवन मानवता में परिणत हो जाता है और रूढ़िवाद को त्याग देता है। और वह धर्म मानवीयता को अपना करके, अपने में अपनेपन का भान करने लगता है।

तो विचार आता रहता है मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे कई काल में ये वर्णन कराया। परन्तु हे भोले राजन्! तू नाना धर्म मत उच्चारण कर, तू मानो एकोकी धर्म को लेकर गमन कर और धर्म उसे कहते हैं जो इंन्द्रियों में समाहित है जो दर्शनों में समाहित है। मानव दर्शन जिसके ऊपर निहित रहता है। वही एक धर्म और मानवीयता कहलाती है। परन्तु कर्तव्यवाद की जो त्याग देता है। अरे, जब राष्ट्र ही अपने कर्तव्यवाद को त्याग देता है तो मानो देखो, कर्तव्य में धर्म कहाँ रहेगा।

रूढ़ियों से विनाश

तो विचारने से प्रतीत होता है। ये नाना प्रकार की जो ईश्वर के नाम पर रूढ़ियाँ बन जाती है। ये रूढ़ियाँ राष्ट्र का विनाश कर देती है और राष्ट्र में रक्त भरी क्रांति की उपलब्धि ला देती है। मैंने बहुत पुरातन काल में अपने पूज्यपाद गुरुदेव से ये यह कहा था कि सुगन्ध देना ही धर्म है और दुर्गन्ध को उत्पन्न करना ही अधर्म माना गया है। इसीलिए हे मानव! तू सुगन्धि को लाने का प्रयास कर, प्रत्येक गृह में देखो, वेद की ध्वनि आ रही है, दर्शनों की चर्चा हो रही है। यागमयी पूजा हो रही है। मानो वो गृह कितना पवित्र है, उस गृह में कितनी मानवता है। इसीलिए देखो, उसी का नाम धर्म है। वे तरंगे जब उत्पन्न होती है तो उन तरंगों में महानता होती है। उन तरंगों में एक उज्ज्वलता होती है, उन तरंगो को धारण करने का नाम मानो देखो, धर्म कहा गया है।

हे धर्मज्ञं ब्रह्माः धर्मज्ञं लोकां धर्म ब्रह्म कृते देवाः क्योंकि पूज्यपाद गुरुदेव ने कहा है कि भगवान् मनु ने सबसे प्रथम राष्ट्र का निर्माण किया और राष्ट्र का निर्माण इसलिए किया क्योंकि समाज में कर्तव्यवाद आ जाये और कर्तव्यवाद के लिए राष्ट्र का निर्माण होता है और कर्तव्यवाद के गर्भ में धर्म है, मानवता है, मानवीय दर्शन है, विज्ञान है। मानो देखो, उसमें सार्थकता विद्यमान रहती है।

इसलिए मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को ये वर्णन करा रहा हूँ क्योंकि इन्हें तो सब प्रतीत है। परन्तु आधुनिक काल में जो निष्क्रियता आ गई है। वे बड़ी मानो देखो, अमानवीयता कहलाती है और वह अमानवीयता मानव के जीवन को स्थिर नहीं रहने दे रही है। इसीलिए मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है पूज्यपाद गुरुदेव ने जो वर्णन कराया कि मानव अपने में नष्ट होता जा रहा है। तो विचार आता है। ये विचार देखो, हे यजमान! मेरे जीवन की प्रतिभा में लाना चाहता हूँ क्योंकि तेरा जीवन सदैव सत् निष्ठावान और कर्तव्यवाद में निहित हो जाये। क्योंकि कर्तव्यवाद ही मानव को देवत्व बनाता है और अकर्तव्यवाद मानव को दैत्य बना देता है।

तो दैत्य प्रवृत्ति न रह करके वह शुद्ध पवित्र प्रवृत्ति बनती हुई मानो देखो, अपने जीवन की आभा को ऊर्ध्वा में गमन कर हे यजमान! मेरी अन्तरात्मा तेरे साथ रहता है। यजमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे और तू महानता में परिणत होता रहे और राष्ट्र और समाज को ऊर्ध्वा में गमन कराने का प्रयास कर, ऐसा मेरा मन्तव्य रहता है। मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से वर्णन कराता रहता हूँ। पूज्यपाद गुरुदेव के विचारों में बड़ी गम्भीरता, सात्विकता और इतिहास और साहित्य को जब ये क्रिया में लाते हैं तो हमारा जीवन शाश्वत हो जाता है। पूज्यपाद कहाँ से इन शब्दों को लाते हैं। और चर्चाएँ तो विशेष मानो देखो, पूर्व काल में ही प्रकट होगी।

देखो, मानव–मानव को ऊर्ध्वा में गमन कराओ। हे राजन्! तुझे यह भी दृष्टिपात करना है कि मुझे अपने अपने राष्ट्र में जो नाटकीय क्रियाकलाप हो रहे हैं, हमारे पूर्वजों के ऊपर जो नाना प्रकार का देखो, अभद्र व्यवहार हो रहा है उनके ऊपर भी विचार–विनिमय करना है इसके ऊपर अनुसंधान और विद्वानों के द्वारा एक अन्वेषण होनी चाहिए। जिससे मानो तेरा राष्ट्र ऊँचा बनें। तेरे राष्ट्र में साहित्य, इतिहास के पन्ने पृष्ठ भी मानो देखो, विचित्र बने रहे। ऐसा मेरा मन्तव्य है। जिस राजा के राष्ट्र में देखो, साहित्य चला जाता है या मानो देखो, उसके द्वारा कुछ नही रह पाता। इसीलिए चाहिए कि राष्ट्र में एकोकी करण शुद्धिवर्णन जैसे हमारे पूर्वजों के ऊपर एक लांछन होता है तिरस्कार होता है वह नहीं होना चाहिए। मेरी प्यारी! माताओं ने जो तपस्याएँ की है, उन तपस्याओं को अग्रणीय बनाना चाहिए।

माताओं की तपस्या

जैसे मैंने बहुत पुरातन काल में पूज्यपाद गुरुदेव को कहा गया कि मानं ब्रह्मे माताओं ने तपस्या करके देखो, अर्जुन, भीम इत्यादियों को जन्म दिया है। जो धर्म की विवेचना करने के पश्चात् माता के गर्भ में जब गर्भ की स्थापना होती तो गुणों का बाल्य को माता मानो निर्माणित करती, उसी देवता का वह गुणगान करके उसके गुणों को अपने में धारयामि बनाती रही है। और देखो, उस में देवताओं का अभ्योदय रहा है। परन्तु देखो, रजस्तम मात्रोरस्तम् और पितर के द्वारा ही संचालित होता रहा है। परन्तु देखो, उसमें अभद्र व्यवहार नही होना चाहिए। जैसे कागभुषुण्डी जी की चर्चा आती है। कागभुषुण्डी जी की माता का नाम रेणुका था और पिता का नाम सोमकेतु ऋषि था। परन्तु देखो, उसको कागा के रूप में अभद्रता में व्यवहार किया जाता है। ये राष्ट्रवाद का

कर्तव्य है, राष्ट्रवाद को चाहिए कि इतिहास और साहित्य पवित्र रहना चाहिए। इसमें मानवीय दर्शन होनी चाहिए और इतिहास की आभा बड़ी विचित्र होती है।

उसमें उसके ऊपर मानो देखो, सम्प्रदायों का निर्माण होता है वो संप्रदा हे राजन्! तेरे राष्ट्र में रूढ़ि नहीं रहनी चाहिए। ऐसा मेरा मन्तव्य रहता है। आज मैं मानो अपने विचारों को विराम दे रहा हूँ। विराम देने से पूर्व हे यजमान! तेरे जीवन में आभा और पवित्रता बनी रहे। द्रव्य का सदुपयोग होना ये मानो देवपूजा के माध्यम से होना चाहिए। ऐसा ये मेरा विचार है अब मैं अपने विचारो को विराम दे रहा हूँ। पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पा रहा हूँ।

ओ३म् देवाः आभ्यां रथं मानं त्वाः रेधि
आभ्यां रथं मां रेवा गतं आपाः

अच्छा, भगवन् आज्ञा

विज्ञान का सदुपयोग

27—1—1989
251, दिल्ली गेट, दिल्ली

जीते रहो,

देखो, मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भाँति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन—पान किया। हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद—वाणी का प्रसारण होता रहता है। जिस पवित्र वेद—वाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी है और उसकी अनन्तता एक, एक वेद मन्त्र हमें उद्गीत रूप में गा रहा है और उसकी महिमा और उसकी महानता को दृष्टिपात करते हुए हमारे ऋषि मुनि परम्परागतों से बेटा! अन्वेषण और अनुसंधान करते रहे हैं। इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा की महती और उसकी अनन्तता के लिए सदैव उनका गुणगान गाते रहे। जिससे हमारा अन्तर्हृदय अगम्पता को प्राप्त होता हुआ अपनी मानवीयता के ऊपर अपना विचार—विनिमय करता हुआ, इस सागर से पार हो जाये।

ऐसा बेटा! हमारा सदैव एक मन्तव्य रहा है कि हम उस परमपिता परमात्मा को अपना सखा बनाकर के और जितना भी ज्ञान और विज्ञान हमें दृष्टिपात आ रहा है। मानो ये उसी की अनुभूति अपने में पान और अपने में दृष्टिपात करते रहें कि बेटा! हमें उस परमपिता परमात्मा को अपनी आभा में परिणत कर सकें।

तो विचार क्या है, ये आज का हमारा वेद मन्त्र हमें कुछ वर्णन कर रहा है। वेद के एक, एक मन्त्र में बेटा! ज्ञान और विज्ञान प्रायः निहित रहता है। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही राष्ट्रवाद की और मानवीयता की चर्चा होती रही है। क्योंकि राष्ट्रवाद और मानववाद इसके ऊपर मानव बड़ी गम्भीरता में अपने को ले गया है और उसके ऊपर चिन्तन, मनन और गम्भीर मुद्रा में मुद्रित हो गया है। जिससे बेटा! हम उस परमपिता परमात्मा के राष्ट्र और मानवीयता के ऊपर विचार विनिमय करते चले जाये क्योंकि ये जो सर्वत्र ब्रह्माण्ड है ये उस परमपिता परमात्मा का राष्ट्रवाद है। मानो देखो, इस राष्ट्रवाद का जब, निम्न श्रेणी में आ जाता है, तो मानो देखो, वो परमात्मा का राष्ट्र न स्वीकार करता में होता हुआ मानो अपना राष्ट्र स्वीकार करता रहता है और उसी अधूरेपन में होता हुआ मानो उसी अपनेपन में मानो देखो अपनी प्रतिभा को नष्ट कर देता है।

परमात्मा के राष्ट्र की अनुभूति

तो इसीलिए हमें विचार—विनिमय करना चाहिए कि हम परमात्मा के राष्ट्र में विद्यमान है और परमात्मा के राष्ट्र में बेटा! प्रत्येक मानव, परमात्मा के राष्ट्र की अपने में अनुभूति कर रहा है और विचार रहा है कि मैं परमात्मा की अनुपम आभा में विद्यमान हूँ। तो मेरे प्यारे! हमारे यहाँ ये माना गया है कि जब से इस संसार में राष्ट्रवाद की अनुभूति होने लगी है तभी से मुनिवरो! देखो, मानव—मानव के रक्त का पिपासी बन गया है। परन्तु मैंने बहुत पुरातन काल में तुम्हें एक वाक् कहा था कि राष्ट्रवाद की उपलब्धि यह नहीं है कि एक मानव—मानव के रक्त का पिपासु बन जाये। राष्ट्रवाद की जो सब से महान एक उपलब्धि है वो ये है कि प्रत्येक मानव अपने कर्तव्य का पालन करने लगे और कर्तव्यवाद में जब मानव और राष्ट्र दोनों का समन्वय हो जाता है तो मुनिवरो देखो, वह मानव अपनी मानवीयता में रत होकर के कर्तव्यवाद की वेदी पर निहित हो जाता है।

मुझे वो काल स्मरण आता रहता है। मुनिवरो! जिस समय ऋषि मुनि एकन्त स्थली पर विद्यमान होकर के राष्ट्रवाद की चर्चा करते रहे हैं और ज्ञान और विज्ञान की उड़ान भी उड़ते रहे हैं। नाना प्रकार के विज्ञान में रत होना और उस विज्ञान में जो मानव को उपलब्धियाँ हुई है, उन उपलब्धियों को अपने में धारण करता हुए मुनिवरो! देखो, एक अपने विचार और मानवीयता में परिणत होता रहा है।

विज्ञान में यौगिकवाद

आओ, मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें बहुत ऊर्ध्वा में तो नहीं ले जा रहा हूँ। हमारे यहाँ राष्ट्रवाद की चर्चाएँ और विज्ञान की महान उपलब्धियाँ मानव के अन्तःकरण में होती रही हैं। उस अन्तः करण की जो वृत्तियाँ और एक मानो उपलब्धियाँ है उसको जानना मानो बहुत अनिवार्य है। मेरे प्यारे! देखो, मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन करते हुए कहा था, आज भी मुझे वो पुनः से स्मरण आ रहा है। मुझे वो काल स्मरण है बेटा! जब महर्षि भारद्वाज मुनि के आश्रम में नाना ऋषिवर विद्यमान होकर के ज्ञान और विज्ञान की प्रतिभा को दृष्टिपात करते रहे। बेटा! देखो, ये वास्तं ब्रह्माः व्रतं चित्रो रथं ब्रह्माः मेरे प्यारे! देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि के यहाँ बेटा! नाना प्रकार की चित्रावलियों की उपलब्धि हुई। जिन चित्रावलियों में बेटा! देखो, ज्ञान और विज्ञान की बड़ी विचित्र उड़ाने उड़ी जाती और उन उड़ानों में बेटा! नाना प्रकार के उपकरण, नाना प्रकार की बेटा! देखो, विज्ञान की आभा, जो चित्रावलियों में बेटा! प्रायः दृष्टिपात आती रही। उसके पश्चात् भी मानो अपने में राष्ट्रीयता की उड़ानें उड़ता रहा है। तो मेरे प्यारे विचार—विनिमय क्या, हमारे यहाँ ऋषि मुनियों ने यही कहा है कि विज्ञान मानव की एक महान उपलब्धि है। परन्तु विज्ञान में जब कर्तव्यवाद, विज्ञान में जब नाना प्रकार की चित्रावलियों में बेटा! जहाँ यौगिकवाद नृत्य करता रहा है तो वे विज्ञान में मानो जाने के पश्चात् ही अपने राष्ट्र और समाज को ऊँचा बनाता है।

पातालपुरी की क्रान्ति

तो मेरे प्यारे! देखो, हमने बहुत पुरातन काल में मानो, नाना प्रकार की चित्रावलियों में ये निर्णय लेते हुए, मुझे वो काल स्मरण आता रहता है जब बेटा! भारद्वाज मुनि के यहाँ नाना ऋषिवर विद्यमान है और नाना ऋषियों ने ये कहा—कि प्रभु! हम आपके इस विज्ञानमयी धारा को जानने के लिए आए हैं? क्योंकि विज्ञान अपने में बड़ा सार्थक रहा है। क्योंकि हमने बेटा! इससे पूर्व काल में तुम्हें वर्णन कराया। कि ये विज्ञान की उपलब्धियाँ थी। जब मुनिवरो! देखो, महात्मा कपिल मुनि महाराज के समय में उनके विद्यालय के ब्रह्मचारी मुनिवरो! देखो, अपने अस्त्रो, शास्त्रों की आभा में युक्त होने से मुनिवरो! देखो, उन्होंने बहुत से प्राणी मुनिवरो! देखो पाताल पुरी में एक रक्तमयी क्रांति उपलब्धि हुई थी।

मेरे प्यारे! मैं बहुत पुरातन काल की चर्चा कर रहा हूँ और वही क्रांति देखो, राजा सगर के यहाँ हुई थी। जब मुनिवरो! देखो, कपिल मुनि का अपमान किया और अपमान करने से मानो देखो, उनके यहाँ जो विद्यालयों में ब्रह्मचारी अध्ययन करते थे वह पातालपुरी कहलाती थी। मुनिवरो! देखो, उन्होंने अमृतं नमृति देखो, जय और विजय ने अपने वैज्ञानिक यंत्रों से मेरे पुत्रो! देखो, उनकी बहुत—सी सेनाएँ राजा सगर की नष्ट कर दी, सेना नष्ट होने से मुनिवरो! देखो, राजा सगर को अपने में यह अनुभव हुआ कि मैंने मानो देखो, ये बड़ा अप्रतं ब्रहा पसतम् मेरी सेना नष्ट हो गई। तो मुनिवरो! यह क्यों हुई? क्योंकि कर्तव्य का पालन न करने से, राजा के राष्ट्र में रक्त भरी क्रांतियाँ की उपलब्धियों में मानो देखो! रक्त भरी क्रांति आ जाती है।

मेरे प्यारे! देखो, मुझे स्मरण है। जब मुनिवरो! देखो, महर्षि गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज की संरक्षणता में मुनिवरो! देखो, एक समाज भ्रमण करता हुआ और यह विचारने लगा कि हम तो महर्षि भारद्वाज मुनि के विद्यालय में जो विज्ञान की उपलब्धि है उसे हम अपने में धारयामि बनाना चाहते हैं। मेरे पुत्रो! वह भ्रमण करते हुए कजली वनों में मुनिवरो! देखो, उनका आश्रम निहित था। जहाँ मेरे प्यारे! इतना अहिंसा परमो धर्म रहता कि देखो, हिंसक प्राणी भी, आश्रम में भ्रमण करते रहते थे। परन्तु इतना मानो चित्रावलियों का निर्माण होता रहता था। जिन चित्रवालियों में मेरे पुत्रो! देखो, नाना वृत्तिया विद्यमान रहती और उन चित्रावलियों में मेरे पुत्रो! एक—एक शब्द, एक—एक कृतिका मानो उसमें निहित और उसमें दृष्टिपात आती रहती।

मेरे पुत्रो! देखो, जब गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज की अध्यक्षता वाला समाज, मुनिवरो! देखो, उनके द्वार पर पहुँया है। भारद्वाज ने अतिथि करने के पश्चात नम्रता से कहा—कि प्रभु! मेरे आश्रम में तुम्हारे आने का कारण क्या है? उन्होंने कहा—कि प्रभु! हम आज अपने आश्रम में विद्यमान थे न्यौदा में कुछ मन्त्रों का अध्ययन कर रहे थे और न्यौदा में मन्त्रो का अध्ययन करते—करते मानो देखो, हमारे हृदय में ये आकांक्षा और जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि हम मानो देखो, चित्रावलियों में, शब्दों में अपनी आभा को दृष्टिपात करना चाहते हैं। मानो देखो, हमारे हृदयों में ये विचार धारा आई कि चलो, महर्षि भारद्वाज मुनि के यहाँ चित्रावलियों का दर्शन करें। तो हे भगवन्! हम तुम्हारे आश्रम में आए हैं, हमारा पदार्पण होने का कारण ये है कि तुम्हारी चित्रावालियों को दृष्टिपात करना चाहते हैं।

मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने अतिथि करने के पश्चात सर्वत्र मुनिवरो! देखो, विद्यालय का भ्रमण करने लगे। जब विद्यालय में नाना प्रकार की चित्रावलियों का दर्शन किया। तो बेटा! सबसे प्रथम मानो उन चित्रावलियों का दर्शन किया जिन चित्रावालियों में अमृतं ब्रहे कस्सुतं बृहि चंकलाहारस्ते मेरे प्यारे! देखो, मानो शब्द उच्चारण कर रहा है और वह शब्द मेरे पुत्रो! देखो, गतिवान हो रहा है। शब्दां ब्रह्मे मानो वह एक स्थली पर विद्यमान है। उस मानव के प्रस्थान होने के पश्चात् मेरे पुत्रो! देखो, उनकी चित्रावलियों में अमृतां ब्रह्मणे लोकाम् मेरे प्यारे! देखो, ढ़ाई घड़ी के पश्चात् एक यन्त्र को उन्होंने निर्माण किया जिस यंत्र में मुनिवरो! देखो, उनकी चित्रावलियों का दर्शन होता रहा। मेरे प्यारे! देखो, ढ़ाई घड़ी के पश्चात मानव के प्रस्थान करने के पश्चात भी चित्रों का दर्शन होता।

यन्त्र से ध्रुव लोक की यात्रा

तो मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा—प्रभु! आप को धन्य है। राजा अपनी चित्रावलियों में उस काल में सफलता को प्राप्त होता है। जब मानो देखो, अपने राष्ट्र में किसी प्रकार का दोषारोपण करने के पश्चात उन चित्रावलियों में उनका चित्र आ जाये और चित्रों से मुनिवरो! देखो, उसको दृष्टिपात करके उसको दण्डित करने वाले हो। तो मेरे प्यारे! देखो, ढ़ाई घड़ी के पश्चात् जब उनका चित्र आ जाता है तो वो विज्ञान में, अपने में सफलता को और राष्ट्रवाद में सफलता को प्राप्त हो जाते है। तो मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने नाना प्रकार के ज्ञान और विज्ञानमयी धारा वाले उस अपने विद्यालय को उन्होंने दृष्टिपात कराया। नाना प्रकार के देखो, ब्रह्मास्त्र है, वरूणास्त्र है आग्नेयास्त्र है। मुनिवरो! नाना प्रकार के अस्त्रों—शस्त्रों से मानव मेरे प्यारे! देखो, अपनी विज्ञानशाला को सजातीए बना रहा है। विचार आता रहता है। मेरे प्यारे! देखो, अब उन्होंने सर्वत्र राष्ट्र का भ्रमण किया। भारद्वाज मुनि के यहाँ एक यंत्र ऐसा था, जिस यंत्र में विद्यमान होकर के मेरे प्यारे! देखो, ध्रुव मण्डल की यात्रा में सफलता को प्राप्त हुए। मेरे प्यारे! देखो, ओर भी नाना प्रकार के लोक लोकान्तरों में गमन करते रहें। आज बेटा! मैं विज्ञान के सूत्र में तुम्हें नहीं ले जा रहा हूँ। विचार केवल यह है कि मानं ब्रह्माः लोकां वायु सम्भवः ब्रहे एक यान बेटा! देखो, उनका सूर्य की परिक्रमा कर रहा है। एक यान मुनिवरो! उनकी मानो अम्ब्रेती मंगल की परिक्रमा कर रहा है और मंगल से उपराम होकर के बेटा! देखो, वह श्वेती नक्षत्र की परिक्रमा कर रहा है। तो बेटा! देखो, विज्ञान में कितना पारायण उनका जीवन, उनका विद्यालय रहा है।

गर्भस्थ शिशु से माता की वार्ता

मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने सर्वत्र राष्ट्र, सर्वत्र विज्ञानशाला का, विद्यालय का भ्रमण किया और भ्रमण करने के पश्चात् मेरे पुत्रो! भारद्वाज मुनि से ऋषि—मुनियो ने ये कहा प्रभु! आप के यहाँ नाना प्रकार की चित्रावलियाँ है। माता के गर्भस्थल में जब शिशु विद्यमान होता है तो माता अपने गर्भ के मानो यंत्रों का अवष्ट करती हुई अपने यंत्र, अपने गर्भ के बाल्य, शिशु की वार्ता प्रकट करती और उसके चित्रों का दर्शन करती रहती है। उनके चित्र आते रहते है। कैसे निर्माण हो रहा है, और कौन निर्माण कर रहा है और वह निर्माणवेत्ता मानो देखो, वह शिशु की आभा में देवत्व को प्राप्त हो रहा है।

तो मेरे प्यारे! देखो, माता उस समय सफलता को प्राप्त हो रही है। जब वह अपने गर्भ की आत्मा से चर्चाएँ प्रकट करने लगती है और उसके चित्र को दृष्टिपात् करती हुई उससे वार्ता और ज्ञान की चर्चाएँ करती रहती है। ये नाना प्रकार की चित्रावलियाँ बेटा! विद्यालय में विद्यमान थी। तो भारद्वाज मुनि महाराज से बेटा! जब वह अपने राष्ट्र में, अपने विद्यालय में बेटा! सर्वत्र विज्ञानशाला का दर्शन कराने के पश्चात उन्होंने बेटा! नम्रता से यह कहा हे भवत् प्रमाणं वाचन्नमं ब्रह्माः लोकां वायु हे प्रभु! आपने हमें विज्ञानशाला का दर्शन कराया और बड़ी भव्य यज्ञशाला है, मानो विज्ञानशाला में हमने नाना चित्रावलियों का दर्शन किया है। हे प्रभु! नाना प्रकार के अस्त्रों—शस्त्रों का भी भ्रमण और उनका दर्शन किया है। हमारी ईच्छा यह है कि प्रभु! हम ये जानना चाहते हैं कि इस विज्ञान का अंतिम परिणाम क्या होता है?

विज्ञान का अन्तिम चरण

मेरे प्यारे! देखो महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज बड़े बुद्धि और मेधावी कहलाते है और प्रज्ञावी में वो रत रहते थे। मेरे पुत्रो! देखो, जब उन्होंने यह प्रश्न किया—कि महाराज! इस विज्ञान का अंतिम परिणाम क्या है? आपके यहाँ ब्रह्मास्त्र हैं, वरूणास्त्र हैं, आग्नेयास्त्र है, और भी नाना प्रकार के लोक लोकान्तरों में जाने वाले यातायात है। हे प्रभु! नाना प्रकार की चित्रावलियाँ हैं, हम ये जानना चाहते हैं कि इस विज्ञान का अंतिम परिणाम क्या होगा? एक—एक यंत्र ऐसा

तुम्हारे यहाँ है जिस यंत्र का प्रहार करने से मानो देखो, एक–एक राष्ट्र नष्ट हो जाता है। मानो देखो, ब्रह्मणं ब्रहे नाना प्रकार के यंत्र तुम्हारे विद्यालय में हैं। जो एक–एक करोड़ों प्राणियों का नष्ट कर सकता है। एक–एक यंत्र ऐसा है जो नष्ट करके पुनः वह तुम्हारे आश्रम में प्रवेश हो जाता है। हे प्रभु! ये बड़ी आपकी ऊर्ध्वा में उपलब्धियाँ है परन्तु हम ये जानना चाहते हैं प्रभु! इस विज्ञान का अंतिम चरण क्या होता है? क्या इसका परिणाम है।

श्वेताश्वेतर भारद्वाज का विज्ञान

मेरे प्यारे! महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने जब ये श्रवण किया तो मानो देखो, उनके हृदय में एक आशंका हुई कि हे ऋषिवर! आप ऐसा प्रश्न क्यों कर रहे हैं? उन्होंने कहा–हे भगवन! जैसे तुमने यंत्रों को जाना है, विज्ञान को जाना है। मानो ये तुमने ही क्यों जाना है? क्योंकि मुझे स्मरण है कि तुम्हारा जो गोत्र है वो भारद्वाज कहलाता है। परन्तु तुम्हारा नाम श्वेताश्वेतर भारद्वाज है। पिता का नाम रेंगणी भारद्वाज रहा और वे बड़े ब्रह्मवेत्ता रहे हैं। परन्तु तुम्हारे यहाँ बहुत–सी प्रणालियाँ रही है जिनमें ब्रह्मवेत्ता रहे है।

भारद्वाज गोत्र में मानो लगभग मुझे ऐसा स्मरण है साहित्य से, इतिहास का पृष्ठ जब मैं अपने समीप लाता हूँ तो मुझे दृष्टिपात आता है कि 11,561 तुम्हारा वंशलज चला गया परन्तु उनमें कोई ऐसा विज्ञानवेत्ता नहीं हुआ जो इस प्रकार के विज्ञान की उड़ाने उड़ने लगे। और तुम्हारे गोत्रों का जो निकास हुआ भारद्वाज का वे मानो हरितत् गोत्र से निकास हुआ। हरितत् गोत्र में ही 51,552 के लगभग मानो देखो, इतने वंशलज है उनमें भी कोई ऐसा परमाणु, विज्ञानवेत्ता नहीं हुआ, जो अणु और परमाणु को जानने वाला हो। जो यंत्रो में पारायण हो। ब्रह्मवेत्ता तो बहुत हुए हैं, ब्रह्म की उड़ान उड़ने वाले बहुत हुए है परन्तु वह ऐसे नही हुए।

उन्होंने कहा बेटा! तुम्हारा जो हरितत् गोत्र का निकास हुआ है वो अंगिरस गोत्र से हुआ है और अंगिरस गोत्र में बहुत से वंशलज हुए मानो देखो, उसमें 31,541 के लगभग वंशलज चले गए परन्तु उनमें भी कोई ऐसा नहीं हुआ जो इस प्रकार की उड़ान उड़ने वाला हो। विज्ञानवेत्ता हो, वे केवल ब्रह्मवेत्ता बहुत हुए हैं और अंगिरस गोत्र का जो निकास हुआ वो ब्रह्मा के पुत्र अथर्वा से हुआ है। ब्रह्मा के मानो देखो, अथर्वा और लोकेशणी, ब्रह्मण चक्रेतु मानो देखो, अततं शातब्रहे मुनिवरो! देखो, चार पुत्र हुए ब्रह्मा के। मानो उनमें से एक पुत्र का नाम अथर्वा था। उनमें बहुत से वंशलज चले गए परन्तु देखो, वहाँ भी कोई ऐसा विज्ञानवेत्ता नहीं हुआ। हे प्रभु! हमारी यह इच्छा है कि इन गोत्रो में नहीं हुआ तो ये आपको कैसे उत्पन्न, कैसे तुम्हारे हृदय में यह जिज्ञासा जागरूक हुई कि मैं विज्ञानवेत्ता बनूँ।

मेरे प्यारे! ओर विज्ञानवेत्ता बनने के पश्चात भी तुम्हारे यहाँ नाना प्रकार की चित्रावलियाँ हैं एक–एक रक्त के बिंदु से मानो देखो, यदि हजार बिन्दु उस मानव के शरीर के प्राप्त हो जायें तो हजार ही उस मानव के चित्र यंत्रों में दृष्टिपात आते हैं। तो हे प्रभु! आप की विज्ञान में बड़ी महान उपलब्धियाँ है। हम जानना चहते हैं इस विज्ञान का अंतिम परिणाम क्या होता है अंतिम चरण क्या है।

तो भारद्वाज मुनि ने शांत होकर के कहा प्रभु! आप शांत हो जाए। मेरे प्यारे! देखो, उनमें ब्रह्मवेत्ता भी थे, शब्द विज्ञानवेत्ता भी थे, आध्यात्मिक विज्ञान की उड़ानें उड़ने वाले भी। मेरे प्यारे! देखो महर्षि ने वर्णन किया–कि इस विज्ञान का अन्तिम परिणाम दो होते है। एक विज्ञान में मृत्यु है, तो एक में जीवन है। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने–कहा कि प्रभु! ऐसा क्यों? उन्होंने कहा कि विज्ञान में जब कर्तव्यवाद का पालन होता है। मानो देखो, चित्रावलियाँ विद्यमान हैं उन चित्रावलियों में अपने महापुरुषों के और उनके क्रियाकलापों का जब दर्शन होता है कि वो महापुरुष कैसे और किस प्रकार मानो चित्रावलियों में अपने, अपने शब्द और अपनी क्रियाओं का सदुपयोग करते थे। मेरे प्यारे! देखो, वह सदुपयोग जो अपनी मानवीयता का है चित्रों में जब उसका दर्शन होने लगता है तो उन चित्रावलियों का सदुपयोग होता है तो विज्ञान का सदुपयोग हो जाता है।

मेरे प्यारे! उन्होंने कहा कि विज्ञान में जब मानो देखो, हमारे पूर्वजो का दर्शन होता है। एक यजमान याग कर रहा है और याग करता हुआ, सुहृदय से जब वह याग कर रहा है, द्यौ–मण्डल में उनके चित्र जाते है तो उन चित्रों का रथ मानो जब दृष्टिपात किया जाता है तो विज्ञान का सदुपयोग होता है। जब मानो देखो, मेरी प्यारी! माता मल्दालसा अपने चित्रों को लेकर के अपने गर्भ की आत्मा से वार्ता प्रकट करती है और उसे ब्रह्मविद्या प्रदान कर देती है तो मानो देखो, विज्ञान का सदुपयोग हो रहा है। हे भगवन! देखो, विज्ञान अपनी आभा में नृत्य कर रहा है। वो नृत्यिका में रमण करने वाला है। जब विज्ञान का सदुपयोग होता मानो देखो, तो उस समय विज्ञान अपनी आभा, अपनी परिणति में ऊर्ध्वा में गमन करता हुआ मेरे प्यारे! देखो, विज्ञान में रत हो जाता है।

तो आओ मेरे प्यारे! देखो, विज्ञान का मैं विरोधी नहीं हूँ परन्तु विज्ञान का सदुपयोग होना, अपने पूर्वजों का दर्शन करना, अपने पूर्वजों के क्रियाकलापों का दर्शन करना, मुनिवरो! देखो, ये महापुरुषों की तपस्या उनके दर्शनों का अध्ययन करना बेटा! ये विज्ञान का सदुपयोग है। मेरे प्यारे! देखो, जब विज्ञान का दुरूपयोग होना प्रारम्भ हो जाता है। वह राष्ट्र और समाज की मृत्यु हो जाती है। वह मृत्य कैसी होती है? मेरी पुत्रियों का नृत्य हो रहा है और नृत्य में भी अश्लीलता मुझे दृष्टिपात आ रही है। मेरे प्यारे! देखो, एक युवा छात्र और छात्रिका सब मुनिवरो! एक पंक्ति में विद्यमान होकर के नृत्यावलियों का दर्शन करते हैं और जब वे दर्शन कर रहे हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, दर्शन करते उनके विज्ञानां ब्रह्मा वेदां ब्रह्मणं व्रहि देखो, वेद की आख्यायिका कहती है कि उस विज्ञान का मानो एक पंक्ति में छात्र और छात्रिका विद्यमान होकर के अश्लीलता और मुनिवरो! देखो, नृत्य को दृष्टिपात कर रहे। तो बेटा! देखो उनका ब्रह्मचर्य दूषित हो जाता है।

दूषित ब्रह्मचर्य का प्रभाव

वेद का ऋषि कहता है इस वाक् को बेटा! वेद का ऋषि भारद्वाज, जिन्होंने विज्ञान को जाना परन्तु वह अपना निर्णय दे रहे हैं और वे कहते हैं कि उनका जब ब्रह्मचर्य दूषित हो जाता है तो आलस्य और प्रमाद मानो उत्पन्न हो जाता है। और जब आलस्य और प्रमाद आ जाता है तो मेरे प्यारे! देखो, उस प्रमाद के आने पर मानो कर्तव्य का पालन नहीं कर रहा है। वह अधिकार को चाहता है। मुझे अधिकार प्राप्त हो जाये। जब वह अधिकार को पुकारने लगता है तो कर्तव्य वहाँ नही होता, जब अधिकार चाहने लगता है तो संसार का कोई राष्ट्रवाद ऐसा नही है जो किसी के अधिकार को पूर्ण कर सके। मुनिवरो! देखो, जब मानव कर्तव्य का पालन करता है तो अधिकार तो स्वतः ही प्राप्त हो जाता है। मानो देखो, स्वतः ही अपने में अपनेपन का भान करने लगता है और जब वह अधिकार चाहता है। वह अनधिकार को अधिकारता में लाना चाहता है। तो मेरे पुत्रो! देखो, उस काल में राष्ट्र और समाज में रक्त भरी क्रांति आ जाती है और वह जो रक्त भरी क्रांतियाँ हैं उसके मूल में क्या है? मेरे प्यारे! देखो उससे राष्ट्रवाद विकृत हो जाता है। राष्ट्रवाद की प्रणालियाँ समाप्त हो जाती है।

मेरे प्यारे! देखो, उस समय मानव को विचारना है कि हम अपने में अपनेपन को विचारते रहें और कर्तव्यवाद में निहित हो जाये और विज्ञान का सदुपयोग करें क्योंकि विज्ञान का जितना दुरूपयोग होता है उतना ही मुनिवरो! देखो, समाज अव्यवस्थित हो जाता है इसीलिए विज्ञान होना चाहिए परन्तु विज्ञान में सात्त्विकता होनी चाहिए, विज्ञान में रूढ़िवाद नही होना चाहिए। विज्ञान में मानवत्व होना चाहिए। बेटा! देखो, जब मानवत्व होता है तो मानवीयता अपने में बेटा! देखो, हर्ष ध्वनियाँ करने लगती है।

मुनिवरो! देखो, मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन कराया। भारद्वाज मुनि के यहाँ एक यंत्र ऐसा था जहाँ मुनिवरो! देखो, लोक लोकान्तरों की यात्रा और मेरे प्यारे! देखो, अपने पूर्वजों का दर्शन भी करते रहते थे। जब पूर्वजों के क्रियाकलापों का उनकी मानो देखो, महानताओं का चित्रावलियों में दर्शन होता रहा तो बेटा! देखो, विद्यालय में ब्रह्मचर्यत्व, कर्तव्यवाद एक महानता की आभा में परिणत हो जाता है।

राष्ट्र का जीवन

तो विचार विनिमय क्या, मेरे पुत्रो! मैं बहुत दूर चला गया हूँ विचार देता, देता दूरी नही जाना चाहता हूँ। विचार केवल यह कि बेटा! देखो, विज्ञान का सदुपयोग मानो राष्ट्र और समाज का जीवन है और विज्ञान का दुरूपयोग करना मुनिवरो! देखो, राष्ट्र की मृत्यु होती है, समाज की मृत्यु हो जाती है और वह मृत्यु जब हो जाती है तो बेटा! मानव मानव में प्रीति और स्नेह की आभा समाप्त हो जाती है। तो आओ मेरे प्यारे! ये महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने बेटा! बहुत समय हो गया, जब इन वाक्यों में अपना निर्णय दिया था। विज्ञान को जानना और विज्ञान का दुरूपयोग और सदुपयोग का निर्णय देना।

मेरे प्यारे! गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज ने इस के ऊपर बड़ी अप्रवाह ऋषि मुनियों के समीप विद्यमान होकर के भारद्वाज मुनि से कहा प्रभु! आप तो धन्य है। आपकी बहुत महानता है, आपकी बड़ी विचित्र उपलब्धियों हैं, इन उपलब्धियों के लिए हम सदैव आपका गुणगान गाते रहते हैं। हे प्रभु! आपको धन्य है।

मेरे प्यारे! विचार आता रहता है। गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज इन वाक्यों का निर्णय करने के पश्चात उन्होंने वहाँ से प्रस्थान किया।

तो मेरे प्यारे! विचार–विनिमय क्या, आज मैं कोई विशेष चर्चा तुम्हें प्रकट करने नही आया हूँ। विचार केवल यह प्रकट करना है कि राष्ट्रवाद अपनी आभा में बड़ा नृत्य करता रहा है। मेरे प्यारे! देखो, यहाँ ये उच्चारण कर रहे थे, राजा सगर की चर्चा कर रहे थे। बेटा! राजा सगर के यहाँ मानो देखो, उनकी सेना ने महर्षि कपिल मुनि महाराज को दण्डित किया और कपिल मुनि महाराज के विद्यालय में ब्रह्मचारियों ने बेटा! देखो, सेनाएँ समाप्त कर दी। राजा सगर मेरे प्यारे! देखो, महान राजा थे। अपने में बड़े नृत्य अस्वतः करते रहते थे। मेरे प्यारे! देखो, विचार आता रहता है पाताल पुरी में मुनिवरो! देखो, जय और विजय ने बेटा! देखो, रक्त भरी। क्रांतियाँ की उसका परिणाम यह कि समाज अस्त व्यस्त हो गया। मेरे प्यारे! देखो, द्वितीय उस काल में अस्त व्यस्त हुआ था जिस काल में मुनिवरो! देखो, पांडु अपने, राष्ट्र को अपना करके और राष्ट्र को विचित्र और विशाल बनाना चाहते हुए वह भी पाताल पुरी में पहुँचे और पाताल पुरी का समाज उस काल में भी मानो देखो, अस्त व्यस्त हो गया और देखो, नाग एक संप्रदा जो कल भी बेटा! इस का वर्णन किया था। आज मुझे समय मिलेगा तो मैं इतिहास, और सहित्य के पृष्ठ को मानो पुनः से इसका उद्घाटन, उद्गीत गाता रहूँगा। विचार विनिमय क्या मेरे प्यारे देखो, राजा को चाहिए यदि राजा अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाना चाहता है तो वह अपने राष्ट्र में कर्तव्यवाद के लिए बेटा! देखो, अपनी प्रजा को बाध्य करें। वह प्रजा मुनिवरो! देखो, मुझे स्मरण है महाराजा मनु ने बेटा! सबसे प्रथम राष्ट्र का निर्माण किया था और राष्ट्र की ये उपलब्धियाँ उनकी रही कि कर्तव्यवाद को लाने के लिए राष्ट्र का निर्माण होता है और राजा के राष्ट्र में यदि कर्तव्यवाद नहीं रहा तो उस राजा को मानो राष्ट्रीयता का कोई अधिकार नही होता। वह अनधिकार कर रहा है उस अनधिकार से यह होता कि रक्त भरी क्रांतियाँ उपलब्ध हो जाती है।

आत्मा से प्रेरणा

मेरे प्यारे! देखो, मैं विशेष चर्चा तुम्हें प्रकट करने नही आया हूँ। विचार यह प्रकट करने के लिए आया हूँ कि मुनिवरो! देखो, प्रत्येक मानव जब अपने विज्ञान का सदुपयोग करना प्रारम्भ कर देता है तो महानता में रत हो जाता है और उसको जान करके अपने में अपनेपन का भान करता रहे जिससे मुनिवरो! देखो, मानो अपनी मानवीयता और विचित्रता को धारण करता हुआ इस सागर से पार हो जाये। यह है बेटा! आज का वाक्, मैंने तुम्हें कई कालो में तुम्हें यह वाक प्रकट कराया आज भी पुनः से यह वाक् हमारे समीप आया।

मेरे प्यारे! देखो, नौ लाख वर्ष हो गए जब महर्षि भारद्वाज मुनि ने अपना निर्णय लिया। अपने निर्णय की उनकी जो शैली है। वह मानो देखो, एक दर्शनों से गुथी हुई, मानवीयता से गुथी हुई है। इसलिए बेटा! हमें परमपिता परमात्मा के राष्ट्र में, अपने को ले जाना है और कर्तव्य, आत्मा के अनुकूल हमें क्रियाकलाप को करना है। आत्मा से जो प्रेरणा आती है उस प्रेरणा के आधार पर वाक् प्रकट होना चाहिए। ये हे बेटा! आज का वाक् अब समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएँ कल प्रकट करूँगा।

ओ३म् देवा आभ्यां रथं माहं आ पा रेवं भद्रा वायुगतं
ओ३म् ब्रह्माः यज्ञो आभ्यां देवः रथं मा यशो आभ्यां देवाः

अच्छा भगवन्